

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

‘भविष्य’ का चन्दा

वार्षिक ६० रु०

छः माही ३॥) रु०

एक प्रति का मूल्य ८)

Annas Two per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ्री कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुकताचीनी करने में पहिले मित्रों को ‘भविष्य’ में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष १, खण्ड १

इलाहाबाद—३० अक्टूबर, १९३०

संख्या ५, पूर्ण संख्या ५

गोलमेज़ कॉन्फ़ेन्स में भारतीय-भारत के कुछ नमूने



महाराजा कार्मर



महाराज अलवर



महाराज पटियाला



साँगली के चीक



महाराज राणा धौलपुर



महाराजा नवानगर



महाराजा बीकानेर



महाराजा रीवाँ



नवाब भोपाल

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज्ञा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। आज तक ऐसी चित्रावली कहीं से प्रकाशित नहीं हुई।



छप गई !

प्रकाशित हो गई !!

चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं बेदना से हृदय तड़पने लगेगा ; मनुष्यता की याद आने लगेगी ; और सामाजिक क्रान्ति की भावना हृदय में प्रबल वेग से उमड़ उठेगी।



इकरङ्गे, दुरङ्गे और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। कृपाई-सफ़ाई अत्यन्त सुन्दर एवं दर्शनीय, फिर भी मूल्य जागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'बाँद' के ग्राहकों से ४)

व्यवस्थापिका 'बाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

कोही सी प्रतियोगिता और शेष है, अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मीच कर आँदर दे डालिए !! नहीं तो हाथ मल कर पड़ताना पड़ेगा और दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी !

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १

इलाहाबाद-३० अक्टूबर, १९३०

संख्या ५, पूर्ण संख्या ५

राष्ट्रपति को २८ मास की सख्त कैद

‘भारत के इतिहास में तुमने एक स्वर्ण-पृष्ठ लिख दिया है’

पण्डित जवाहरलाल का सीमा-प्रान्त को सन्देश

सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषों को सन्देश भेजते हुए राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है :—

“पिछले सात महीनों में भारत ने वीरता, साहस और आत्म-त्याग के बहुत से नमूने देखे हैं। ऐसे पुरुषों की सूची देना सचमुच बहुत कठिन है, जिन्होंने अपने देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपनी आहुति दी है। जेल से मुक्त होते ही मेरा पहिला कार्य इन वीरों और वीराङ्गनाओं को हार्दिक बधाई देना था। मैं सीमाप्रान्त के उन वीरों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ, जिन्होंने अपनी अपूर्व शान्ति और आश्चर्यजनक त्याग से भारत और संसार को चकित कर दिया है। पठान अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु उन्होंने यह स्पष्ट दिखा दिया है कि हमारे अहिंसात्मक सङ्ग्राम में भी वे अग्रगण्य बन सकते हैं और ऐसा उदाहरण रख सकते हैं, जो दूँदे भी न मिल सके। इसलिए मैं सीमाप्रान्त के अपने सभी भाइयों को, चाहे वे जेल में हों या जेल से बाहर, अपनी अद्भुत अर्पण करता हूँ। जो अपने प्राणों की आहुति चढ़ा चुके हैं, वे अब हमारे साथ नहीं

हैं, परन्तु उनकी स्मृति हमारे साथ है और सदैव रहेगी।

“पहिले सीमा-प्रान्त में सुधारों की चर्चा हुआ करती थी। आज हम सुधारों के लिए नहीं, बल्कि स्वतन्त्रता के लिए युद्ध कर रहे हैं। हमारे सीमा-प्रान्त के भाइयों ने आहुति की अग्नि में तप कर यह बतला दिया कि वे किस धातु के बने हैं। हम सबकी इन आहुतियों में से ही स्वतन्त्र भारत का जन्म होगा, जिसमें सीमा-प्रान्त को मिला कर, हम सब बराबर हिस्सेदार होंगे। सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषों ने अपने त्याग और रक्त के बलिदान द्वारा स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त कर लिया है। इन वीरों की वीरता के लिए कोई उपयुक्त पुरस्कार नहीं दिया जा सकता, और जो मरना जानते हैं, वे स्वतन्त्र मनुष्य की तरह रहना भी जानते हैं।

“सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषों, तुमने भारत के इतिहास में एक स्वर्ण-पृष्ठ लिख दिया है। उससे हमें सदैव उत्साह और साहस मिलेगा और भविष्य में हम उसकी स्मृति हृदय में रखेंगे। भारत उन्हें कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने उसे स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता दी है।”

‘आन्दोलन जोरों से चल रहा है’

‘सरकारी रिपोर्ट दूसरे देशों को दिखाने के लिए है’

श्रीयुक्त के० एम० सुन्शी ने बम्बई से एक विज्ञप्ति निकाली है कि मैं हाल में इलाहाबाद में हिन्दुस्तान के इकट्ठे हुए नेताओं से मिल कर आया हूँ। अखबारों में जो खबरें निकलती हैं उनसे आन्दोलन के जोर का ठीक पता नहीं चलता। आन्दोलन बिना ढीलेपन के बड़े जोरों से चल रहा है। सरकारी साप्ताहिक रिपोर्ट, जो कहती है कि आन्दोलन ठण्डा पड़ रहा है, बिल्कुल झूठ है और केवल दूसरे देशों को दिखाने के लिए है। सारे देश में दमन भी बड़े जोरों से चल रहा है। राजनैतिक क्रेडिटों पर लम्बे जुमाने किए जा रहे हैं। जो कि उनके देने से इन्कार करने पर उनके रिश्तेदारों से वसूल कर लिए जाते हैं, चाहे वह आन्दोलन से कुछ भी सम्बन्ध न रखते हों।

हम लोगों ने आपस में सलाह करके अगले कार्यक्रम के लिए कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किए हैं। पहिला प्रस्ताव

यह है कि कोई भी कॉङ्ग्रेस कमिटी विदेशी कपड़े के व्यापारियों से किसी तरह की भी सुलह न करे; दूसरा काम यह है कि लोग प्युनिटिव टैक्स तथा अन्य नए लगाए हुए टैक्स न दें। फिर मर्दुमशुमारी में बिल्कुल भाग न लें और उसमें काम करने वाले ऑफिसरों को किसी भी तरह की सहायता न दें।

सब से बड़ा प्रस्ताव यह स्वीकार हुआ है कि नए ऑर्डिनेन्स द्वारा जितनी संपत्ति सरकार जब्त करे, उसे कोई भी न खरीदे। यदि कोई इसे खरीदेगा तो कॉङ्ग्रेस इस खरीद को गैर-कानूनी समझेगी और ब्रिटिश सरकार से सुलह होने पर या आन्दोलन जारी रहने पर भी वह बिना हर्जाना दिए उससे ले ली जायगी। सुना जाता है कि लोग इनकम-टैक्स बन्द कर रहे हैं। हम लोगों ने यह अभी स्वीकार नहीं किया है। इससे बेहतर होगा कि इसे छोड़ कर स्वीकृत काम जोरों से किया जाय।

बम्बई में एक और काला-दिन

लाठियों की मार से २५० घायल हुए तारीख २६ इतवार को बम्बई की ‘वार-कौन्सिल’ ने झण्डा अभिवादन का निश्चय किया था। यह आज़ाद मैदान में, जिसमें मोटिङ्ग करना मना है, होने वाला था। पाँच सौ लाठीधारी पुलिस और एक सवारों व सारजेयों के झुण्ड ने वहाँ इकट्ठे हुए शान्तिमय लोगों पर लाठियों का वार किया और उन्हें दौड़ा-दौड़ा कर मारा। डॉक्टरों का मत है कि अब तक लाठी द्वारा जितनी बार पिटाई हुई है, उन सब में यह मार बड़ी भयङ्कर थी। चार घण्टे तक तो आज़ाद मैदान बिल्कुल पुलिस के कब्जे में रहा और वहाँ एक भी ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं दे सकता था, जो पिटने के लिए तैयार न हो। कॉङ्ग्रेस वाले यह हद निश्चय करके आए थे कि हम अपना कार्य पूरा करेंगे और इनको रोकने के लिए पुलिस ने २५ बार लाठियों का वार किया, जिससे २५० आदमियों को चोटें आईं। ज्यादातर लोगों को

जवाहरलाल जी के मुकदमे का फ़ैसला

२६ अक्टूबर को दिन के ११।११ बजे पं० जवाहरलाल नेहरू के मुकदमे का फ़ैसला नैनी जेल में सुना दिया गया। उनको दफ़ा १२४-ए में १८ महीने की सख्त कैद और ५०० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ महीने की कैद और होगी। दफ़ा ११७ आई० पी० सी० में ६ महीने की सख्त कैद और १०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर १ महीने की कैद और होगी। ऑर्डिनेन्स नं० ६ की ३री धारा में ६ महीने के सख्त कैद और १०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर १ महीने की कैद और होगी। पिछली दो सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। इस प्रकार कुल मिला कर २ वर्ष ४ महीने की सख्त कैद की सज़ा दी गई है।

सिर पर चोटें आईं। २० आदमियों को तो वहाँ पर इलाज करने की ज़रूरत पड़ी। एक आदमी की दशा बहुत ख़राब है। कहा नहीं जा सकता कि वह बचेगा या नहीं।

इस पर भी पुलिस कॉङ्ग्रेस का कार्य-क्रम न रोक सकी। ठीक आठ बजे भीमती अवन्तिका बाई गोखले बम्बई की डिक्टेटर राष्ट्रीय झण्डा लेकर मैदान में घुस पड़ीं। वे उस जगह पर पहुँच गईं, जहाँ पर झण्डे का अभिवादन होने वाला था। हिन्दुस्तानी-सेवा-दल की २० स्वयंसेविकाओं ने चारों ओर घेरा बना लिया था। यह देख कई साजेंगट वहाँ दौड़े, पर वे कार्य में विघ्न न डाल सके। जबरदस्ती करने पर भी स्वयंसेविकाओं ने घेरा नहीं टूटने दिया। कार्य पूर्ण हो जाने पर भीमती गोखले तो चली गईं, पर सब स्वयं-सेविकाएँ गिरफ़्तार कर के हवालात में बन्द कर दी गईं।

इस पर स्वयंसेवकों के दल के दल झण्डा लेकर मैदान में घुस पड़े। पुलिस ने उन्हें लाठी मार-मार कर (शेप ५वें पृष्ठ के अन्त में देखिए)

‘सरकारी कर्मचारी स्वयं कानून तोड़ते हैं’

गवर्नमेण्ट की नीति पर महाराष्ट्र चैम्बर ऑफ़ कामर्स का आक्षेप

हाल में ही पास हुए नवें ऑर्डिनेन्स के सम्बन्ध में महाराष्ट्र चैम्बर ऑफ़ कामर्स की कमिटी ने गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया के सेक्रेटरी को एक पत्र भेजा है, वे कहते हैं कि यह नवों ऑर्डिनेन्स साफ़ ज़ाहिर करता है कि अब भी भारत की गवर्नमेण्ट कड़ा शासन करने की नीति को स्थिर रखना चाहती है। इसके विरुद्ध हम लोग अपना विरोध प्रदर्शित करते हैं। दुर्भाग्य तो यह है कि देश में इतनी जागृति होने के बाद भी गवर्नमेण्ट की आँखें नहीं खुली हैं। और वह पुराने दमन के साधनों को, जो ऐसे मौकों पर सदैव निष्फल सिद्ध हुए हैं, नहीं छोड़ती। छः महीने के अन्दर ही धड़ाधड़ नौ ऑर्डिनेन्स जारी किए जा चुके हैं। इसका मतलब तो यह है कि शासन-पद्धति बिल्कुल उलट दी गई है। ऑर्डिनेन्स से पुलिस तथा मैजिस्ट्रेटों के हाथ में अनियमित शक्ति दे दी गई है और इसमें सन्देह नहीं कि कई बार उसका दुरुपयोग किया गया है। जैसे एक ओर आन्दोलन के कानून तोड़ने वाले हैं, उसी तरह गवर्नमेण्ट की ओर से भी सरकारी कानून तोड़ने वाले तैयार कर दिए गए हैं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि कानून का तो नाश ही हो चुका है। सरकार के पदाधिकारियों ने स्वतः कानून की अवहेलना करना आरम्भ कर दिया है।

नए कानून द्वारा प्रजा का एकत्रित होने का अधिकार छीन लिया गया है और व्यक्तिगत धन के अधिकार पर भी धावा बोल दिया गया है। इसके जारी होने से

न्याय-सङ्गत तथा शान्त लोगों को भी, जो इस आन्दोलन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते, बहुत कष्ट व नुकसान पहुँचेगा। अब सम्पत्ति, धन तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता सब में खटका हो गया है और यह आजकल के गिरे हुए व्यापार को और भी धक्का पहुँचाएगा। हमारा तो यह ख्याल है कि शान्ति स्थापित करने के बजाय, यह मनुष्यों के आत्म-बलिदान करने के निश्चय को और भी बढ़ बनावेगा और स्वतन्त्रता की अग्नि को सुलगावेगा। यह प्रजा का चित्त गवर्नमेण्ट की ओर से हटावेगा और सुलह में बड़ी भारी बाधा डालेगा।

प्रजा में शान्ति तथा प्रेम ही राज्य की नींव है और उसका सुख ही उसकी शक्ति का सूचक है। इसलिए हम लोगों का मत है कि गवर्नमेण्ट इस बात पर ध्यान दे और अपनी नीति को बदले। हम लोगों का यह पूर्ण विश्वास है कि यह लड़ाई बहुत ही निश्चयात्मक है और भूतपूर्व आन्दोलनों से कहीं ज्यादा जोरदार है। और इस जागृति में केवल देश के एक भाग ने नहीं, वरन् सब लोगों ने भाग लिया है। इन सब बातों का ख्याल करते हुए यहाँ की गवर्नमेण्ट को चाहिए कि वह अपनी नीति को बदले। यदि यह नहीं किया गया तो अभी और नए ऑर्डिनेन्स जारी करने पड़ेंगे और दमन के साथ ही साथ प्रजा में और ज्यादा घृणा फैलेगी। इसलिए मौक़ा निकल जाने के पहिले आप अपने साधनों को बदलें तथा देश में शान्ति व सुख स्थापित करें।

लाहौर पड़्यन्त्र केस की अपील

फाँसी स्थगित कर दी गई

मेहता अमरनाथ ने १६ ता० को पञ्जाब गवर्नमेण्ट के नाम जो चिट्ठी भेजी थी; गवर्नमेण्ट ने उसका निम्न उत्तर देने की कृपा की है :—
महाशय जी,

गवर्नर-इन-कौन्सिल की आज्ञानुसार मैं आपको १६वीं अक्टूबर सन् १९३० के भेजे हुए पत्र की स्वीकृति भेजता हूँ और उत्तर में यह इत्तला देना चाहता हूँ कि किशनसिंह के लड़के भगतसिंह, हरिराज गुरु के लड़के शिवराम राजगुरु और रामलाल के लड़के सुखदेव की फाँसी स्थगित करने के ऑर्डर पास हो गए हैं।

आपको ६ नवम्बर, १९३० तक इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि आपने आवश्यक कागज़ात, जिनमें छपी हुई कागज़ों की पुस्तक की दो प्रतियाँ और ट्रिग्यूनल के फ़ैसले की एक सर्टिफ़ाइड कॉपी सम्मिलित हैं—लन्दन के किसी सॉलिसिटर के स्वीकृत फ़र्म को प्रिवी-कौन्सिल की जुडीशियल कमेटी से अपील की आज्ञा लेने के लिए भेज दी है। गवर्नमेण्ट को सॉलिसिटर का नाम और पता भेजना अत्यन्त आवश्यक है और यह ध्यान में रखा जाय कि बैरिस्टर के पास कागज़ात सीधे नहीं भेजे जा सकते; वे सॉलिसिटर के फ़र्म को ही भेजे जाने चाहिये। मैं आपको यह भी इत्तला करता हूँ कि आपको इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि लन्दन में सॉलिसिटर्स को २० गिज़ियाँ (२२ पौण्ड १० शिल्लिंग या भारतीय सिक्के में करीब ८०० रुपये) अपील के लिए

भेज दिए गए हैं; क्योंकि यह प्रायः निश्चित हो गया है कि जब प्रिवी कौन्सिल में अपील दायर करने के लिए केवल एक कौन्सिल नियुक्त किया जाता है, तब कम से कम इतना ही खर्च होता है। सबूत में या तो तार के मनीऑर्डर की रसीद और या बैंक के ड्राफ्ट की दूसरी प्रति या इसी प्रकार का दूसरा सबूत पेश करना चाहिए, जिससे इस बात का पता लग जावे कि रुपया भेज दिया गया है। इस सम्बन्ध में यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि जब मामला आगे बढ़ेगा तब ३० से २० गिज़ियाँ (या २०० रुपये तक) के खर्च की और भी आवश्यकता पड़ेगी।

यदि पहिले पैराग्राफ़ में उल्लिखित तारीख तक इस प्रकार का सबूत पेश न किया जायगा तो ७वीं नवम्बर १९३० को अपराधियों की फाँसी का ऑर्डर निकाल दिया जायगा।

इनकम-टैक्स-दफ़्तर पर पिकेटिंग

बम्बई का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि ‘पीपुल्स बैटेलियन’ के तीन सदस्य इनकमटैक्स दफ़्तर पर पिकेटिंग करने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए। वे लोगों से इनकमटैक्स न देने का अनुरोध कर रहे थे। प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उनमें से प्रत्येक को ८-८ माह की सज़ा ज़ैद की सज़ा दी है।

काँङ्ग्रेस वालरिण्टियर गोली से मारे गए

मुज़फ़्फ़रनगर का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ के शामली नामक स्थान से दो मील आगे केसरवा एक गाँव है और उसके प्रायः सभी निवासी काँङ्ग्रेस-वादी हैं। मालिन्दी की लूट के पश्चात कुछ दिनों तक वहाँ भी यह अक्रवाह रही कि इस गाँव पर भी गुण्डे धावा करेंगे।

कहा जाता है कि १९वीं अक्टूबर को करीब १० बजे रात्रि में गुण्डों ने लाला प्रभूलाल वैश्य के घर पर धावा किया। बन्दूक की आवाज़ें सुन कर गाँव वाले रक्षा के लिए दौड़े। उनमें गाँव के पण्डित श्रीराम के दो लड़के राजाराम और मामराज सिंह, जो काँङ्ग्रेस के वालरिण्टियर थे, सम्मिलित थे। धावा करने वालों ने उन्हें जान से मार डाला। काँङ्ग्रेस का दूसरा वालरिण्टियर जहाँगीरसिंह भी, जिसने प्रभूलाल की बन्दूक खोलने से इन्कार किया था, सज़ा घायल हुआ और दूसरे दिन उसका भी प्राणान्त हो गया।

प्रभूलाल और उनकी पत्नी को भी सज़ा चोट आई। उनकी स्त्री मुज़फ़्फ़रनगर के सिविल अस्पताल में पड़ी है। मालूम हुआ है कि पुलिस ने प्रभूलाल को केसरवा गाँव छोड़ने की आज्ञा नहीं दी। प्रभूलाल के ६ माह के लड़के के साथ भी दुर्भ्यवहार किया गया था और अस्पताल में उसका भी इलाज हो रहा है। इनके साथ और बहुत से आदिमियों को सज़ा चोट आई। गुण्डे जो नगदी और जेवर ले गए हैं, उसकी कीमत करीब ७-८ हजार रुपये होगी।

तीनों मृतक शरीर मुज़फ़्फ़रनगर पोस्ट मार्टम के लिए भेजे गए। उसके बाद लोग जुलूस में उन्हें स्मशान ले गए। ज़िले भर में बड़ी सनसनी फैली है। इस दुर्घटना के कारण मुज़फ़्फ़रनगर में दिवाली नहीं मनाई गई। बड़ा असन्तोष फैल रहा है।

काँङ्ग्रेस के नए प्रेज़िडेण्ट गिरफ़्तार

२६ वीं अक्टूबर का अमृतसर का समाचार है कि काँङ्ग्रेस के नए प्रेज़िडेण्ट श्री० सेन गुप्त जलियानवाले बाग़ में दफ़ा १४४ तोड़ने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। जलियानवाला बाग़ के चारों ओर घेरा डाले हथियारबन्द पुलिस का रिसाला खड़ा था। जैसे ही सभा आरम्भ हुई, एक पुलिस अफ़सर उनके पास दफ़ा १४४ का ऑर्डर लेकर पहुँचा, जिसमें ज़िला मैजिस्ट्रेट ने उन्हें भाषण देने से रोका था। उन्होंने कहा कि वे नोटिस सभा समाप्त हो जाने के बाद पढ़ेंगे, तब मैजिस्ट्रेट ने नोटिस पढ़ा और थोड़ी ही देर के भाषण के बाद वे गिरफ़्तार कर मोटर में कोतवाली भेज दिए गए। अर्धरात्रि को वे फ़्रान्ज़ियर मेज से दिल्ली भेज दिए गए, जहाँ उन पर राजविद्रोह के अभियोग में मामला चलाया जावेगा। उनका दफ़ा १४४ का अभियोग उठा लिया गया है। उनकी गिरफ़्तारी के कारण देश में जगह-जगह हड़तालें मनाई गईं।

यूरोपियनों पर पत्थरों की वर्षा

पूना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बेल्-गाँव में कुछ यूरोपियनों पर पत्थर फेंके गए और उन्हें चिढ़ाया गया। कहा जाता है कि मेजर कैसलैण्ड और उनकी स्त्री पर पत्थर फेंके गए, परन्तु वे सुरक्षित निकल गए। मद्रास के ब्रिगेडियर गिलीज़ जब प्रातः व्यायाम के बाद वापस लौट रहे थे, तब बेल्गाँव से २ मील की दूरी पर एक गाँव के पास उनकी मोटर को रास्ते में रोक कर उनके ऊपर पत्थरों की बौछार की गई, जिससे वे सज़ा घायल हो गए। फ़ौज़ी दफ़्तर में दुर्घटना की रिपोर्ट पहुँच गई है।



देश के प्राङ्गण में

—कलकत्ते की अर्मीनियन स्ट्रीट वाली डकैती के सम्बन्ध में जो चित्तीशचन्द्र बनर्जी नामक व्यक्ति पकड़ा गया था, उसे चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने १ नवम्बर तक हवालात में रखने की आज्ञा दी है।

—कलकत्ते के डलहौज़ी स्क्वायर में मि० टेगार्ट के ऊपर बम फेंकने के सम्बन्ध में प्रतुलचन्द्र मुकर्जी नाम का युवक गिरफ़्तार किया गया था। २४ ता० का समाचार है कि चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उसे रिहा कर दिया।

—ढाका का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि नवाबपुर में जो बम का कारख़ाना पकड़ा गया था उसके सम्बन्ध में श्रीयुत गौरीकिशोर नायक, श्रीमती त्रिपुर सेन और डॉ० अनुज भट्टाचार्य तथा उनकी पत्नी और पुत्री गिरफ़्तार हुई थीं। वे सब ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

—ढाका में मि० लोमेन की हत्या के अभियोग में तेजोमय घोष, सैलेशराय और ज्योतिर्मय गुह नामक तीन व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं। सेशन जज ने उनको एक-एक हज़ार की ज़मानत पर छोड़ने का हुक्म दिया है।

—२३ ता० को श्री० सेन गुप्त ने एक सम्बाददाता से बात करते हुए कहा है कि वे पं० जवाहरलाल नेहरू के कथनानुसार चुने हुए क्षेत्रों में टैक्सबन्दी के आन्दोलन को चलाना पसन्द करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गाँधी और पं० मोतीलाल नेहरू ने सर तेजबहादुर सप्रू के सामने जो शर्तें रखी थीं, उनसे कम पर भारत और ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट के बीच समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने प्युनिटिव पुलिस टैक्स को न देने तथा आगामी मर्दुमशुमारी का बॉयकॉट करने का भी विचार प्रकट किया।

—पं० जवाहरलाल नेहरू और मुफ़्ती क़िफ़ायतुल्ला की गिरफ़्तारी पर खीरी (लखीमपुर) में एक भण्डा-जुलूस निकाला गया और एक सार्वजनिक सभा में बधाई का प्रस्ताव पास किया गया।

—नागपुर के चार विदेशी कपड़े के मुख्य व्यापारियों ने २२ अक्टूबर की शाम को 'जॉय मरचेण्ट एसोसिएशन' की मुहर को तोड़ कर विदेशी कपड़ा बेचना आरम्भ किया। दूसरे दिन सुबह से ही १० स्वयं-सेविकाएँ और ६० स्वयंसेवक उनकी दुकानों पर ज़ोरों से पिकेटिङ्ग करने लगे। व्यापारियों ने जब देखा कि बिक्री हो सकना असम्भव है तो उन्होंने फिर कपड़े को कॉङ्ग्रेस की मुहर में बन्द कराना मञ्जूर कर लिया। विदेशी कपड़े की अन्य चार दुकानों और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग पूर्ववत् जारी है। कोई गिरफ़्तारी नहीं की जाती। कॉङ्ग्रेस कमेटी विदेशी सूत का बॉयकॉट करने की कोशिश कर रही है। अम्बर नामक क्रस्वे के कपड़ा बुनने वालों ने विदेशी सूत इस्तेमाल न करने की प्रतिज्ञा की है। यह क़स्बा हाथ से बुनी जाने वाली साड़ियों के बनाने का सब से बड़ा केन्द्र है। अब अम्बर की साड़ियों पर कॉङ्ग्रेस कमेटी की मुहर रहेगी और वे ही स्वदेशी समझी जायँगी।

—नागपुर का समाचार है कि श्री० बी० डी० कुलकर्णी, एक क़ानून के विद्यार्थी, जिन्हें सत्याग्रह आन्दोलन में एक वर्ष की सज़ा सज़ा दी गई थी, नागपुर सेन्ट्रल जेल में 'सी' क़ास में रखे गए हैं। उन्हें जेल में चक्की चलानी पड़ती है, गिट्टी तोड़ना पड़ता है और कोल्हू चलाना पड़ता है। इससे उनके स्वास्थ्य में बहुत हानिकारक प्रभाव हुआ है। नागपुर के लॉ कॉलेज के वे प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे।

—अकोले में पं० जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी की ख़बर पहुँचने पर दुकानदारों ने ४ बजे शाम तक हड़ताल मनाने का निश्चय किया। वह दिवाली का दिन था तो भी तमाम बाज़ार, यहाँ तक कि मिठाई की दुकानें भी पूर्णतया बन्द रहीं। शाम को धार्मिक रुढ़ि को पालन करने के लिए थोड़ी सी रोशनी हुई। पटाखे और आतिशबाज़ी का चलना क़तई बन्द रहा।

—लाहौर के गवर्नमेण्ट कॉलेज के प्रिंसिपल कर्नल गैरट ने प्रस्ताव किया था कि श्रीमती मनमोहिनी ज़ुतशी की एम० ए० की डिग्री उनके राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के कारण रोक ली जाय। पर सीनेट में यह प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया। क्योंकि वर्तमान नियमों के अनुसार इस प्रकार का कार्य नियम-विरुद्ध था।

—२५ ता० को श्री० सेन गुप्त सपलीक अमृतसर पहुँचे। उन्होंने वहाँ कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं और कपड़े के दुकानदारों से मुलाक़ात की। इस सम्बन्ध में एक सम्बाददाता से बात करते हुए उन्होंने कहा कि कपड़े के व्यापारियों के पास मौजूदा विदेशी कपड़े के बेचने के सम्बन्ध में रियायत करना ठीक नहीं। अमृतसर की कमेटी ने इस सम्बन्ध में बहुत बड़ी ग़लती की है। उन्होंने कहा कि मेरी राय में प्रत्येक दशा में हमको विदेशी माल का पूर्ण बॉयकॉट करना आवश्यक है।

—लाहौर का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि लाला दुनीचन्द बैरिस्टर और श्रीयुत पुरुषोत्तमलाल सोधी जेल से छोड़ दिए गए।

—लुधियाना का समाचार है कि वहाँ के एक स्वादी नामक गाँव में बम फट पड़ा। कहा जाता है कि एक सुनार, जो कि उसे तैयार कर रहा था, सज़ा घायल हो गया है।

—अमृतसर का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमेटी के प्रेज़िडेण्ट मौलाना इस्माइल राजनवी के पास, जिन पर राजनीतिक मामला चल रहा है, उनकी पत्नी स्थानीय सब-जेल में यह कहने गई थी कि उनका लड़का डबल निमोनिया से पीड़ित है और उसके जीवन की बहुत आशा नहीं है। उनसे ज़मानत देकर जेल से बाहर जाने को कहा गया। परन्तु उन्होंने ज़मानत देने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि मैं अपने सिद्धान्तों के आगे अपने लड़के के जीवन की परवाह नहीं करता।

—पण्डित हृदयनाथ कुँज़रू २७ अक्टूबर को इलाहाबाद से रवाना होकर दिल्ली होते हुए ३० ता० को बम्बई पहुँचेंगे। और वहाँ से १ नवम्बर को एक इटालियन जहाज़ से लन्दन के लिए रवाना होंगे। वे इंग्लैण्ड

पार्लियामेण्ट के दोनों हाउसों की संयुक्त निर्वाचित कमेटी (Joint Select Committee) में बम्बई की 'इम्पीरियल इण्डियन सिटीज़नशिप एसोसिएशन' की ओर से प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होंगे। इंग्लैण्ड में वे पूर्वीय अफ़्रीका के डेपूटेशन का भी नेतृत्व करेंगे।

—अमृतसर का समाचार है कि वहाँ के एक विदेशी कपड़े के व्यापारी का सामाजिक वहिष्कार राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के निर्णय के अनुसार किया गया है। उसे मकान के मालिक ने एक नोटिस दिया है, जिसके अनुसार एक सप्ताह के अन्दर या तो वह दुकान ख़ाली कर दे या कॉङ्ग्रेस से समझौता करे और कैंटोन्मेण्ट में जो उसने नई विदेशी कपड़े की दुकान खोली है उसे बन्द करे। उस पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है।

—बम्बई के श्री० के० एम० मुन्शी कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य नामज़द किए गए हैं।

—बारदौली का समाचार है कि बारदौली तालुके के सारमान गाँव के पास बाबला के किसानों को अधिकारियों ने नोटिस दिया है कि यदि वे तीन दिन के अन्दर लगाव न दे देंगे, तो उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली जायगी। इस पर गाँव वालों ने गाँव बिल्कुल ख़ाली कर दिया है।

बड़ौदा-स्टेट गवर्नमेण्ट को मदद देगी

बम्बई के 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' का कहना है कि बड़ौदा स्टेट की सरकार ने लगानबन्दी के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट को सहायता देने का निश्चय कर लिया है। बड़ौदा ने असाधारण कार्यवाही के अनुसार उन वाल-गिटयर्स को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सुपुर्द कर देना मञ्जूर कर लिया है, जो नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार अपराध कर बड़ौदा रियासत की सीमा में भाग आए हैं। बड़ौदा ने ब्रिटिश प्रजा के उन लोगों को भी निर्वासित करना मञ्जूर कर लिया है जो रियासत में सत्याग्रह का प्रचार कर रहे हैं।

वालगिटयर सेक्रेट्रियट में घुस गए

बम्बई का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पीपुल्स बैटेलियन' के चार वालगिटयर सखेरे सेक्रेट्रियट में घुस गए और होम मेम्बर के ऑफ़िस के अन्दर जाने लगे। परन्तु जब फाटक के सिपाहियों ने उन्हें रोका तब वे 'होम' विभाग के डिपुटी सेक्रेटरी के ऑफ़िस में घुस गए और ख़ाली कुर्सियों पर बैठ गए और उस समय तक बैठे रहे, जब तक वे धक्के मार कर न निकाल दिए गए। शीघ्र ही पुलिस बुलाई गई, परन्तु जब पुलिस पहुँची तब वालगिटयर वहाँ न थे। इसके कुछ ही देर बाद वे फिर आ गए और आगे पीछे दरवाज़ों पर खड़े होकर राष्ट्रीय नारे लगाने और राजविद्रोहात्मक परचे बाँटने लगे। पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और पैदल एसप्लेनेड हवालात में ले गई।

—पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपनी गिरफ़्तारी का आशङ्का के कारण गिरफ़्तार होने के पहले ही सरदार बल्लभ भाई पटेल को कॉङ्ग्रेस का प्रेज़िडेण्ट चुन गए थे। परन्तु जब तक वे जेल से मुक्त न हो जायँ, तब तक के लिए प्रेज़िडेण्ट चुनने का अधिकार पण्डित मोतीलाल को दे गए थे। पण्डित मोतीलाल ने उनके जेल से मुक्त होने तक श्री० जे० एम० सेन गुप्त को कॉङ्ग्रेस का प्रेज़िडेण्ट चुना था। वे भी पकड़ लिए गए।



विदेश

—सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीयुक्त जयकर, मुंजे, मौलाना मुहम्मद अली इत्यादि। कई राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस के सदस्य १८ तारीख को लन्दन पहुँच गए। वे अब आपस में सलाह करना प्रारम्भ करेंगे। सर सप्रू ने 'रायटर' अखबार के प्रतिनिधि से कहा कि हम लोग पूर्ण मित्रता से ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के साथ सलाह करने आए हैं। भारत की दशा आजकल बहुत ही नाजुक है। पर मैत्री भाव दिखाने से वह सुधर सकती है। हम लोग औपनिवेशिक स्वराज्य लेने के लिए तैयार हैं और उसकी शासन प्रणाली बनाने के लिए यहाँ आए हैं। जो अधिकार अभी भारतीयों को पूर्णतया नहीं सौंपे जा सकते हैं, उन अधिकारों के देने के लिए हम लोग नियमित समय देने को तैयार हैं। अभी हम लोगों में भेद अवश्य है, पर जिस दम ब्रिटिश सरकार हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देना स्वीकार कर लेगी, हम लोग सब एक होकर शासन-प्रणाली बना सकेंगे।

—डॉक्टर मुंजे ने कहा कि विलायत वाले अब समता का पद देकर ही भारतीयों को अपने साथ रख सकते हैं। भारत में कई सैनिक जातियाँ हैं, जो कि अपने देश की रक्षा पूरी तौर से कर सकती हैं। केवल उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है।

—यह आशा की जाती है कि राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस १२ नवम्बर से प्रारम्भ होगी। इस अवसर पर सम्राट पञ्चम जॉर्ज एक अभिभाषण देंगे। इसके बाद कॉन्फ्रेंस का काम कुछ दिनों के लिए स्थगित किया जावेगा। पहिली सभा १७ नवम्बर को सेंट जेम्स पैलेस में होगी। कॉन्फ्रेंस सम्बन्धी सभाएँ पैलेस के क्रीन एनी के बड़े कमरे तथा अन्य कमरों में होंगी। हिन्दू-मुस्लिम एकता हो जाने की आशा की जाती है। रियासतों के प्रतिनिधियों को २४ नवम्बर को राजकुमार ने भोज दिया है। सदस्यों के लिए २६ फ्रीड लम्बी एक अण्डाकार टेबुल बनाया गया है। भारतीय सदस्यों का स्वागत अन्य उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की तरह नहीं हुआ है। इस पर लन्दन निवासी भारतीयों को बहुत खेद हो रहा है।

—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस के लिए विलायत में एकत्रित नेता प्रति दिन खानगी सभाएँ करके हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रहे हैं। बहुत सी बातों में सुलह हो गई है। मिस्टर जिन्ना ने अपनी १४ शर्तें सबके सामने रखी थीं और उन पर ध्यान दिया गया। आखिरी शर्तें ब्रिटिश नेताओं से मुलाकात हो जाने के बाद तय की जावेंगी।

—लॉर्ड जेटलैण्ड ने गृह-बन्धनों के कारण भारत के भावी वायसराय होना अस्वीकार कर दिया। इसलिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को कोई दूसरा आदमी तबाश करना पड़ेगा। यह तो निश्चित है नया वाइसराय राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस के समाप्त हो जाने के बाद ही आवेगा। प्रधान मन्त्री मिस्टर मेकडॉनल्ड ने इस विषय पर राउण्ड टेबुल के लिए गए हुए भारतीयों की सलाह लेने का इरादा किया है।

—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस के लिए भारतीय सरकार ने जो मेमोरेण्डम भेजा है वह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—११ नवम्बर को इस साल फिर महायुद्ध का सन्धि-दिवस मनाया जावेगा। पार साल की तरह विलायत में ११ बजे सब काम २ मिनट के लिए बन्द कर दिए जावेंगे। सम्राट पञ्चम जॉर्ज ने अपनी इच्छा प्रकट की है

कि सारे साम्राज्य में इसी तरह सन्धि-दिवस मनाया जावे। भारत की सरकार ने विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि आशा है भारत की राजभक्त प्रजा सम्राट की इच्छा का पालन करेगी।

—भारतीय हवाई डाक में अब रोशनी का इन्तजाम होने वाला है। इससे हवाई जहाज रात में भी यात्रा कर सकेंगे। अगली गर्मी तक यह प्रबन्ध पूर्ण हो जाने के कारण विज्ञायत से भारत तक सफ़र और भी जल्द तय हो सकेगा।

—लन्दन में एक नई रेल तैयार की गई है, जो कि एक घण्टे में ६३ मील जा सकती है। एक डब्बा जिसमें ४३ यात्री बैठ सकते हैं हवाई जहाज के समान इन्जिन से खींचा जाता है। डब्बे में इतने अच्छे स्प्रिङ लगाने गए हैं कि अन्दर बैठने वाले जरा भी हिलते-डुल्लते नहीं हैं और यदि यात्री आँखें मूँद लें तो उन्हें यह भी नहीं मालूम होता कि गाड़ी चल रही है।

—प्रसिद्ध वैज्ञानिक ईस्टन को विलायत में २८ अक्टूबर को भोज दिया जावेगा। मिस्टर बरनर्डशाँ, रॉथ्स चाइल्ड और कई और बड़े सज्जन तथा विद्वान भी इसमें भाग लेंगे।

—लङ्काशायर की औद्योगिक दशा का निरीक्षण करने तथा उसकी उन्नति के साधन निश्चित करने के लिए होमसेक्रेटरी मिस्टर जे० आर० क्लाइन्स तथा व्यापार सङ्घ के अध्यक्ष मिस्टर विलियम ग्रेहम गए हुए हैं।

—बगदाद-हहक्रा रेलवे लाइन के बनाने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने इम्पीरियल डेवलपमेण्ट फ़ण्ड में से २५,००० पौण्ड देना निश्चय किया है।

खान में २३५ मर गए

—जर्मनी की एक खान में धड़ाका होने के कारण २३५ श्रमजीवी मर गए। २१ व्यक्तियों का अभी तक पता नहीं चला है। धड़ाका इतने जोर से हुआ था कि खदान के करीब के मकान तथा गाँव तक गिर पड़े। बचाने की बहुत कोशिश की जाने पर २८ मनुष्य, जो कि घायल हैं, बाहर निकाले जा सके हैं।

—२४ तारीख की खबर है कि ब्रेज़िल में पल्टन तथा उपद्रवियों ने बलवा करके वहाँ की गवर्नमेण्ट को उलट दिया है। राज्य अब सैनिकों के एक दल के हाथ में आ गया है, जिसके नेता सेनोर टेसो फ़ोगोसो तथा जनरल बरेटो हैं। राज्य के प्रेज़िडेण्ट डॉक्टर वाशिंग्टन लुई को जबरदस्ती त्याग-पत्र देना पड़ा है। उपद्रवियों के झुण्ड ने सबकों में धूम-धूम कर समाचार-पत्रों के स्थान तोड़ डाले हैं। शहर के सारे घर तथा दुकानें बन्द पड़ी हैं।

—मिस्टर हेरी गॉसबिज़, जो कि ब्रिटिश श्रमजीवियों के एक बड़े नेता थे, २० तारीख को मर गए। ये कई बड़े श्रमजीवी सङ्घों के अध्यक्ष रह चुके थे।

—ग्राँधी के कारण ब्रिटनी के सामुद्रिक मछुओं के जहाज उलट जाने से २०३ मछुओं की मृत्यु हो गई है। ये १२७ विधवाएँ तथा, १७३ अनाथ बालक छोड़ कर मरे हैं, जिनकी आर्थिक दशा बहुत ही शोचनीय है।

—बल्गेरिया के राजा बोरिस का व्याह राजकुमारी गिओवाना के साथ इटली के असीसी नगर में हुआ है। सारा शहर रोशनी व तोरन से सजा था। इटली के राजा तथा अन्य राजकुमार व सिंग्यार मसोलिनी इस अवसर पर उपस्थित थे।

—इन्दौर के भूतपूर्व महाराजा तुकोजी राव के महल के चौकीदार को कोर्ट की तरफ से हर्जाना देना मंज़ूर हो गया है, पर महाराजा ने इस पर अपील

की है कि चौकीदार किसी दूसरे की नौकरी पर था, इसलिए उसे जो चोट लगी है उसके लिए महाराजा का हर्जाना देना न्याय-सङ्गत नहीं है। बड़ी अदालत ने अपील मंज़ूर कर ली है और महाराज को हर्जाना देने से बरी कर दिया है।

—रबर और टिन का भाव बेतरह गिर जाने के कारण स्ट्रेट-सेटलमेण्ट में रहने वाले हज़ारों भारतीय तथा यूरोपियन बेकार हो गए हैं। रबर की बहुत सी इस्टेकरा और कई टिन की खानें बन्द हो गई हैं। हाल में २५,००० भारतीय हिन्दुस्तान वापस आने के लिए चल दिए हैं। बहुत से चीनी कुली भी अपने देश को लौट गए हैं।

—दो लम्बी उड़ान लगाने वाले उडाकू गिलबर्ट-लेन तथा पीअरे निकोलस सिल्वरबाम, जो कि कैरी से एडिस अबास तक उड़ने का प्रयत्न कर रहे थे—हवाई जहाज टूट जाने के कारण एक घर पर गिरे व आग लगने से जहाज सहित जल कर मर गए।

—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस के लिए गए हुए भारतीय रियासतों के महाराजाओं को सम्राट तथा सम्राज्ञी ने ४थी नवम्बर को बकिङ्गम पैलेस में दावत दी है।

—मिस्टर क्लाइन्स ने, जो कि ब्रिटिश सेक्रेटरी हैं, अपने वक्तव्य में कहा है कि हमारी राजनीति ने भारतीयों को हमारा दुश्मन बना दिया है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि इस समय वे हमारे मातृ को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। वे उसे सबकों पर जलाते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि हम लोगों ने अपनी बुरी शासन-पद्धति से इङ्ग्लैण्ड के नाम को घृणित बना दिया है तथा भारतीयों के प्रेम और व्यापार को खो दिया है।

—कविवर रवीन्द्र ठाकुर अमेरिका से १२वीं नवम्बर तक भारत के लिए रवाना होंगे। वे फ़्रिडेडेल्फ़िया शहर में अपने चित्र बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं।

—चीन देश की नेशनेलिस्ट सरकार के प्रेज़िडेण्ट चियाङ्ग-काइ-शेक ने क्रिश्चियन धर्म स्वीकार कर लिया है।

—पेलेस्टाइन की नई नीति का विरोध करते हुए जनरल स्मट्स ने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मेकडॉनल्ड को लिखा है कि इसको सुन कर मुझको बहुत खेद है। अन्य ब्रिटिश दलों के नेता भी कहते हैं कि इस नवीन नीति को स्वीकार करके गवर्नमेण्ट ने ब्रिटेन का दिया हुआ वचन तोड़ दिया है।

—ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री मिस्टर स्कलिन ने अपने वक्तव्य में कहा है कि ऑस्ट्रेलिया के देशीय क्रुर्ज़ की अवहेलना करने की खबर, जो बड़े ज़ोरों से उड़ रही है, गलत है। हमारे देश के ६८ फ्री सदी निवासी ब्रिटिश हैं और हम सदा इङ्ग्लैण्ड से सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इसलिए हम लोगों को क्रुर्ज़ की अवहेलना करने का कोई भी कारण नहीं हो सकता।

—ठण्ड के कारण राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस में गए हुए बहुत से सदस्यों को बड़ी तकलीफ़ है। कुछ लोग अस्वस्थ भी हैं। सर तेजबहादुर सप्रू उनमें से एक हैं।

—यह सुना जाता है कि खानगी तौर से बहुत से बड़े-बड़े लोग विलायत में और हिन्दुस्तान में गवर्नमेण्ट से आग्रह कर रहे हैं कि जिस रोज़ राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस अपना कार्य प्रारम्भ करे उस दिन ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को जेल में बन्द भारतीय नेताओं को छोड़ कर व ऑर्डिनेन्स हटा कर अपनी नेक नीयती का परिचय देना चाहिए। पर कुछ लोग यह भी कह रहे हैं इस पर कॉन्फ्रेंस कुछ भी ध्यान न देगी और आन्दोलन में ज़रा भी कमी न करेगी, इसलिए इससे कुछ लाभ नहीं है।

* * *



—मेरठ की तीन प्रसिद्ध महिला कार्यकर्त्रियों—भीमती प्रकाशवती सूद, विद्यावती और कमला देवी चौधरी को २४ अक्टूबर को ४-४ मास की जैद और १२०/-१२०/- जुर्माने की सजा दी गई। जुर्माना न देने पर डेढ़-डेढ़ महीने की सजा और होगी। काँडग्रेस के तीन नेता—जगजी निजामुद्दीन, श्री० नूरुद्दीन और राधेमोहन बरी कर दिए गए। पं० इन्द्रमणि और राधेबाल पर दफ्ता १७ का अभियोग लगाया गया है।

—२४ ता० की खबर है कि पुलिस ने बनारस के सत्याग्रह-आश्रम पर धावा किया और भोजन-सामग्री, कपड़ा आदि जो चीजें वहाँ मिलीं, उठा ले गई। एक कुर्क और दो अन्य व्यक्ति जो वहाँ मौजूद थे, गिरफ्तार कर लिए गए। २३ तारीख को शाम को श्री० उदितनारायण कसान, वासुदेव, श्री० सीताराम, पं० जगन्नाथ मिश्र और श्री० रामनाथ विदेशी कपड़े की दुकानों के सामने गरत लगाते पकड़ लिए गए। इनके सिवाय और भी तीन क्रस्वों के कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए हैं।

—कानपुर में २४ वीं अक्टूबर को एक राजविद्रो-हात्मक भाषण देने के अपराध में साप्ताहिक उर्दू पत्र 'कृष्ण' के सम्पादक पण्डित राजाराम सविर गिरफ्तार कर लिए गए।

—शाहदरा (दिल्ली) के एक काँडग्रेस कार्यकर्ता श्री० विद्यारत्न को २४ वीं अक्टूबर को छः मास की सख्त जैद की सजा दी गई।

—दिल्ली में श्री० माखनबाल और कुतरसिंह दो वाल-गिटियर बागाड़ीवार के पास मकेंटाइल बैक के गोदामों पर, जहाँ पुलिस की सहायता से विलायती कपड़े की गाँठें पहुँचाई जा रही थीं, पिकेटिङ करने के कारण गिरफ्तार कर लिए गए।

—अम्बाला में प्रातःकाल की फेरी में चार आदमी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। वहाँ के कण्टोन्मेण्ट में १४४ दफ्ता लगा कर जुलूस वगैरह निकालना बन्द कर दिया गया है।

—२४ वीं अक्टूबर को लाहौर के उर्दू दैनिक 'मिलाप' के सम्पादक श्री० खुशालचन्द का १० वर्ष का लड़का यशपाल राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया गया।

—सक्कर का समाचार है कि वहाँ के 'डिक्टेटर' श्री० घनश्यामदास, कप्तान और दो वालगिटियर गिरफ्तार कर लिए गए हैं। पहिले दो को तीन माह की सख्त जैद और ५० रुपए जुर्माना या दो सप्ताह की अतिरिक्त जैद की सजा हुई। एक वालगिटियर को तीन माह की सख्त जैद की सजा हुई और एक छोड़ दिया गया।

—१६ और २० ता० को बम्बई के आसपास के स्थानों में आठ व्यक्ति गिरफ्तार किए गए थे। मुकदमा चलने पर उनमें एक छोड़ दिया गया और सात को ६-६ मास की सख्त जैद की सजा और ५०/- से ३००/- तक जुर्माना हुआ।

—अहमदाबाद का २२ अक्टूबर का समाचार है कि नवियाद में विदेशी कपड़े और शराब पर पिकेटिङ करने के कारण ३२ स्त्रियाँ गिरफ्तार की गईं, जिनमें से १६ छोड़ दी गई हैं। जिस समय स्त्रियाँ गिरफ्तार की

जा रही थीं, उस समय भीड़ भगाने के लिए पुलिस ने लाठी प्रहार भी किया था।

—बिहार के प्रसिद्ध काँडग्रेस और हिन्दू-सभा के कार्यकर्ता बाबू जगतनारायण बाल दूसरी बार गिरफ्तार किए गए हैं और उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। 'सर्चलाइट' के मैनेजर बाबू अम्बिकाकान्त सिंह भी दूसरी बार गिरफ्तार हुए हैं, पर उनका मुकदमा अभी आरम्भ नहीं हुआ।

—२४ ता० को पटना में १३ स्वयंसेवक, जो बाजार में विदेशी कपड़े के बाँयकॉट का प्रचार कर रहे थे, गिरफ्तार कर लिए गए। उनके साथ कुछ महिलाएँ भी थीं, जिन्होंने अपने को गिरफ्तार कराना चाहा, पर पुलिस ने उनको नहीं पकड़ा।

—मद्रास की २५ ता० की खबर है कि श्री० राज-गोपालाचारी पुलिस का नोटिस पाकर पुलिस कोर्ट में उपस्थित हुए। नोटिस में उनसे एक वर्ष तक शान्ति-रक्षा के लिए ५००/- का मुचलका माँगा गया था। कारण यह बतलाया गया था कि १२ अक्टूबर को उन्होंने मद्रास में जो व्याख्यान दिए उसमें लोगों से सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने और आगामी मर्दुमशुमारी का बाँयकॉट करने का अनुरोध किया था। श्री० राज-गोपालाचारी ने मुचलका देने से इन्कार किया, इस पर वे जब तक मुचलका न लिखें तब तक के लिए जेल भेज दिए गए। उन्होंने अपनी जगह श्री० सत्यमूर्ति को, जो अदालत में उपस्थित थे, तामिल नाडू काँडग्रेस का अस्थायी प्रेजिडेंट नियत किया है। जेल जाते समय उन्होंने सन्देश दिया है कि—“सरकार को तत्काल ही मेरी आवश्यकता थी, इसलिए मैं झुशी के साथ जाता हूँ। अब कोई भी स्वाभिमानी भारतवासी और ज्ञास कर काँडग्रेसमैन जेल के बाहर खुश नहीं रह सकता। इस सुनिश्चित विजय के अवसर पर देश के लिए कष्ट सहन करना वास्तव में सौभाग्य की बात है।”

राष्ट्रीय झण्डा पुलिस को देने से इन्कार

दिल्ली का २३ वीं अक्टूबर का समाचार है कि पहाड़ी धीरज में राष्ट्रीय झण्डा फहराते समय ८ वालगिटियर गिरफ्तार कर लिए गए और दो स्त्रियाँ इसलिए गिरफ्तार की गईं कि उन्होंने राष्ट्रीय झण्डा पुलिस को देने से इन्कार किया था।

—छपरा का १५ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सारन की जिला काँडग्रेस कमिटी गैर कानूनी क्रार दे दी गई है। पुलिस जिले के प्रायः सभी थानों के बहुत से गाँवों में जायदादें कुर्क कर रही है। बरेजा के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता बाबू बाबन सिन्हा गिरफ्तार कर लिए गए।

—लाहौर का २० वीं अक्टूबर का समाचार है कि लुधियाना महिला-सत्याग्रह-दल की प्रेजिडेंट, श्रीमती प्रकाशवती देवी को चार मास की जैद और १५० रुपए जुर्माने की सजा दी गई है। वे 'ए' क्लास में रक्खी गई हैं।

—पेशावर का २० वीं अक्टूबर का समाचार है कि पिकेटिङ करने के कारण वहाँ केवल एक दिन में ३१ गिरफ्तारियाँ हुईं। उनमें से १७ को ६-६ माह की सख्त सजा हुई और एक को 'फ़ान्टियर क्राइम रेगुलेशन' के अनुसार तीन साल की सख्त जैद की सजा हुई।

—छपरा काँडग्रेस कमिटी के डिक्टेटर पं० वेदव्रत जी वानप्रस्थ १६ वीं सितम्बर को गिरफ्तार किए गए थे। उन को एक महीने हवालात में रखने के बाद एक साल की सादी सजा दी गई है।

—कलकत्ते का २० वीं अक्टूबर का समाचार है कि खुलना बम केस के सम्बन्ध में मेडिकल कॉलेज के एक छठवें वर्ष के विद्यार्थी की गिरफ्तारी हुई है।

—मद्रास का समाचार है कि बेलारी ग्युनिसिपल-लेन में काँडग्रेस का प्रचार रोकने के लिए वहाँ १४४ दफ्ता लगा दी गई है। वहाँ के ५ सत्याग्रहियों को, जमानत देने से इन्कार करने पर, जिला मैजिस्ट्रेट ने १-१ वर्ष की सादी जैद की सजा दी है। कालीकट में भी जिला मैजिस्ट्रेट के ऑर्डर के विरुद्ध ताड़ी की दुकानों पर पिकेटिङ करने के अभियोग में ८ सत्याग्रही वालगिटियरों को ४-४ माह की सख्त जैद की सजा हुई है।

—पटना का २८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बिहार प्रान्तीय काँडग्रेस कमिटी की रिपोर्ट के अनुसार वहाँ एक सप्ताह में १८४ गिरफ्तारियाँ हुई हैं।

—ब्रह्मनवरिया (टिपरा) के काँडग्रेस ऑफिस पर पुलिस ने २७ वीं अक्टूबर को धावा किया और ३० वालगिटियरों को गिरफ्तार किया। उनमें छोटी उमर के लड़के भी सम्मिलित थे।

—कानपुर में २७ वीं अक्टूबर को विदेशी कपड़े की गाँठें रोकने के कारण पृथ्वीनाथ भार्गव गिरफ्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि कलकत्ता महिला सङ्घ की सेक्रेटरी वाजियाबाई को, जिनकी उमर ५० वर्ष की है 'एन्टी पिकेटिङ ऑर्डिनेन्स' के अनुसार ३ माह की सख्त जैद की सजा हुई है।

—नागपुर का २८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि गुमसर की काँडग्रेस के प्रेजिडेंट और दो अन्य प्रसिद्ध कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए।

—नई दिल्ली का २८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि एक मुसलमान की विदेशी कपड़े की दुकान पर पिकेटिङ करने के कारण ४० पुरुषों और १३ स्त्रियों की गिरफ्तारी हुई है। स्त्रियों में डॉक्टर ब्रजराणी—वालगिटियरों की कसान भी सम्मिलित हैं।

—कलकत्ते का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ पड़वन्न केस के सम्बन्ध में दो विद्यार्थियों की गिरफ्तारी हुई है और वासुदेव नामक व्यक्ति और दो वैद्यों के घरों की तलाशी ली गई। पुलिस वासुदेव के घर से भगतसिंह और दत्त की तस्वीरें ले गई है।

—बम्बई में हिन्दुस्तानी सेवा-दल की छः स्वयं-सेविकाओं ने मेसर्स ग्रिन्डले एण्ड को० और मेसर्स स्पिनर एण्ड को० के गोदामों पर पिकेटिङ की, जहाँ पर विदेशी कपड़ा बन्द है। मालूम हुआ कि और सब गोदामों पर भी, जिनमें विदेशी कपड़ा बन्द है, इसी प्रकार पिकेटिङ की जायगी। यद्यपि देशसेविका सङ्घ और हिन्दुस्तानी सेवा-दल गैरकानूनी घोषित किए जा चुके हैं, तो भी इन संस्थाओं की महिला स्वयंसेविकाएँ बराबर विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ कर रही हैं। काँडग्रेस बुलेटिन भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है।

* * *

(पहले पृष्ठ का शेषांश)

भगाया। सारा मैदान “राष्ट्रीय झण्डा ऊँचा रहे” “यूनियन जेक नीचे गिरे” की ध्वनि से गूँज रहा था। पुलिस ने ३५ काँडग्रेस के स्वयंसेवक और गिरफ्तार किए। १४ अन्य औरतें गिरफ्तार हुईं, जिन्हें मोटर में बैठा कर सारजेण्ट लोग जङ्गल में ले गए और वहाँ छोड़ दिया। हत्तिफाऊ से एक सज्जन वहाँ मोटर पर पहुँच गए और उन्हें क़रीब के स्टेशन पर ले जाकर बम्बई का टिकट कटा दिया।

* * *



सप्ताह की झायरी

—बनारस का २४ अक्टूबर का समाचार है कि प्रेस ऑर्डिनेन्स की अवधि समाप्त हो जाने पर २६ अक्टूबर से दैनिक 'आज' फिर प्रकाशित होने लगेगा।

—यू० पी० के प्रायः हर एक जिले में सुप्रसिद्ध जमींदारों की जिला कमिटियाँ सत्याग्रह आन्दोलन का विरोध करने और उसके विरुद्ध आन्दोलन करने के लिए स्थापित हो रही हैं।

—दिल्ली का समाचार है कि पण्डित मुकुन्द राम, जो चेन्नपुरी में एक जैन मन्दिर के पुजारी हैं और उनका लड़का चन्द्र और भतीजा बुद्ध जो दूसरे मन्दिरों में पुजारी थे, विदेशी कपड़े की दुकान खोलने के कारण मन्दिरों से निकाल दिए गए। पुलिस की सहायता से कपड़े की गाँठें कटवा अशर्फी ले गए थे जिस पर पिकेटिंग करने के कारण दो वाल्विटर गिरफ्तार हुए। मुकुन्द-राम ४० वर्ष से पुजारी का काम करते थे।

—नई दिल्ली में रेलवे लाइन के पास किसी आदमी का अधकटा शरीर पड़ा पाया गया है। आधे शरीर का मांस गिद्ध और सियार खादि खा गए। इस बात का पता अभी तक नहीं चला कि यह दुर्घटना अचानक हुई थी या उसने आत्म-हत्या की थी।

—सर शहाबुद्दीन तीसरी बार पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिल के प्रेजिडेंट नियत किए गए हैं। उनका यह चुनाव सर्व-सम्मति से हुआ है और इसके लिए समस्त सदस्यों ने उनको बधाई दी। श्री० वंशी मेहतर ने भी उनका समर्थन किया। उसने अपने भाषण में यह भी कहा कि जैसा बहुत से लोग उसके बारे में कहते हैं, वह केवल मिट्टी का पुतला नहीं है, वरन् उन्होंने की तरह एक आदमी है। इस पर सरकारी और गैर सरकारी सदस्यों ने खूब हर्ष-ध्वनि की।

—२३ ता० को पेशावर के अन्दर शहर मुहल्ले में आग लगने से पाँच मकान, जिनका बीमा हो चुका था, जल गए और कितने ही अन्य मकानों को भी बहुत कुछ हानि पहुँची। तड़ गलियों के कारण फायर-ब्रिगेड को आग बुझाने में बड़ी कठिनाई पड़ी। करीब ५० हजार का नुकसान हुआ समझा जाता है।

—केटा के पीपल्स बैङ्क में ४१ हजार रुपए की चोरी के सन्देह में बैङ्क का मैनेजर और तमाम अन्य कर्मचारी गिरफ्तार कर लिए गए थे। कहा जाता है खजांची के यहाँ से रुपए बरामद हुए हैं।

—२२ अक्टूबर को दिवाली के दिन केटा (बलोचिस्तान) में डेयरी मार्केट में आग लग जाने से करीब ५० हजार की हानि हुई।

—मद्रास का समाचार है कि बिल्लूरम जङ्गल स्टेशन के प्लेट फॉर्म से जब नं० २ बोट मेल मद्रास के लिए रवाना हो रही थी तब मुनुस्वामी गौदन नामक एक पोर्टर गाड़ी के साथ दौड़ते समय प्लेट-फॉर्म और रेल की पटरी के बीच फिसल कर गिर पड़ा और रेल के नीचे दब कर उसी समय मर गया।

—बन्दुरुमल्ले (मद्रास) स्टेशन के पास जब कि एक ३० वर्षीय मदिरा बूचिया नामक व्यक्ति पैसेजर गाड़ी आते समय रेलवे लाइन पार कर रहा था, तब एंजिन की ठोकर लग जाने से वह उसी समय मर गया।

—मद्रास का समाचार है कि सैदापेट की एक ३५ वर्षीय पूना अम्मल नामक स्त्री एक जमींदार की मोटर के नीचे दब कर मर गई। कहा जाता है कि जब मोटर रास्ते पर जा रही थी, स्त्री के रास्ता पार करते समय अचानक मोटर सामने आ गई और मोटर से दब गई। जमींदार तुरन्त उसे जनरल अस्पताल में ले गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

—मद्रास का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि डॉक्टर एनी बिसेण्ट यूरोप से बम्बई होकर मद्रास वापस आ गई हैं।

—मद्रास कौन्सिल में जस्टिस पार्टी के नेता दीवान बहादुर मनुस्वामी नायडू ने नवीन मन्त्रि-मण्डल का सङ्गठन किया है।

—शान्ति-निकेतन में एक सन्देश आया है, जिससे मालूम हुआ है कि अमेरिका से कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर के डॉक्टर, टी० इम्ब्रेस ने 'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक बाबू रामानन्द चटर्जी के पास एक केबिल भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि "यद्यपि कवि को हृदय की बीमारी के कारण पूरे आराम की आवश्यकता है, तथापि चिन्ता का कोई कारण नहीं है।"

—कलकत्ते में तस्ला की एक जूट-मिल में आग लग जाने के कारण १२ हजार का नुकसान हुआ।

—कलकत्ते में मिसेज बेकट नाम की एक ऐंग्लो इण्डियन स्त्री और हरिकृष्ण नाम का एक चपरासी दो हजार रुपए का चोरी का माल लेने और उसे बेचने के अभियोग में पकड़े गए हैं। उन पर चीफ प्रेजिडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा चल रहा है।

—दार्जिलिंग का २३ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बङ्गाल के गवर्नर इन्फ्लूएन्जा से पीड़ित हैं।

—बर्मा की ऑल बर्माज एसोसिएशन ने ब्रिटिश और भारतीय गवर्नमेण्ट के अधिकारियों को तार द्वारा सूचित किया है कि बर्मा भारतवर्ष से अलहदा होना नहीं चाहता। इस सम्बन्ध में बर्मा की लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्यों ने जो अलग होने का प्रस्ताव पास किया उसका कोई महत्व नहीं, क्योंकि वे सदस्य जनता के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं।

—सम्बलपुर के बारपाली नामक गाँव में सात वर्ष की आयु के एक बालक का बलिदान कर दिया गया। इस सम्बन्ध में जादो सुनारी नाम की एक स्त्री पकड़ी गई है, जो किसी जादूगर की चेली है। उसके घर से ताड़ के पत्तों पर लिखी एक किताब भी मिली है जिसमें पशुओं के बलिदान का विधान है। इस सम्बन्ध में और भी कितने ही व्यक्ति पकड़े गए हैं।

—कराची का समाचार है कि श्री० आसपी इज्जिनियर जिन्होंने अकेले लन्दन से कराची उड़ कर आशा ख़ाँ का पुरस्कार प्राप्त किया था, का हवाई जहाज १५ ता० को भुज कच्छ स्टेट में १ से १६ मील की दूरी पर एंजिन बिगड़ जाने से टकरा गया। एक पहाड़ी के पास उतरते समय उसकी मशीन का एक पट्टा टूट गया और चरमा टूट जाने से उनकी नाक पर एक ज़ख्म हो गया। गाँव के आदिमियों ने उन्हें रेल से पूना आराम से भेज दिया। जहाज कराची भेजा गया है।

—भारतीय श्रमजीवियों की जाँच करने वाला रॉयल कमीशन आजकल बर्मा में भ्रमण कर रहा है। २३ अक्टूबर को उसने नामटू की कोयले की खानों का निरीक्षण किया और खानों के कॉरपोरेशन के जनरल मि० होगन टेलर की गवाही ली। वहाँ से कमीशन माण्डले जाने वाला था।

—नई दिल्ली का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सम्राट ने फ्रील्ड-मार्शल सर विलियम रिडेल बर्डवुड बर्ड के स्थान में, उनका पद खाली होने पर, ए० डी० सी० जनरल, जनरल सर फ्रिड्रिप बाल-हाउस को गवर्नर-जनरल की 'एक्जीक्यूटिव कौन्सिल' का सदस्य नियुक्त किया गया है।

—तंजोर का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बरसात के कारण वहाँ सब ओर की रेलवे लाइनें और रास्ते बिगड़ गए हैं। छः दिन की बरसात के बाद पानी बन्द हुआ है। तंजोर स्टेशन पर १००० गरीब यात्री रुके पड़े हैं, जिनका पालन शहर के दानी और धार्मिक पुरुष कर रहे हैं।

—मद्रास का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि साऊथ-इण्डियन रेलवे की पोडानूर-डिण्डीगाल लाइन पर पोलाची और कोबिलिपालायम स्टेशनों के बीच में कल शाम को एक एंजिन और ४ गाड़ियाँ पटरी से उतर जाने के कारण एक फायरमैन और एक स्त्री की, जो पास ही में जानवर चरा रही थी, मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना के कारण का अभी तक पता नहीं लगा।

—पटना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पटना पब्लिशिंग एण्ड एजेन्सी कंपनी लिमिटेड' के डायरेक्टरों ने जनवरी से 'गार्जियन' नामक एक अङ्ग्रेजी पत्र निकालने का निश्चय किया है।

—लाहौर का २० ता० का समाचार है कि एक स्थानीय कॉलेज की मेनेजिंग कमिटी के निर्णय के कारण वहाँ के प्रिन्सिपल और दो प्रोफेसरों ने इस्तीफे दे दिए। कहा जाता है कि प्रिन्सिपल ने कॉलेज के एक विद्यार्थी पर, जो मेनेजिंग कमिटी के एक सदस्य का सम्बन्धी था, दुर्व्यवहार के कारण जुर्माना किया था, परन्तु मेनेजिंग कमिटी ने अपनी एक बैठक में उसका जुर्माना वापिस कर देने का निर्णय किया। इस पर प्रिन्सिपल और दो प्रोफेसरों ने इस्तीफे दे दिए हैं। विद्यार्थियों ने कमिटी के इस निर्णय का घोर विरोध किया है।

—शान्ति-निकेतन का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि रोमाँ रोलाँ ने कविवर टागोर के जन्म-दिवस उत्सव के उपलक्ष में 'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक श्री० रामानन्द चटर्जी को, जो इस समय शान्ति-निकेतन में हैं, एक सन्देश भेजा है, जिसके अन्त में उन्होंने लिखा है कि—"मैं आप से कह नहीं सकता कि मैं और मेरी बहिन आपके देश की वीरतापूर्ण वटनाओं को कितनी सहानुभूति के साथ देख रहे हैं।"

—मुजफ्फरपुर का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि अलवर राज्य के राज-गुरु श्री० स्वामी परमहंस हंसस्वरूप जी महाराज का देहान्त हो गया। स्वामी जी का घर मुजफ्फरपुर में था। अलवर का डॉक्टर उनकी चिकित्सा करता था और वहाँ के अर्थ-सचिव उनकी मृत्यु के समय वहाँ उपस्थित थे। उनकी लाश अलवर में उस समय तक सुरक्षित रखी जायगी, जब तक अलवर महाराज पेरिस से लौट कर न आ जायँगे।

—दिल्ली का समाचार है कि पुलिस ने सवेरे 'महा-राष्ट्र सङ्घ' के प्रधान दफ्तर पर धावा किया और उसकी तलाशी ली। तलाशी खाँसी के विश्वनाथ की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में ली गई है।

‘स्वतन्त्रता हमारा दरवाजा खटखटा रही है’

बम्बई की ‘डिक्टेटर’ कुमारी सोमजी की गिरफ्तारी

बम्बई का २३ अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ की ‘युद्ध-समिति’ की प्रेजिडेंट कुमारी सोमजी को बृहस्पतिवार के सवेरे प्रेजिडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० ओस्कर ब्राउन ने ६ माह की सजा सुना दी। उनके ऊपर दो अभियोग लगाए गए थे। एक तो यह कि वे सैरकानूनी सभा की सदस्या हैं और दूसरा यह कि वे उसके कार्यों के प्रचार और सभाओं में सहायता करती हैं। दोनों अभियोगों में उन्हें अलग-अलग ६-६ माह की सजा दी गई थी, परन्तु दोनों की सजा साथ ही साथ चलेगी। जेल जाते समय जब जनता ने सन्देश का अनुरोध किया तब आपने कहा कि—“मैं क्या सन्देश दूँ? महात्मा जी का सन्देश आप सब के सामने है। जनता ने उसे शिरोधार्य कर हज़ारों की आहुति दी है। गवर्नमेन्ट का आलाचार बढ़ रहा है और हम अपने स्वतन्त्रता के युद्ध को और अधिक बढ़ा कर ही उसका उत्तर दे सकते हैं। इन थोड़े से ही महीनों में हमने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर ली है और स्वतन्त्रता हमारा दरवाजा खटखटा रही है। हमें केवल अधिक साहस और बल के साथ संघाम को तीव्र करने की देर है, जिससे स्वतन्त्रता हमें जल्दी से जल्दी अपनी छाती से लगा ले। हमारी बहिनों ने भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिला कर आन्दोलन में अपनी जो आहुतियाँ दी

हैं वह हरय केवल देवताओं के देने का है। मैं अपनी सुसज्जमान बहिनों से प्रार्थना करती हूँ कि वे जो अभी तक इस संघाम में पीछे रही हैं, अब आगे कदम बढ़ावें।”

जिस समय कुमारी सोमजी का सुकदमा अदालत में चल रहा था उस समय बहुत सी सुसज्जमान स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित थीं। उन्होंने कुमारी सोमजी के गले में फूलों की मालाएँ पहिना कर उनका स्वागत किया। कुमारी सोमजी की आयु इस समय १६ वर्ष से अधिक नहीं है। वे कॉलेज की विद्यार्थिनी थीं और वहाँ के सुप्रसिद्ध सॉलिसिटर सोमजी की सुपुत्री हैं। कॉङ्ग्रेस की डिक्टेटर होने के साथ ही वे वहाँ की नेशनल गर्ल्स ब्रिगेड की प्रेजिडेंट भी थीं। वे अपने स्थान पर बम्बई कॉरपोरेशन की सदस्य और वहाँ की सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती अश्वन्तिका बाई गोखले को बम्बई प्रान्तीय ‘युद्ध-समिति’ की प्रेजिडेंट नियुक्त कर गई थीं। २७ अक्टूबर की शाम को वे भी कॉरपोरेशन हाल के बाहर गिरफ्तार कर ली गईं।

कुमारी सोमजी के साथ ‘युद्ध-समिति’ के वाइस प्रेजिडेंट श्रीयुत सैयद नूर अली और ‘कॉङ्ग्रेस-बुलेटीन’ के सम्पादक श्रीयुत कासुम अली मुहम्मद अली भी गिरफ्तार किए गए थे। उन्हें क्रमशः १० माह और ७ माह की सजा सुनाई गई है।

कलकत्ते का विदेशी व्यापार नष्ट हो चला

कपड़ा, शराब और तम्बाकू के आयात में भारी कमी

कलकत्ते में सितम्बर मास में विदेशों से जो माल आया है, उसमें पिछले महीने की अपेक्षा करीब एक करोड़ से अधिक की कमी हो गई है। अगस्त में ४ करोड़ ४६ लाख रुपए का माल आया था, परन्तु सितम्बर में केवल ३ करोड़ ३६ लाख का आया।

परन्तु भारत के निर्यात व्यापार में पिछले मास से अच्छी उन्नति हुई है। चुङ्की के कलेक्टर ने एक विज्ञप्तिका ली है जिससे पता चलता है, कि निर्यात ७ करोड़ १ लाख से बढ़ कर ८ करोड़ ४४ लाख हो गया है।

अङ्कों से पता लगता है कि आयात में सबसे अधिक कमी कपड़े में हुई है। पिछले वर्ष ७ करोड़ गज कपड़ा आया था, परन्तु इस वर्ष उतने ही समय में केवल २ करोड़ १० लाख गज कपड़ा आया। रुपयों के हिसाब से पिछले साल यहाँ १ करोड़ ७१ लाख का कपड़ा आया, परन्तु इस वर्ष केवल ४२ लाख का।

इङ्गलैण्ड और जापान से इस वर्ष क्रमशः १ करोड़ २० लाख और ६० लाख गज कपड़ा आया। उन्हीं देशों से पिछले साल क्रमशः ५ करोड़ और १ करोड़ ८० लाख गज कपड़ा आया था।

पिछले साल ५१ लाख की ३२ हजार टन सफेद विदेशी शक्कर आई थी, परन्तु इस साल घट कर ३१ हजार टन रह गई, जिसका मूल्य ३५ लाख रुपया होता है। इसी प्रकार लोहे और स्टील का आयात भी ४२ लाख से घट कर २१ लाख रुपया रह गया है। विदेशी शराब पिछले वर्ष ८ लाख ५८ हजार रुपए की आई थी, परन्तु इस वर्ष केवल ४ लाख ३७ हजार की आई। तम्बाकू के आयात में कुछ कम घटी नहीं हुई। पिछले साल तम्बाकू का आयात ४ लाख ७४ हजार रुपए का था, परन्तु इस वर्ष केवल १ लाख १८ हजार का रह गया है।

पेलेस्टाइन में अङ्गरेजी माल का बाँवकॉट

पेरिस का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि फ्रान्स की जिआनिस्ट कमेटी के वाइस प्रेजिडेंट हिल्लेल राटो-पोस्की ने, एक मुलाकात में कहा है कि ब्रिटेन ने पेलेस्टाइन सम्बन्धी अपनी नीति का जो ऐलान किया है उससे वहाँ के लोगों में बहुत असन्तोष फैल गया है और वहाँ के लोग महात्मा गाँधी के शिष्यों के दङ्ग से ब्रिटिश बहिष्कार प्रारम्भ करेंगे। एम० राटोपोस्की ने ब्रिटेन की वास्तुकोर घोषणा की इस अवज्ञा की

तुलना जर्मनी की बेल्जियम सम्बन्धी अवज्ञा से की है। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि पेलेस्टाइन में यूयू लोगों का प्रवेश रोका जायगा, तो वे फ्रान्सीसी भण्डों के नीचे सीरिया में एक ‘होम’ की स्थापना करेंगे।

फ्रान्स चीफ़ रब्बी, बहुत से यूयू बैंकरो और दूसरे लोगों ने इसका घोर विरोध किया है और विरोध-सभाएँ हो रही हैं।

भगतसिंह कहाँ हैं ?

शेखपुरा का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि एक व्यक्ति रावलपिण्डी से आया है, जिसका कहना है कि सरदार भगतसिंह रावलपिण्डी लाए गए हैं। कहा जाता है कि जिस समय रात्रि को ११ बजे सरदार भगतसिंह स्टेशन पर पहुँचे थे उस समय स्टेशन के भारतीय अधिकारी एवं कार्यकर्ता हटा दिए गए थे।

कॉन्स्टेबिल पर बम

राजशाही का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि कल रात्रि को जोलिया पुलिस थाने के सामने एक कॉन्स्टेबिल पर बम फेंकने के अपराध में एक युवक गिरफ्तार कर लिया गया है।

थाने के सामने मनुष्यों की भीड़ लग गई और उसने युवक को छोड़ने के लिए कहा। इसके बाद खतरे की घण्टी बजाई गई और भगदा हो गया। इसमें एक आदमी को चोट आई। एक कॉन्स्टेबिल के साथ भी दुर्भ्य-वहार हुआ। वह युवक जमानत पर छोड़ दिया गया है।

प्रोफेसर का अनशन

तिब्बत-विद्यालय के प्रोफेसर बी० जी० कोठारी २५ ता० को अनशन करके साइन्स कॉलेज के दरवाजे पर बैठ गए। उनका कहना था कि लड़के पढ़ना छोड़ कर कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में भाग लें। उनके इस कार्य का क्या परिणाम हुआ, यह अभी मालूम नहीं हो सका है।

दुनिया का सब से बड़ा तैराक शफ़ी

हैदराबाद निवासी शफ़ी, जो कि लन्दन में दुनिया में सब से ज्यादा देर तैरने का प्रयत्न कर रहा था, अपने कार्य में सफल हो गया। वह ६६ घण्टों तक बराबर तैरता रहा। इसके पहिले माल्टा निवासी रिज्जो सब से ज्यादा देर तैरा था। पर वह केवल ६८ घण्टे ११ मिनट तक पानी में रह सका था।

पोस्ट ऑफ़िस में बम

रङ्गून का समाचार है कि वहाँ के व्यापारिक क्षेत्र के पाज़ूनडौज़ पोस्ट ऑफ़िस में २२ ता० को सवेरे १० बजे एक बम फट गया। बम फटने से पोस्ट ऑफ़िस का राजकरन निर्सी नामक चपरासी घायल हो गया और अस्वताल में पड़ा है। पोस्ट ऑफ़िस के एक बर्मी क्लर्क को भी, जो पास ही में खड़ा था, कुछ चोट आई है। बम का ज़हरीला धुआँ चारों ओर फैल गया था। बम एक पार्सल में बन्द था, जो बरबई से भेजा गया था।

गवर्नमेन्ट हाउस में अज्ञात

युवकों का प्रवेश

लाहौर का २४वीं अक्टूबर का समाचार है कि पिछली रात्रि को ११ बजे दो युवक अज्ञात रूप से गवर्नमेन्ट हाउस में घुसे। दिन-रात कड़ा पहरा रहने पर भी कोई उन्हें प्रवेश करते न देख सका। जब चौकरो ने उन्हें देखा तो वे रफ़ूचकर हो गए। उनका अभी तक कोई पता नहीं लगा। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वे वहाँ गुप्त रीति से किसी षड्यन्त्र के लिए ही घुसे थे।

पोस्ट ऑफ़िस में बम फटा

हैदराबाद (सिन्ध) का २३ वीं अक्टूबर का समाचार है कि स्थानीय पोस्ट ऑफ़िस में दो लिफ़ाफ़ों में दो बम मिलने के कारण वहाँ बड़ी सनसनी फैली है। उनमें से एक लिफ़ाफ़ा पोस्ट मास्टर के नाम था और दूसरा हैदराबाद के सिटी मैजिस्ट्रेट के नाम। जिस समय एक लिफ़ाफ़ा पर मुहर लगाई जा रही थी, एक बम फट गया। सी० आई० डी० विभाग मामले की जाँच कर रहा है।

शहर और जिला

—दारागंज की श्रीमती किशोरी देवी ने अदालत में कहा था कि वे अपने मुकदमे में श्रीमती श्यामकुमारी नेहरू को बुलाना चाहती हैं। २५ अक्टूबर को श्रीमती श्यामकुमारी उनके मुकदमे के लिए मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित हुईं। मैजिस्ट्रेट ने पूछा कि “अब आपका एडवोकेट उपस्थित है, क्या आप सफाई के गवाह पेश करेंगी?” किशोरी देवी ने कहा कि मैं सफाई नहीं देना चाहती, मैंने वे पर्चे, जिनके लिए यह मुकदमा चलाया गया है, पुलिस कॉन्स्टेबल को दिए थे और जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, बराबर पुलिस वालों से इस काम के लिए कहती रहूँगी। २७ ता० को मैजिस्ट्रेट ने उनको २ महीने की सख्त कैद और ३० रु० जुर्माने की सजा दी। जुर्माना न देने पर १ महीने की कैद और होगी।

कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी गिरफ्तार

कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी पण्डित गोविन्द मालवीय २४ वीं अक्टूबर को २ बजे, जब कि वे पण्डित जवाहरलाल नेहरू का मुकदमा सुन कर जेल से बाहर निकल रहे थे, जेल के फाटक पर ही गिरफ्तार कर लिए गए। उन पर ८ अक्टूबर के भाषण पर, जो उन्होंने इलाहाबाद में एक आम सभा में दिया था, राजविद्रोह का अभियोग चलाया गया है।

जिस समय पण्डित जवाहरलाल का मुकदमा हो रहा था, पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट मि० मेज़र्स उनके नाम का वारंट लिए थे और मुकदमे के बाद जैसे ही वे बाहर निकले, उन्होंने सैयद इकरामहुसेन को उन्हें गिरफ्तार करने के लिए बाहर भेजा। वे पण्डित गोविन्द मालवीय के साथ बाहर आए और उन्हें वारंट दिखा कर फिर अन्दर ले गए। बाहर खड़ी हुई जनता को, जो पण्डित जवाहरलाल का मुकदमा सुनने आई थी, जब उनकी गिरफ्तारी का हाल मालूम हुआ, तब उसने राष्ट्रीय नारे लगाने प्रारम्भ किए।

जब उनके भाई पण्डित चन्द्रकान्त मालवीय उनसे मिलने अन्दर आए, तब प० गोविन्द मालवीय उन्हें कुछ कागज़ सुपुर्द करने एकान्त में ले गए। जैसे ही उन्होंने कागज़ देने के लिए पॉकेट से निकाले, सैयद इकरामहुसेन वहाँ आ पहुँचे और वे कागज़ उन्होंने ले लिए। पण्डित मालवीय का कहना है कि उनमें से कुछ कागज़ पुलिस के काम के निकल आएँ, परन्तु बाकी उनके निजी कागज़ात थे। जब उन्होंने कागज़ वापस माँगे तो उत्तर मिला कि वे उनके मुकदमे के बाद मिलेंगे।

—प० गोविन्द मालवीय की गिरफ्तारी के कारण २५ ता० को इलाहाबाद में हड़ताल मनाई गई। कितने ही दुकानदारों ने अपनी दुकान शाम के चार बजे के पश्चात खोल लीं। क्योंकि मालूम हुआ कि कॉङ्ग्रेस कमिटी ने ऐसा ही निश्चय किया है, जिससे दुकानदारों का हड़ताल से ज्यादा नुकसान न हो। शाम को मोती-पार्क में एक सभा हुई, जिसमें प० गोविन्द मालवीय को बधाई दी गई। मालूम हुआ है उनको नैनी जेल में उनके पिता प० मदनमोहन मालवीय के साथ रखा गया है।

—२५ ता० को दोपहर के समय ईविज़ क्रिश्चियन कॉलेज के विद्यार्थियों की एक सभा हुई, जिसमें प० गोविन्दकान्त मालवीय को उनकी गिरफ्तारी पर बधाई दी गई और सरकार के इस कार्य की तीव्र निन्दा की गई।

—कॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की सरकारी सहायता बन्द हो जाने से उसकी सहायता के लिए चन्दा एकत्रित करने की बड़ी कोशिश की जा रही है। अभी कुमारी श्यामकुमारी नेहरू, जो उसकी मैनेजिङ्ग कमेटी की सदस्या हैं, इस कार्य के लिए सिन्ध तक गई थीं। हैदराबाद में दो-एक दिन के भीतर उनको ५,१००) चन्दा प्राप्त हुआ। लोगों इस सम्बन्ध में बड़ा उत्साह प्रदर्शित कर रहे हैं।

—इलाहाबाद में दिवाली में जुआ के सम्बन्ध में केवल दो दिन में १२६ गिरफ्तारियाँ हुईं। मालूम हुआ है कि गिरफ्तार मनुष्यों में ४१ मुसलमान, ५३ भङ्गी, २ पासी, ५ कुरमी और २५ ब्राह्मण और ठाकुर हैं। वर्तमान राजनीतिक उथल-पुथल के, और विशेष कर पण्डित जवाहरलाल नेहरू की गिरफ्तारी के कारण, इस साल दिवाली का कोई उत्सव उत्साहपूर्वक नहीं मनाया गया।

—संयुक्त प्रान्त की पोस्टल और रेलवे मेल सर्विस एसोसिएशन का नवम्बर वार्षिकोत्सव इलाहाबाद में २६ ता० को हो गया। उसके प्रेजिडेंट श्री० सी० एस० रङ्गास्वय्यर एम० एल० ए० थे और स्वागत-समिति के प्रधान थे प० निरञ्जनलाल भार्गव।

—हथिड्या (इलाहाबाद) के सब डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट प्रान साहिब मुन्शी रहमान बख्श ज़ादिली ने २८वीं अक्टूबर को ऑर्डिनेंस नं० ६ के अनुसार गिरजानन्द ब्राह्मण को छै माह की सख्त कैद की सजा दी है। अभियुक्त ने यह मन्ज़ूर किया कि उसने सैदाबाद के बाज़ार में लोगों को ज़मींदारों को लगान न देने के लिए भड़काया है। इन्हीं मैजिस्ट्रेट ने सैदाबाद के उदितनारायण ब्राह्मण को भी ऑर्डिनेंस ५ की दफ़ा ४ के अनुसार ६ माह की सख्त कैद और २५ रुपया जुर्माने की सजा दी है। जुर्माना न देने पर छे माह की सजा उन्हें और भोगनी पड़ेगी।

—१९ अक्टूबर को आगरा-प्रान्त की ज़मींदार एसोसिएशन की मैनेजिङ्ग कमेटी की मीटिंग मेस्टन मेन्शन, इलाहाबाद में हुई। अन्य कार्य होने के बाद एक प्रस्ताव पास किया गया कि—“हम लोग विश्व करते हैं कि सरकार का ध्यान गिरे हुए नाज़ के भाव पर आकर्षित किया जावे। सरकार को चाहिए कि नाज़ बिकने के मार्ग ढूँढ़ निकाले, जिससे इस भयानक दशा का अन्त हो। सरकार को यह भी विचार करना अत्यावश्यक है कि विदेशी नाज़ ख़ास कर गेहूँ आना बन्द कर दिया जावे जिससे भाव और न गिरे।”

फिर कमेटी कॉङ्ग्रेस के आरम्भ किए हुए लगान-बन्दी के आन्दोलन को रोकने का विचार बहुत देर तक करती रही। कुछ बहस के बाद यह तय हुआ कि लाला बिहारीलाल की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई जावे, जो कि हर बग़ह इस आन्दोलन के विरुद्ध काम करे और ज़मींदार व रिआया की भलाई के उपाय सोचे।

—इलाहाबाद जेल से २७ ता० को ‘बी’ क्लास के तीन कैदी, विशम्भरनाथ गुप्त, के० एफ़० गाँधी और अमरनाथ कपूर फ़ैजाबाद जेल भेज दिए गए हैं। वे सवेरे की गाड़ी से गए थे। प्रयाग स्टेशन पर उनका स्वागत किया गया।

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेंस के प्रतिनिधियों का अपमान

लन्दन का २६वीं अक्टूबर का समाचार है कि गोलमेज़ के प्रतिनिधियों का वहाँ पिछले शनिवार को ही स्वागत हुआ था, परन्तु केवल एक सप्ताह के बाद ही एक घटना के कारण उनका उत्साह बहुत-कुछ ठण्डा पड़ गया है। प्रतिनिधियों में से बहुत से हवाई फ़ौज के खेलों में निमन्त्रित किए गए थे। उसमें इम्पीरियल कॉन्फ़्रेंस के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। भारतीयों ने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और क्रायडन के लिए रवाना हो गए। परन्तु जब वे ऐरोड्रोम में पहुँचे तब उन्हें एक कोने में खड़ा कर दिया गया और उन्हें दो घण्टे तक वहाँ सड़ हवा में बिलकुल खुले मैदान में खड़ा रहना पड़ा। उनके बैठने के लिए भी कोई प्रबन्ध न था। इसके साथ ही इम्पीरियल कॉन्फ़्रेंस के प्रतिनिधियों का, जो वहाँ निमन्त्रित किए गए थे और जिनके साथ प्रधान मन्त्री स्वयं उपस्थित थे; पदाधिकारियों की ओर से विशेष स्वागत किया गया था।

भारतीय प्रतिनिधि इस व्यावहारिक भेद-भाव के कारण बहुत असन्तुष्ट हो गए और विरोध-स्वरूप खेल प्रारम्भ होने के पहिले ही वहाँ से सब के सब वापस चले आए। ‘फ्री प्रेस’ को पता चला है कि बाद में उसी दिन सर फ़िण्डलेटर स्टीवर्ट और भारतमन्त्री मि० बेज़वुड वेन के प्राइवेट-सेक्रेटरी मि० मायटीथ प्रतिनिधियों से चेस्टरफील्ड बाग में मिले और भारतमन्त्री की ओर से उनसे माफ़ी माँगी।

—श्रीमती कमलेश्वरी सप्रू का, जो कि हिन्दी की सुलेखिका थीं और बहुत दिनों तक कानपुर से निकलने वाले “स्त्री-दर्पण” पत्र की सहायिका सम्पादिका रही थीं, गत १३ नवम्बर को फ़ीरोज़पुर में स्वर्गवास हो गया। ‘चाँद’ में भी उनके लेख छपते थे और पाठकों ने उनकी प्रशंसा की थी। हम इस शोक के अवसर पर उनके कुटुम्बियों के प्रति अपनी हार्दिक सहायभूति प्रकट करते हैं।

—दीवान बहादुर सर दी० विजयराववाचार्य अन्त-राष्ट्रीय कृषि संस्था के वाइस प्रेजिडेंट चुने गए हैं। समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में ये ही एक व्यक्ति हैं, जो इस संस्था के पदाधिकारी हैं।

—अहमदाबाद का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि महात्मा गाँधी के सेक्रेटरी श्रीयुत महादेव देसाई आज सवेरे साबरमती जेल से सज़ा की मियाद पूरी होने पर, मुक्त कर दिए गए। वे गाँधी जी के आश्रम में ठहरे हुए हैं। आप कॉङ्ग्रेस के नए सेक्रेटरी बनाए गए हैं।

—नागपुर का २८वीं अक्टूबर का समाचार है कि गोंदिया में ५-६ को छोड़ कर विदेशी कपड़े के सब व्यापारियों ने विदेशी कपड़े पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवा ली है।

—देहरादून नगर काङ्ग्रेस कमिटी और नवजवान भारत-सभा के प्रेजिडेंट स्वामी विचारानन्द फ़ैजाबाद जेल से छोड़ दिए गए।

—पूना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सर इब्राहीम रहमतुल्ला स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण राउण्ड-टेबल कॉन्फ़्रेंस में न जायेंगे।

—इलाहाबाद में २८वीं अक्टूबर को चौक में एिकेडिज़ के अभियोग में ९ बजे सवेरे अभिलोचन्द्र चक्रवर्ती की गिरफ्तारी हुई है।

*

*

*

“गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बगावत करना भारतीयों का धर्म हो गया है”

अदालत में राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की गर्जना

इलाहाबाद २४ अक्टूबर

परिणत जवाहरलाल नेहरू ने जेल से मुक्त होने पर १२ अक्टूबर को पुरुषोत्तमदास पार्क में जो भाषण दिया था, उसके सम्बन्ध में उन पर तीन अभियोग लगाए गए थे। पहला दफ्ता १२४-ए में राजविद्रोह फैलाने का, दूसरा नमक-एक्ट के अनुसार ८००० मनुष्यों को भड़काने का और तीसरा ‘अनलॉकल इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स’ की दफ्ता ३ के अनुसार ८००० मनुष्यों को गवर्नमेण्ट का टैक्स अदा न करने के लिए बहकाने का।

मुकदमा नैनी सेन्ट्रल जेल के अन्दर हुआ था। बहुत बड़ी भीड़ मुकदमे के समय जेल के फाटक पर खड़ी थी और समय-समय पर राष्ट्रीय नारे लगाती जाती थी। मामले के समय परिणत मोतीलाल, उनके कुटुम्बी, श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन, कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी श्री० गोविन्द मालवीय और शहर के बहुत से गण-मान्य सज्जन और देवियाँ उपस्थित थीं।

परिणत जवाहरलाल नेहरू ने अदालत में जो अपना लिखित बयान पढ़ा था, उसका सार नीचे दिया जाता है :—

“मैं पाँचवीं बार गिरफ्तार किया गया हूँ और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के पदाधिकारियों ने मुझ पर बहुत से अभियोग लगाए हैं। और मुझे इसमें बिलकुल सन्देह नहीं है कि पाँचवीं बार भी मुझे सजा दी जायगी। मैंने अभी तक इस मुकदमे में कोई भाग नहीं लिया और न भाग लेने की मेरी कोई इच्छा है, परन्तु मैं इस विजसि द्वारा अपने विचार, केवल इसलिए प्रकट करना चाहता हूँ कि जिससे उन लोगों को, जो आज मेरा मुकदमा कर रहे हैं, और मेरे उन देश-भाइयों को, जिन्होंने मुझे हृद से अधिक सम्मान दिया है, यह मालूम हो जावे कि मेरे दिल में क्या है।

“मेरे ऊपर राजविद्रोह और ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट के प्रति घृणा फैलाने का अभियोग लगाया गया है। साढ़े आठ साल पहिले भी मेरे ऊपर यही अभियोग लगाया गया था और उस समय मैंने कहा था कि भारत की मौजूदा गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बगावत फैलाना भारतीयों का धर्म हो गया है।” लाहौर के पूर्ण-स्वतन्त्रता वाले प्रस्ताव का

उल्लेख करते हुए और उसका गूढ़ अर्थ समझाने के बाद आपने कहा :—

“मेरे कुछ बहके हुए और पथ-भ्रष्ट भाइयों ने देश की इस आवश्यकता के समय उसके साथ विश्वासवात किया है और उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य से सन्धि करने की सूझी है। परन्तु देश ने अपने सर्व-श्रेष्ठ नेता के प्रथम प्रदर्शन और नेतृत्व में एक दूसरा ही पथ निर्दिष्ट कर लिया है और वह उस समय तक पथ-भ्रष्ट न होगा, जब तक सफलता प्राप्त न कर लेगा। स्वतन्त्रता की वेदी पर अभी तक हमारे देश भाइयों ने जो कष्ट भोगे हैं और जो आहुतियाँ चढ़ाई हैं; हमारी देवियों ने जो आश्चर्यजनक साहस दिखाया है; और बहादुर किसानों ने जिस अपरिमित शक्ति और पराक्रम का परिचय दिया है, सारे संसार ने उसे अपनी आँखों से देख लिया है।

“हमारे नेता ने सिद्धान्त के जिस अटल विश्वास के साथ उन्हें उत्तेजित किया है, उससे उन्होंने सहर्ष अपने धन-वैभव और सांसारिक सुख-भाग को लाल झार दी है और भारत के वृहत-इतिहास में एक उज्ज्वल और रोमान्चकारी अध्याय लिख दिया है।

“अङ्गरेज लोगों से हमारा कोई झगड़ा नहीं है और न अङ्गरेज श्रमजीवियों से ही। हमारी तरफ वे भी साम्राज्यवाद के शिकार रह चुके हैं और हम साम्राज्यवाद के विरुद्ध ही लड़ रहे हैं। उसके साथ हमारा समझौता नहीं हो सकता।

“मेरी अज्ञा केवल भारतीय लोगों पर है, किसी विदेशी गवर्नमेण्ट पर नहीं। मैं केवल भारतीयों का सेवक हूँ, किसी दूसरे मालिक को नहीं मानता।

“मेरे पास भारतीय लोगों के विश्वास और प्रेम के लिए कृतज्ञता दिखाने को शब्द नहीं हैं। इस संग्राम में थोड़ा सा हाथ बटाने में मुझे जो सुख मिला है वह जीवन भर में मुझे कभी नहीं मिला। मेरी यही सविच्छा है कि मेरे देश के स्त्री और पुरुष अविराम रूप से इस संग्राम को उस समय तक जारी रखेंगे, जब तक हम अपने स्वप्न के भारत को प्राप्त न कर लें। स्वाधीन-भारत चिरजीव हो।”

इसके बाद उन पर चार्ज लगाया गया। उन्होंने कार्यवाही में हाथ बँटाने से साफ़ इन्कार कर दिया।

पहुँचा सकता। इस प्रकार एक बीघे जमीन की उपज १०० बण्डलों को भेजने में २५ मजदूरों की आवश्यकता पड़ती है और १४ आने रोज़ की मजदूरी के हिसाब से केवल उसकी दुबई का खर्च २१ रु० १२ आना पड़ जाता है।

जब धान थाने में जाता है तो उसका भूसा निकालने की आवश्यकता पड़ती है। इस क्रिया में एक दिन में ५ मजदूर लगते हैं, जिनकी मजदूरी ४ रु० ६ आना हो जाती है। धान की रक्षा के लिए पुलिस के १० सिपाही पहरा देते हैं, जिनका प्रतिदिन का खर्च १२ रु० ८ आना पड़ जाता है। मि० जहाँगीर या मि० बालू देसाई (जो इस कार्य के लिए अक्सर नियुक्त हुए हैं) का अलाउन्स ४ रु० प्रति दिन होता है। इसमें उच्च पदाधिकारियों का वेतन सम्मिलित नहीं है। इस प्रकार एक बीघे पर कुल खर्च निम्न रीति से होता है :—

	रु०	आ०	पा०
खेतों से दुबई ...	...	२१	१४ ०
सफ़ाई ...	...	४	६ ०
पहरेदारी ...	...	१२	८ ०
अफसरों का अलाउन्स ...	...	४	० ०
कुल	४२	१२	०

गवर्नमेण्ट ने गाँवों में डुगी पिटवा कर प्रति हर का या ७ मन का रेट ४ रुपया नियत किया है। इस प्रकार एक बीघे भूमि की उपज के २८ मन चावल का मूल्य उसे १६ रुपया मिलेगा और वह भी उस समय जब सब चावल बिक जावे। जब तक उसकी पूरी बिक्री न हो जायगी तब तक उस पर पुलिस की रखवाली का खर्च बढ़ता जायगा। इस प्रकार १ बीघे पर गवर्नमेण्ट का कुल खर्च ४२ रु० १२ आ० होता है। उसका कुल मूल्य उसे १६ रुपया मिलता है, और २६ रु० १२ आ० की घटी उठानी पड़ती है !!

पता नहीं, गवर्नमेण्ट को उस चावल की बिक्री के लिए ग्राहकों की कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

* * *

कराची बन्दर के आयात में कमी

कराची के चुन्नी-कलक्टर ने सितम्बर १९३० की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है, उससे उस माह के आयात की कमी का स्पष्ट रूप से पता लगता है। सितम्बर का कराची का कुल आयात १ करोड़ ३२ लाख का हुआ है और पिछले साल के सितम्बर की अपेक्षा उसमें १ करोड़ १ लाख की घटी रही है। इसी प्रकार भारतीय माल का सितम्बर का निर्यात भी १ करोड़ ६ लाख का रहा है और सितम्बर सन् १९२९ की अपेक्षा उसमें २४ लाख की घटी रही है। १९३० में सितम्बर मास तक विभिन्न प्रकार के आयात में ३ करोड़ ६० लाख रुपया या २८ प्रतिशत की कमी रही और निर्यात में ३ करोड़ ३१ लाख या २० प्रतिशत की।

कपड़े के आयात में सब से भारी कमी फ़्रान्स और इंग्लैण्ड के ऊनी कपड़े और इटली के कपड़ों में रही। जावा से इस बीच में २००० टन शक्कर कम आई, जिसका मूल्य ७ लाख रुपया होता है। सितम्बर सन् १९३० तक शक्कर का आयात केवल ८६,२०० टन रहा है। यही आयात सन् १९२९ में सितम्बर तक १,०६,६०० टन था।

* * *

गवर्नमेण्ट की नीति का दिवाला

बारदौली के खेतों की कुकी में भयङ्कर घाटा

‘बॉम्बे क्रॉनिकल’ के एक सम्वाददाता ने अपने पत्र में लिखा है कि :—

बारदौली के किसान ५० लाख की फ़सल छोड़ कर चले गए। इस समय अक्सर लोग चावल की फ़सल कुक करने में व्यस्त हैं और इस अवसर पर गवर्नमेण्ट के दृष्टिकोण से उसके लाभ-हानि का विचार आवश्यक प्रतीत होता है।

एक बीघा जमीन पर दो गाड़ी धान उत्पन्न होता है, जिसमें ४ हर या २८ मन चावल निकलता है। धान कटा हुआ खेतों में पड़ा है और सबसे पास के थाने में, जो वहाँ से लगभग दो मील दूर है, लाया जा रहा है। दो गाड़ियों में १०० बण्डल रहते हैं, जो एक बीघे की उपज है। एक मजदूर यदि दिन भर में चार फेरियाँ भी करे तो वह चार बण्डलों से अधिक थाने तक नहीं

सत्याग्रह आन्दोलन में बम्बई की आहुति

२,७०० जेल गए और ३,००० ज़ख्मी हुए

बम्बई के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता ने वहाँ के छः माह के कार्यों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के, जो गैरकानूनी करार दे दी गई है, २ लाख सदस्य हो गए हैं। उसके ७,५०० वालखण्डियर हैं, जिनकी सैनिक शिक्षा का प्रबन्ध वह कमिटी करती है। हर एक जाति और धर्म के व्यापारियों ने कॉङ्ग्रेस को रुपया और माल से बहुत सहायता पहुँचाई है।

बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'राजनीतिक कमिश्नर' ने आन्दोलन के प्रारम्भ अर्थात् ६ अप्रैल से उसकी प्रगति का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

अधिकांश में बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस के कार्यों के परिणाम-स्वरूप ब्रिटिश व्यापार को सत्याग्रह-संग्राम के प्रारम्भ से जुलाई तक १ करोड़ ११ लाख पौण्ड की हानि उठानी पड़ी। ५ करोड़ ६० का कपड़ा व्यापारियों के स्टॉक में बन्द पड़ा है। शहर की आबकारी की आमदनी में ३ लाख की कमी हो गई है; पिछले चुनाव के समय वोटों में से केवल २॥ प्रतिशत वोट देने अन्दर जा पाए। २,७०० व्यक्तियों को जेल की सज़ा हुई और ३००० लाठियों के प्रहार से ज़ख्मी हुए। केवल विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिंग करने के कारण १६०० व्यक्ति जेल गए।

बम्बई में आन्दोलन का विकास

वायसराय का नौवाँ ऑर्डिनेन्स, जिसका प्रधान उद्देश्य कॉङ्ग्रेस आन्दोलन की मौत का डङ्गा बजाना था, बड़ी क़ूता और निर्दयता से उपयोग में लाया जा रहा है। परन्तु क्या इससे बम्बई में कॉङ्ग्रेस दबाई जा सकती है? जिन लोगों ने पिछले छः महीनों में बम्बई की राजनीतिक उथल-पुथल का अध्ययन किया है वे इस प्रश्न का उत्तर स्वयं दे लेंगे। छः माह की इस अल्प अवधि में ही कॉङ्ग्रेस आन्दोलन की प्रगति भयङ्कर वेग से बढ़ी है और २० हजार आदमियों की एक छोटी सी संस्था दो लाख खी-पुरुषों के एक विराट सङ्गठन में परिवर्तित हो गई है। गवर्नमेण्ट के ज़ोर-जुल्म के हर एक प्रहार के साथ उसके सदस्यों की संख्या बढ़ती गई और जिस दिन वह गैर-कानूनी करार दी गई थी, उस दिन बम्बई शहर का षष्ठमांश जन-समूह अपनी छाया उस पर फैलाए हुए था।

यद्यपि अस्थायी रूप से वालखण्डियरों का सङ्गठन असङ्गठित कर दिया गया है, और पुलिस ने कॉङ्ग्रेस-हाउस पर अपना आधिपत्य जमा लिया है, परन्तु उसकी विशाल इमारत की दीवारों पर उसकी अतुल शक्ति, अपूर्व प्रसिद्धि और विशाल कीर्ति के उत्थान की करुण और रोमान्चकारी कहानी लिखी हुई है।

जिस समय महात्मा गाँधी ने मार्च मास में ढरही की अपनी चिरस्मरणीय यात्रा की थी और वहाँ पहुँच कर सत्याग्रह आन्दोलन का श्रीगणेश किया था, उस समय बड़े से बड़े कॉङ्ग्रेसवादी को भी उसकी सफलता में सन्देह था, और उस आन्दोलन में भाग लेने की बम्बई से तो किसी को कोई आशा न थी। बम्बई वालों को स्वयं महात्मा गाँधी 'अत्यधिक भोग-विवासी' कहा करते थे। परन्तु उन्हें इस बात का स्वप्न में भी भ्रमाल न था कि उसी के गर्भ में आन्दोलन की आश्चर्यजनक सफलता छिपी हुई है।

बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ने अपने कार्यों का श्रीगणेश ६ अप्रैल को नमक-कानून भङ्ग करके किया था। उसी दिन सन्ध्या को चौपाटी में एक विराट सभा में कानून भङ्ग किया गया और उस समय के विराट जन-समूह के उत्साह से यह प्रतीत हो गया था कि वे कॉङ्ग्रेस के साथ हैं।

गवर्नमेण्ट ने यह समझ कर, कि यह नवजात शिशु पोषण न मिलने से अपनी मौत मर जायगा, विरक्तता का रूप धारण कर लिया। यहाँ उस नवजात आन्दोलन ने जनता के उत्साह और उसकी सहानुभूति से परलवित होकर उग्ररूप धारण कर लिया और कॉङ्ग्रेस भीषण वेग से सत्याग्रह और सङ्गठित कार्यक्रम में संलग्न हो गई। इसके अनन्तर लाठियों, बन्दूकों और तोपों से सुसज्जित गवर्नमेण्ट की पुलिस और फ़ौज और कॉङ्ग्रेस की निहत्थी, अहिंसात्मक और सत्याग्रही फ़ौज में संग्राम प्रारम्भ हो गया।

वालखण्डियरों का अपूर्व सङ्गठन

बम्बई में कॉङ्ग्रेस के कार्यक्रम की इस आश्चर्यजनक सफलता का कारण वहाँ के वालखण्डियरों का अपूर्व सङ्गठन है। जिस समय कॉङ्ग्रेस ने अपना कार्य

बधाई

श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' बी० ए०, काशी से लिखते हैं :—

'भविष्य' की पहिली संख्या नहीं मिल सकी, शेष मिल रही है। बहुत अच्छा निकल रहा है, बधाई! भगवान आपकी परीक्षा ले रहे हैं। आपका 'भविष्य' उज्ज्वल है।

प्रारम्भ किया था, उस समय कॉङ्ग्रेस के वालखण्डियरों की संख्या १०० से अधिक न थी और वह भी असङ्गठित थे। परन्तु कुछ ही महीनों में कॉङ्ग्रेस की इस फ़ौज में ७५०० वालखण्डियर भर्ती हो गए। कॉङ्ग्रेस की यह सफलता, विशेषतः ऐसी परिस्थिति में, जब कि वालखण्डियर को अधिक से अधिक उत्तेजना के समय भी अहिंसात्मक रहने और देश-सेवा के समय आहत हो जाने या मृत्यु तक हो जाने पर कॉङ्ग्रेस से उसके उपलब्ध में कुछ न लेने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी, कुछ कम न थी।

बम्बई के वालखण्डियरों का सङ्गठन चार प्रकार का था :—

(१) कॉङ्ग्रेस सत्याग्रही वालखण्डियर, जिनका प्रधान कार्य नमक की फ़ेक्टरियों पर धावा करना, पिकेटिंग करना और अवसर आने पर लाठियों के प्रहार सहना था।

(२) हिन्दुस्तानी सेवा-दल, जो कॉङ्ग्रेस के सङ्गठित कार्यक्रम का प्रचार करता था और जिसके सदस्य शित्तिल श्रेणी के होते थे। इस दल की लड़कियों ने पिकेटिंग में बहुत अधिक सहायता पहुँचाई।

(३) राष्ट्रीय सेना (National Militia) जिसमें केवल विद्यार्थी सम्मिलित थे।

(४) देश-सेविका-सङ्घ, जो स्त्रियों की जागृति का परिणाम था। इसमें सुशिक्षित युवती स्त्रियाँ भरती होती

थीं। उनकी मुख्य पोशाक नारङ्गी रङ्ग की भगवा साड़ी थी। इस सङ्घ की लगन, अभूतपूर्व जागृति और त्याग का पता तो कौन्सिल के चुनाव के समय लगा था, जब एक के बाद दूसरा दल गिरफ़्तारी के लिए आगे आता जाता था और केवल एक दिन में ३८२ स्त्रियाँ गिरफ़्तार हो गई थीं। सङ्घ की प्रायः उतनी ही स्वयंसेविकाएँ अपनी आहुति के लिए और तैयार बैठी थीं।

जनता की सहानुभूति

कॉङ्ग्रेस के ७,५०० वालखण्डियरों में से प्रतिदिन प्रायः १००० वालखण्डियर कार्य करते थे और उनके भोजन और कपड़े का सारा बोझ कॉङ्ग्रेस पर था। परन्तु इस खर्च के लिए कॉङ्ग्रेस के खज़ान्ची को शायद ही कभी कॉङ्ग्रेस की थैली में हाथ लगाने की आवश्यकता पड़ी हो। बहुत से कपड़े के व्यापारी वालखण्डियरों की वर्दियों सदैव मुफ़्त देते रहने के लिए तैयार हो गए। ग़ल्ले के व्यापारियों ने कॉङ्ग्रेस से प्रतिदिन के आवश्यक भोजन के लिए अनाज स्वीकार करने की प्रार्थना की। इसी प्रकार दूध, घी, फल-फूल और तरकारियों की आवश्यकता भी पूरी होती गई। प्रतिदिन सवेरे नाइयों की एक पूरी फ़ौज 'स्वतन्त्रता के योद्धाओं' की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करने कॉङ्ग्रेस-हाउस के समुल्ल उपस्थित रहती थी।

कॉङ्ग्रेस के पास कुल ६२,००० रुपया था, जिसमें हाथ नहीं लगाया गया। खर्च का औसत प्रायः ७०० रुपया रोज़ था, जो सामान और नक़दी के रूप में जनता और व्यापारियों से निःशुल्क-प्रति प्राप्त होता जाता था। कॉङ्ग्रेस की सेवा में मोटरों और लॉरियों का एक झुण्ड रहता था।

लाठियों का प्रहार

नमक-कानून भङ्ग होने और गैर-कानूनी नमक बनाने के साथ ही लाठियों के प्रहार प्रारम्भ हो गए। इनके सिवाय सभाओं, साधारण जुलूसों और शोलापुर-दिवस, गढ़वाल-दिवस और तिलक-जयन्ती आदि में भी प्रहार कम नहीं हुए। २१ जुलाई तक कॉङ्ग्रेस-अस्पताल में आए हुए आहतों की संख्या २,३३४ थी, जिसमें से ४८ प्रति सैकड़ा वालखण्डियर और बाक़ी जनता के लोग थे। इन आहतों में ४८ स्त्रियाँ भी हैं। उनमें सब से छोटी उमर का एक १० वर्ष का लड़का है, जिसके सिर पर लाठी का प्रहार किया गया था, और सब से अधिक उमर का एक वृद्ध था। कुछ लोग घोंड़े के नीचे दब कर भी आहत हुए थे।

३००० घायल

२१ जुलाई के पश्चात् बहुत से लाठी-प्रहार हुए, परन्तु उनमें सब से भयानक प्रहार कौन्सिल के चुनाव के समय टाउन हॉल पर हुआ था। उसमें लगभग २५० घायल हुए थे और अब संख्या प्रायः ३,००० पर पहुँच गई होगी।

वडावा में नमक-विपो पर धावा करते समय बहुत से घायल हुए। वहाँ पहले १०६ वालखण्डियरों का एक दल भेजा गया था और उसके बाद जनता ने उस पर दो बार धावा किया। इन धावों के समय लगभग ६०० व्यक्ति गिरफ़्तार हुए थे, जिनमें ३ से लेकर ६ माह तक की सख्त कैद की सज़ा दी गई थी।

कॉङ्ग्रेस की शक्ति अभी तक दो कार्यों में विभाजित रही है—(१) गवर्नमेण्ट के ऑर्डरों का विरोध करना और सत्याग्रह करना और (२) विदेशी कपड़े के बहिष्कार, ब्रिटिश माल के बॉयकॉट और शराब बन्द करने का सङ्गठित कार्य करना।

*

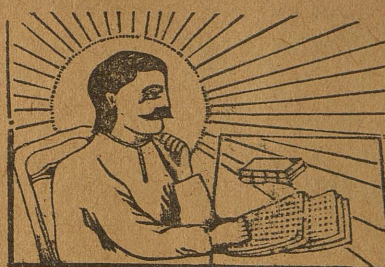
*

*

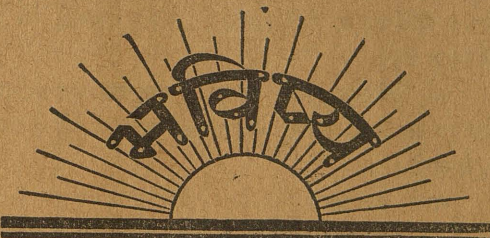
भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।
२. किसी खास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।
३. लेखादि कासाज के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।
४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।
५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्बन्ध-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छपा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।
६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।
७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।
८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वगैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!
९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।
१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर



सम्पादकीय विचार



३० अक्टूबर, सन् १९३०

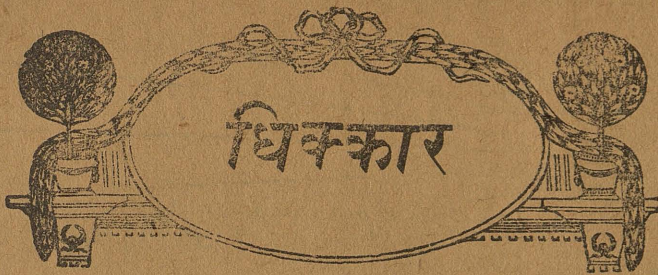
काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-

ज़ार देख कर !

मतलब निकाल लीजिए

अखबार देख कर !!



[श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

ईरान और यूनान में घोर संग्राम हो रहा था। ईरानी दिन-दिन बढ़ते जाते थे और यूनान के लिए सङ्कट का सामना था। देश के सारे व्यवसाय बन्द हो गए थे, हल की मुठिया पर हाथ रखने वाले किसान तलवार की मुठिया पकड़ने के लिए मजबूर हो गए थे, ढण्डी तोलने वाले भाले तौलते थे। सारा देश आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया था। फिर भी शत्रु के क्रदम दिन-दिन आगे ही बढ़ते आते थे। जिस ईरान को यूनान कई बार कुचल चुका था, वही ईरान आज क्रोध के आवेग की भाँति सिर पर चढ़ा आता था। मर्द तो रणक्षेत्र में सिर कटा रहे थे और स्त्रियाँ दिन-दिन की निराशाजनक खबरें सुन कर सूखी जाती थीं। क्योंकि लाज की रक्षा होगी? प्राण का भय न था, सम्पत्ति का भय न था, भय था मर्यादा का। विजेता गर्व से मतवाले हो-होकर यूनानी ललनाओं की ओर घुरेंगे, उनके कोमल अङ्गों को स्पर्श करेंगे, उनको क्रुद्ध कर ले जाएँगे! उस विपत्ति की कल्पना ही से इन लोगों के रोएँ खड़े हो जाते थे।

आखिर जब हालत बहुत नाज़क हो गई तो कितने ही स्त्री-पुरुष मिल कर डेलफी के मन्दिर में गए और प्रश्न किया—देवी, हमारे ऊपर देवतों की यह वक्र दृष्टि क्यों है? हमसे ऐसा कौनसा अपराध हुआ है? क्या हमने नियमों का पालन नहीं किया, कुरवानियाँ नहीं कीं, व्रत नहीं रखे? फिर देवतों ने क्यों हमारे सिरों से अपनी रक्षा का हाथ ऊपर उठा लिया है?

पुजारिन ने कहा—देवतों की असीम कृपा भी देश को द्रोही के हाथ से नहीं बचा सकती। इस देश में अवश्य कोई न कोई द्रोही है। जब तक उसका वध न किया जायगा, देश के सिर से यह सङ्कट न टलेगा।

“देवी, वह द्रोही कौन है?”

“जिस घर से रात को गाने की ध्वनि आती हो, जिस घर से दिन को सुगन्ध की लपटें आती हों, जिस पुरुष की आँखों में मद की लाली झलकती हो, वही देश का द्रोही है।”

लोगों ने द्रोही का परिचय पाने के लिए और भी कितने ही प्रश्न किए, पर देवी ने कोई उत्तर न दिया।

२

यूनानियों ने द्रोही की तलाश करनी शुरू की। किस-के घर में से रात को गाने की आवाज़ें आती हैं? सारे शहर में सन्ध्या होते स्यापा-सा छा जाता था। अगर कहीं आवाज़ें सुनाई देती थीं तो रोने की, हँसी और गाने की आवाज़ कहीं न सुनाई देती थी।

दिन को सुगन्ध की लपटें किस घर से आती हैं? लोग जिधर जाते थे उधर से दुर्गन्धि आती थी। गलियों में कूड़े के ढेर पड़े थे, किसे इतनी फुरसत थी कि घर की सफ़ाई करता, घर में सुगन्ध जलाता; धोबियों का अभाव था, अधिकांश लड़ने चले गए थे, कपड़े तक न धुलते थे; इत्र-फुलेल कौन मलता।

किसकी आँखों में मद की लाली झलकती है? लाल आँखें दिखाई देती थीं, लेकिन यह मद की लाली न थी, यह आँसुओं की लाली थी। मदिरा की दूकानों पर खाक उड़ रही थी। इस जीवन और मृत्यु के संग्राम में विलास की किसे सूकती। लोगों ने सारा शहर छान

मारा, लेकिन एक भी आँख ऐसी नज़र न आई जो मद से लाल हो।

कई दिन गुज़र गए। शहर में पल-पल भर पर रणक्षेत्र से भयानक खबरें आती थीं और लोगों के प्राण सूखे जाते थे।

आधी रात का समय था। शहर में अन्धकार छाया हुआ था, मानो शमशान हो। किसी की सूरत न दिखाई देती थी। जिन नाव्यशालों में तिल रखने की जगह न मिलती थी वहाँ सियार बोल रहे थे, जिन बाज़ारों में मनचले जवान अस्त्र-शस्त्र सजाएँ पेंठते फिरते थे वहाँ उल्लू बोल रहे थे, मन्दिरों में गाना होता था न बजाना। प्रासादों में भी अन्धकार छाया हुआ था।

एक बूढ़ा यूनानी, जिसका एकलौता लड़का लड़ाई के मैदान में था, घर से निकला और न-जाने किन विचारों की तरङ्ग में देवी के मन्दिर की ओर चला। रास्ते में कहीं प्रकाश न था, क्रदम-क्रदम पर टोकरें खाता था, पर आगे बढ़ता चला जाता था। उसने निश्चय कर लिया था कि या तो आज देवी से विजय का वरदान लूँगा या उनके चरणों पर अपने को भेंट कर दूँगा।

३

सहसा वह चौंक पड़ा। देवी का मन्दिर आ गया था और उसके पीछे की ओर किसी घर से मधुर सङ्गीत की ध्वनि आ रही थी। उसको आश्चर्य हुआ। इस निर्जन स्थान में कौन इस वक्त रङ्गरेलियाँ मना रहा है। उसके पैरों में पर से लगा गए, उड़ कर मन्दिर के पिछवाड़े जा पहुँचा।

उसी घर से, जिसमें मन्दिर की पुजारिन रहती थी, गाने की आवाज़ें आती थीं। वृद्ध विस्मित होकर खिड़की के सामने खड़ा हो गया। चिराग-तले अंधेरा! देवी के मन्दिर के पिछवाड़े यह अन्धेरा?

बूढ़े ने द्वार से झाँका; एक सजे हुए कमरे में मोस-बत्तियाँ झाड़ों में जल रही थीं, साफ़-सुथरा फर्श बिछा हुआ था और एक आदमी मेज़ पर बैठा हुआ गा रहा था। मेज़ पर शराब की बोतल और प्यालियाँ रखी हुई थीं। दो गुलाम मेज़ के सामने हाथ में भोजन के थाल लिए खड़े थे, जिनमें से मनोहर सुगन्ध की लपटें आ रही थीं।

बूढ़े यूनानी ने चिल्ला कर कहा—यही देश-द्रोही है, यही देश-द्रोही है!

मन्दिर की दीवारों ने दुहराया—द्रोही है!

बागीचे की तरफ़ से आवाज़ आई—द्रोही है!

मन्दिर की पुजारिन ने घर में से सिर निकाल कर कहा—हाँ, द्रोही है।

यह देश-द्रोही उसी पुजारिन का बेटा पासोनियस था। देश में रक्षा के जो उपाय सोचे जाते, शत्रुओं का दमन करने के लिए जो निश्चय किए जाते, उनकी सूचना वह ईरानियों को दे दिया करता था। सेनाओं की प्रत्येक गति की खबर ईरानियों को मिल जाती थी और उन प्रयत्नों को विफल बनाने के लिए वे पहले से तैयार हो जाते थे। यही कारण था कि यूनानियों को जान लड़ा देने पर भी विजय न होती थी। इस देश-द्रोह के पुरस्कार में पासोनियस को मुहरों की थैलियाँ मिल जाती

थीं। इसी कपट से कमाए हुए धन से वह भोग-विलास करता था। उस समय जब कि देश पर घोर सङ्कट पड़ा हुआ था, उसने अपने स्वदेश को अपनी वासनाओं के लिए बेच दिया था। अपने विलास के सिवा उसे और किसी बात की चिन्ता न थी, कोई मरे या जिये, देश रहे या जाय, उसकी बला से। केवल अपने कुटिल स्वार्थ के लिए देश की गरदन में गुलामी की बेड़ियाँ डलवाने पर तैयार था। पुजारिन अपने बेटे के दुराचरण से अनभिज्ञ थी, वह अपनी अंधेरी कोठरी से बहुत कम निकलती, वहाँ बैठी जप-तप किया करती थी। परलोक-चिन्तन में उसे इहलोक की खबर न थी, मनेन्द्रियों ने बाहर की चेतना को शून्य-सा कर दिया था। वह इस समय भी कोठरी के द्वार बन्द किए, देवी से अपने देश के कल्याण के लिए वन्दना कर रही थी कि सहसा उसके कानों में आवाज़ आई—यही द्रोही है, यही द्रोही है!

उसने तुरन्त द्वार खोल कर बाहर की ओर भाँका, पासोनियस के कमरे में प्रकाश की रेखाएँ निकल रही थीं, और उन्हीं रेखाओं पर सङ्गीत की लहरें नाच रही थीं। उसके पैर-तले से ज़मीन-सी निकल गई, कलेजा धक् से हो गया। ईश्वर! क्या मेरा बेटा ही देश-द्रोही है?

आप ही आप, किसी अन्तःप्रेरणा से पराभूत होकर, वह चिल्ला उठी—हाँ, यही देश-द्रोही है!

४

यूनानी स्त्री-पुरुष कुण्ड के कुण्ड उमड़ पड़े और पासोनियस के द्वार पर खड़े होकर चिल्लाने लगे—यही देश-द्रोही है!

पासोनियस के कमरे की रोशनी ठण्डी हो गई थी; सङ्गीत भी बन्द था, लेकिन द्वार पर प्रतिक्षण नगर-वासियों का समूह बढ़ता जाता था और रह-रह कर सदस्यों कण्ठों से ध्वनि निकलती थी—यही देश-द्रोही है!

लोगों ने मशालें जलाई, और अपने लाठी-डण्डे सँभाल कर मकान में घुस पड़े। कोई कहता था—सिर उतार लो। कोई कहता था—देवी के चरणों पर बलिदान कर दो। कुछ लोग कोठे से नीचे गिरा देने पर आग्रह कर रहे थे।

पासोनियस समझ गया कि अब मुसीबत की वड़ी सिर पर आ गई। तुरन्त ज़ीने से उतर कर नीचे की ओर भागा और कहीं शरण की आशा न देख कर देवी के मन्दिर में जा घुसा।

अब क्या किया जाय। देवी के शरण जाने वाले को अभयदान मिल जाता था। परम्परा से यही प्रथा थी। मन्दिर में किसी की हत्या करना महापाप था।

लेकिन देश-द्रोही को इतने सस्ते कौन छोड़ता। भाँति-भाँति के प्रस्ताव होने लगे—

“सुअर के हाथ पकड़ कर बाहर खींच लो।”

“ऐसे देश-द्रोही का वध करने के लिए देवी हमें क्षमा कर देंगी!”

“देवी आप उसे क्यों नहीं निर्गल जाती?”

“पथरों से मारो, पथरों से, आप निकल कर भागेगा।”

“निकलता क्यों नहीं रे कायर! वहाँ क्या सुँह में कालिख लगा कर बैठा हुआ है?”

रात-भर यही शोर मचा रहा और पासोनियस न निकला! आखिर यह निश्चय हुआ कि मन्दिर की छत खोद कर फेंक दा जाय और पासोनियस दोपहर की तेज़ धूप और रात की कड़के की सदी में आप ही आप अकड़ जाय। बस फिर क्या था। आन की आन में लोगों ने मन्दिर की छत और कलस ढा दिए।

अभागा पासोनियस दिन-भर तेज़ धूप में खड़ा

रहा। उसे ज़ोर की प्यास लगी, लेकिन पानी कहाँ? भूख लगी पर खाना कहाँ? सारी ज़मीन तब की भाँति बलने लगी, लेकिन छाँह कहाँ? इतना कष्ट उसे जीवन-भर में न हुआ था। मछली की भाँति तड़पता था और खिल्ला-चिल्ला कर लोगों को पुकारता था, मगर वहाँ कोई उसकी पुकार सुनने वाला न था। बार-बार कसमें खाता था कि अब फिर मुझसे ऐसा अपराध न होगा, लेकिन कोई उसके निकट न आता था। बार-बार चाहता था कि दीवार से सिर टकरा कर प्राण दे दे, लेकिन यह आशा रोक देती थी कि शायद लोगों को मुझ पर दया आ जाय। वह पागलों की तरह ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा—मुझे मार डालो, मार डालो, एक क्षण में प्राण ले लो, इस भाँति जला-जला कर न मारो, ओ हत्यारो, तुमको ज़रा भी दया नहीं।

दिन बीता और रात—भयङ्कर रात—आई। ऊपर तारागण चमक रहे थे, मानो उसकी विपत्ति पर हँस रहे हों। ज्यों-ज्यों रात भोगती थी, देवी विकराल रूप धारण करती जाती थी। कभी वह उसकी ओर मुँह खोल कर लपकती, कभी उसे जलती हुई आँखों से देखती। उधर चण-चण सरदी बढ़ती जाती थी, पासोनियस के हाथ-पाँव अकड़ने लगे, कलेजा काँपने लगा, घुटनों में सिर रख कर बैठ गया और अपनी किस्मत को रोने लगा; कुरते को खींच कर कभी पैरों को छिपाता, कभी हाथों को, यहाँ तक कि इस खींचा-तानी में कुरता भी फट गया। आधी रात जाते-जाते बर्फ़ गिरने लगी। दोपहर को उसने सोचा था कि गरमी ही सब से अधिक कष्ट-दायक है, अब इस ठण्ड के सामने उसे गरमी की तकलीफ़ भूल गई।

आखिर शरीर में गरमी लाने के लिए उसे एक हिक-मत सूझी। वह मन्दिर में उधर-उधर दौड़ने लगा, लेकिन विलासी जीव था, ज़रा देर में हाँप कर गिर पड़ा।

५

प्रातःकाल लोगों ने किवाड़ खोले तो पासोनियस को भूमि पर पड़े देखा। मालूम होता था, उसका शरीर अकड़ गया है। बहुत चीखने-चिल्लाने पर उसने आँखें खोलीं, पर जगह से हिल न सका। कितनी दयनीय दशा थी, किन्तु किसी को उस पर दया न आई। यूनान में देश-द्रोह सब से बड़ा अपराध था और द्रोही के लिए कहीं क्षमा न थी, कहीं दया न थी।

एक—अभी मरा नहीं है!

दूसरा—द्रोहियों को मौत नहीं आती!

तीसरा—पढ़ा रहने दो, मर जायगा!

चौथा—मरक किए हुए है!

पाँचवाँ—अपने किए की सज़ा पा चुका, अब छोड़ देना चाहिए!

सहसा पासोनियस उठ बैठा और उद्विग्न भाव से बोला—कौन कहता है कि इसे छोड़ देना चाहिए! नहीं, मुझे मत छोड़ना, वरना पछताओगे; मैं स्वार्थी हूँ, विषय-भोगी हूँ, मुझ पर भूल कर भी विश्वास न करना। आह! मेरे कारण तुम लोगों को क्या-क्या झेलना पड़ा, इसे सोच कर मेरा जी चाहता है कि अपनी इन्द्रियों को जला कर भस्म कर दूँ। मैं अगर सौ बार जन्म लेकर इस पाप का प्रायश्चित्त करूँ तो भी मेरा उद्धार न होगा। तुम भूल कर भी मेरा विश्वास न करो। मुझे स्वयं अपने ऊपर विश्वास नहीं। विलास के प्रेमी सत्य का पालन नहीं कर सकते। मैं अब भी आपकी कुछ सेवा कर सकता हूँ। मुझे ऐसे-ऐसे गुप्त रहस्य मालूम हैं जिन्हें जान कर आप ईरानियों का संहार कर सकते हैं। लेकिन मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है और आप से भी यही कहता हूँ कि मुझ पर विश्वास न कीजिए।

आज रात को देवी की मैंने सच्चे दिल से वन्दना की है और उन्होंने ने मुझे ऐसे यन्त्र बताया हैं जिनसे हम शत्रुओं को परास्त कर सकते हैं, ईरानियों के बढ़ते हुए दल को आज भी आन की आन में उड़ा सकते हैं। लेकिन मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है, मैं यहाँ से बाहर निकल कर इन बातों को भूल जाऊँगा, बहुत संशय है कि फिर ईरानियों की गुप्त सहायता करने लगूँ, इसलिए मुझ पर विश्वास न कीजिए।

एक यूनानी—देखो देखो, क्या कहता है?

दूसरा—सच्चा आदमी मालूम होता है!

तीसरा—अपने अपराधों को आप स्वीकार कर रहा है।

ग़रीब किसान

[कविवर "विस्मिल" इलाहाबादी]

रो के कल कह रहा था एक किसान,
सख्त आफ़त में फँस गई मेरी जान।

तीसरे-चौथे रोज़ पटवारी,

ज़ोर से खींचता है दोनों कान।

और है गाँव में जो चौकीदार,

वह सताता है हर घड़ी हर आन।

आ के तहसीलदार दोरे पर,

करते हैं बेतरह मुझे हलकान।

गाँव के चौधरी का क्या कहना,

छेड़ता है अलग वह अपनी तान।

है ज़र्मीदार भी लिए ढण्डा,

नज़र के साथ माँगता है लगान।

क्या कहूँ हाल में ज़ेराआत का,

न चना घर में है न खेत में धान।

जब मनीआर्डर कोई आया,

डाकिया सर पे धर गया एहसान।

अलगारज सब के सब सताते हैं,

यह खता है कि हूँ ग़रीब किसान।

* * *

चौथा—इसे क्षमा कर देना चाहिए, और वह सब बातें पृष्ठ लेनी चाहिए।

पाँचवाँ—देखो, यह नहीं कहता कि मुझे छोड़ दो, हमको बार-बार याद दिलाता जाता है कि मुझ पर विश्वास न करो!

छठा—रात-भर के कष्ट ने होश ठण्डे कर दिए, अब आँखें खुली हैं!

पासोनियस—क्या तुम लोग मुझे छोड़ने की बात-चीत कर रहे हो। मैं फिर कहता हूँ, मैं विश्वास के योग्य नहीं हूँ। मैं द्रोही हूँ। मुझे ईरानियों के बहुत से भेद मालूम हैं, एक बार उनकी सेना में पहुँच जाऊँ तो उनका मित्र बन कर सर्वनाश कर दूँ, पर मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है।

एक यूनानी—धोखेबाज़ इतनी सच्ची बात नहीं कह सकता!

दूसरा—पहले स्वार्थान्ध हो गया था, पर अब आँखें खुली हैं!

तीसरा—देश-द्रोही से भी अपने मतलब की बातें मालूम कर लेने में कोई हानि नहीं है। अगर यह अपने वचन पूरे करे तो हमें इसे छोड़ देना चाहिए।

चौथा—देवी की प्रेरणा से इसकी यह कायापलट हुई है।

पाँचवाँ—पापियों में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जाग्रत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह फिर कभी पुण्य कर ही नहीं सकता, मानव-चरित्र के एक प्रधान तत्व का अप-वाद करना है।

छठा—हम इसको यहाँ से गाते-बजाते ले चलेंगे। जन-समूह को चकमा देना कितना आसान है। जन-सत्तावाद का सब से निर्बल अङ्ग यही है। जनता तो नेक और बड़ की तमीज़ नहीं रखती, उस पर धूर्तों, रंगे सियारों का जादू आसानी से चल जाता है। अभी एक दिन पहले जिस पासोनियस की गरदन पर तलवार चलाई जा रही थी, उसी को जलूस के साथ मन्दिर से निकालने की तैयारियाँ होने लगीं, क्योंकि वह धूर्त था और जानता था कि जनता की कील क्योंकि घुमाई जा सकती है।

एक स्त्री—गाने-बजाने वालों को बुलाओ, पासो-नियस शरीफ़ है।

दूसरी—हाँ-हाँ, पहले चल कर उससे क्षमा माँगो, हमने उसके साथ ज़रूरत से ज़्यादा सख्ती की।

पासोनियस—आप लोगों ने पृछा होता तो मैं कल ही सारी बातें आपको बता देता। तब आपको मालूम होता कि मुझे मार डालना उचित है या जीता रखना।

कई स्त्री-पुरुष—हाय! हाय! हमसे बड़ी भूल हुई। हमारे सच्चे पासोनियस!

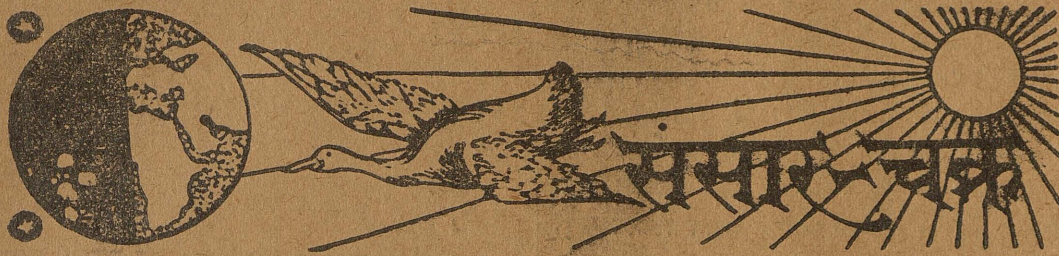
सहसा एक वृद्ध की किसी तरफ़ से दौड़ती हुई आई और मन्दिर के सब से ऊँचे जीने पर खड़ी होकर बोली—तुम लोगों को क्या हो गया है? यूनान के बेटे, आज इतने ज्ञानशून्य हो गए हैं कि झूठे और सच्चे में विवेक नहीं कर सकते! तुम पासोनियस पर विश्वास करते हो? जिस पासोनियस ने सैकड़ों स्त्रियों और बालकों को अनाथ कर दिया, सैकड़ों घरों में कोई दिया जलाने वाला न छोड़ा, हमारे देवतों का, हमारे पुरुषों का, धोर अपमान किया, उसकी दो-चार चिरकनी-नुपड़ी बातों पर तुम इतने फूल उठे। याद रखो, अबकी पासोनियस बाहर निकला तो फिर तुम्हारी कुशल नहीं, यूनान पर ईरान का राज्य होगा और यूनानी ललनाएँ ईरानियों को कुदृष्टि का शिकार बनेंगी। देवी की आज्ञा है कि पासोनियस फिर बाहर न निकलने पाए। अगर तुम्हें अपना देश प्यारा है, अपने पुरुषों का नाम प्यारा है, अपनी माताओं और बहिनों की आबरू प्यारी है तो मन्दिर के द्वार को चुन दो, जिसमें इस देश-द्रोही को फिर बाहर निकलने और तुम लोगों को बहकाने का मौक़ा न मिले। यह देखो, पहला पत्थर मैं अपने हाथों से रखती हूँ।

लोगों ने विस्मित होकर देखा—यह मन्दिर की पुजारिन और पासोनियस की माता थी।

दम के दम में पत्थरों के ढेर लग गए और मन्दिर का द्वार चुन दिया गया। पासोनियस भीतर दाँत पीसता रह गया।

वीर माता, तुम्हें धन्य है! ऐसी ही माताओं से देश का मुख उज्ज्वल होता है, जो देश-हित के सामने मातृ-स्नेह की धूल-बराबर भी परवा नहीं करती। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नहीं होता।

* * *



जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र

[श्री ० देवकीनन्दन जी 'विभव']

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति ने जिस तरह यूरोप के मानचित्र को बिलकुल बदल दिया था, इसी तरह यूरोपीय महायुद्ध के बाद संसार के राजनीतिक प्रवाह में भारी क्रान्ति हुई है। शताब्दियों से यूरोप की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ छोटे-छोटे राष्ट्रों को हड़पती जाती थीं, यूरोपीय महायुद्ध ने उनके पंजे को ढाला कर दिया और अनेक छूटे-छूटे राष्ट्रों ने दासत्व का जुग्रा फेंक कर स्वतन्त्र प्रजातन्त्र की स्थापना कर ली। जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र भी उसी महायुद्ध का परिणाम है। महायुद्ध ने मध्य-यूरोप को द्विज-भूजक दिया था, ऑस्ट्रो-हंगरी और जर्मनी की बड़ी शक्तियाँ टूट रही थीं, उस समय जेक (जो ऑस्ट्रिया के अधीन थे), स्लोवक (जो हंगरी के अधीन थे) और रुथेनिया और जर्मनी की अन्य कुछ छोटी जातियों ने सङ्गठित होकर एक नए प्रजातन्त्र स्थापित कर लिया। यही जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र है।

जेक अथवा बोहीमिया राष्ट्र सन् १५२६ तक स्वतन्त्र था। सन् १५२६ में उसे और हंगरी को, जहाँ उस समय एक स्वतन्त्र पृथक सरकार थी, प्रतिभाशाली सोलीमन ने मोहक्स के युद्ध में पराजित किया और ऑस्ट्रिया के साथ एक साम्राज्य में जोड़ दिया। उस समय से ऑस्ट्रिया का सम्राट ही बोहीमिया पर भी शासन करता आता था। परन्तु जेक जाति में एक स्वतन्त्र राष्ट्र होने की आकांक्षा विलीन नहीं हुई थी और तब से ही उनमें एक स्वाधीन शासन-प्रणाली प्राप्त करने की आकांक्षा चली आती थी। महायुद्ध के आगमन से उनके आर्षों को आकस्मिक सहायता मिली। इस समय उन्हें एक ऐसा नेता मिल गया, जिसकी योग्यता, दृढ़ता और स्वार्थ-त्याग के कारण उनका स्वयं वास्तविक कार्यरूप में परिणत हो गया। यह मनुष्य डॉक्टर मसारीक था।

थोमस गेरीग मसारीक का जन्म सन् १८५० में मोरेविया के एक नगर होडोनीन में हुआ था। उसके पिता एक सरकारी रियासत में रजिस्टर थे। बालक मसारीक बीना में एक चाबी बनाने वाले के यहाँ नौकर हो गए, परन्तु फिर एक पादरी सज्जन की कृपा से उन्हें बीना और लिपज़ीग के विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल गया। वे जब विद्यार्थी ही थे तभी उनकी प्रतिभा चमकने लगी थी और फिर तो वे बीना में तत्वज्ञान के ख्याता हो गए। उनकी पुस्तक "A study on suicide as a pathological symptom of the condition of contemporary Europe" बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक में आपने बतलाया था कि यूरोप के वर्तमान अधःपतन का कारण धार्मिक भावना की कमी है।

सन् १८८२ से प्रेग की जेक यूनिवर्सिटी में डॉक्टर मसारीक तत्वज्ञान के प्रोफेसर हो गए और धीरे-धीरे उनका प्रभाव बढ़ने लगा, फिर तो वे शीघ्र ही राष्ट्रीय नेता हो गए। प्रेग में डॉक्टर मसारीक न केवल जेक जाति में, बल्कि ऑस्ट्रिया की दक्षिणीय स्लेव जाति में भी

पूजनीय समझे जाते थे। इसमें सन्देह नहीं कि जेक और स्लेव जातियों को एक तन्त्र में जोड़ देने का बहुत कुछ श्रेय मसारीक को प्राप्त है। एक जर्मन ने मसारीक के सम्बन्ध में लिखा था—“The lonely slovak at Prague who, a mixture of Tolstoy and Whiteman, seems to some a heretic, to others an ascetic, and to all an enthusiast.”

ज्योंही महायुद्ध का विगुल बजा, ज्योंही डॉक्टर मसारीक ने समझ लिया कि जेकोस्लोवेकिया के स्वतन्त्र करने का समय आ गया। वह दिसम्बर सन् १९१४ ई० को प्रेग में चले पड़ा और इटली पहुँच गया। इस समय उसने अपनी जाति जेक और दक्षिणीय स्लेवों को एक आधार पर खड़ा करने के लिए महान प्रयत्न किया और अन्त में वह सफल हुआ।

मसारीक इटली होता हुआ पेरिस पहुँच गया, जहाँ उसे मित्र-शक्तियों से बहुत सहायता मिलने की आशा थी। यहाँ उसने डॉक्टर वीन्स और कर्नल स्टीफेनिक के सहयोग से जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय शासन सभा स्थापित की। इस समय इस राष्ट्रीय प्रजातन्त्र के अधिकार में कोई प्रदेश नहीं था और न अधिक साधन थे। परन्तु स्वाधीनता के पुजारी कुछ व्यक्ति प्रजातन्त्र को वास्तविक शक्ति बनाने की उधेड़-धुन में लगे हुए थे और शीघ्र ही उन्होंने यह दिखला दिया कि वे मित्र-शक्तियों से न केवल सहायता चाहते ही हैं, बल्कि उनका यह दूर देश स्थित प्रजातन्त्र उनकी बहुत बड़ी सहायता कर भी सकता है। इस प्रजातन्त्र के आन्दोलन का प्रभाव यह हुआ कि जेकोस्लोवेक सैनिक मोर्चों पर से ऑस्ट्रिया की सेना को छोड़-छोड़ कर मित्र-शक्तियों की सेना में आकर मिल जाते थे और कुछ युद्ध में क़ैद कर लिए जाते थे। इस तरह सन् १९१५ के अन्त तक मित्र-शक्तियों के मोर्चों में ७५,००० से १,००,००० जेकोस्लोवेक इकट्ठे हो गए। यह प्रजातन्त्र की प्रेरणा से मित्र-शक्तियों की ओर से लड़ने को तैयार हो गए और इन्होंने फ़्रान्स, इटली या रूस की यूनीफ़ॉर्म पहिना कर शत्रुओं से लड़ने के लिए आगे भेज दिया गया। इन राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित सैनिकों का त्याग अत्यन्त महान था, क्योंकि वे अपने प्रजातन्त्र के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहे थे, लड़ाई में मारे जाने पर तो वे अपनी जान से हाथ खोते ही, परन्तु यदि शत्रु उन्हें पकड़ ले जाते तो ऑस्ट्रिया की सेना से भाग जाने या विद्रोह के अपराध में गोलों से उड़ा दिए जाते थे।

मसारीक ने प्रेग छोड़ने से पहले ही अपना ताना-बाना बुनना प्रारम्भ कर दिया था। मार्न के युद्ध के बाद, जब कि जर्मनी की अजेयता का मन्त्र दाबा जाता रहा, तब लन्दन के एक प्रसिद्ध सम्पादक से एक मोटा दाढ़ी वाला आदमी मिला। इस भेंट का उद्देश्य यह था कि रूसी सैनिक जेक सैनिकों पर, जो वास्तव में रूसी सेनाओं में मिलने को आगे बढ़ते हैं, गोलियों न चलावें। यह मनुष्य, जिसका नाम वोस्का था, एक जेक था, पर अम-

रीका में रहने के कारण वह अमरीकन नागरिक बन गया था। यह प्रेग से अमरीका को लौट रहा था। डॉक्टर मसारीक ने उक्त सन्देश मित्र-शक्तियों के पास उसके द्वारा भेजना उचित समझा। उस लन्दन पत्र के सम्पादक मि० स्टीड ने मसारीक से यह समझौता करा दिया कि जब जेकोस्लोवेक अपना राष्ट्रीय गीत गावें तब रूसी सैनिक इसे आत्म-समर्पण का चिह्न समझ कर बुपचाए अपने मोर्चों में आ जाने दें।

मित्र-शक्तियाँ डॉक्टर मसारीक से पूर्ण सहानुभूति रखती थीं; इसलिए नहीं, क्योंकि वे जेकोस्लोवेक स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे, बल्कि इसलिए कि वे उनके एक बड़े दुश्मन ऑस्ट्रिया-हंगरी की कमर तोड़ने में बहुत बड़े सहायक थे। डॉक्टर मसारीक का हेड क्वार्टर सन् १९१५ के प्रारम्भ से लेकर रूसी क्रान्ति के प्रारम्भ होने तक विशेषतः लन्दन में ही रहा। यहाँ भी एक जेक राष्ट्रीय परिषद का सङ्गठन किया गया, परन्तु आन्दोलन का केन्द्र अब भी पेरिस ही में था। ऑस्ट्रिया की सब ही मुख्य-मुख्य राजनैतिक और सेना सम्बन्धी सूचनाएँ डॉक्टर मसारीक को मिलती रहती थीं, जिन्हें वे मित्र-शक्तियों को भेजते रहते थे। इस कार्य में डॉक्टर वीन्स मसारीक का दाहिना हाथ था और पेरिस का सारा सङ्गठन उसी के अधीन था। वह राष्ट्रीय फ़्लग का अधिष्ठाता था। इस फ़्लग में अमरीका के आठ लाख जेक आर्थिक सहायता देते थे। इस तरह जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र के पास कोई शासन के साधन और शक्ति न होने पर उसको आर्थिक तङ्गी न सहनी पड़ी।

डॉक्टर मसारीक का कार्य जेकोस्लोवेक सैनिकों को ही उभाड़ कर समाप्त न हुआ। उसने अक्टूबर, १९१९ से 'न्यू यूरोप' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया, जिसके द्वारा वह मध्य और दक्षिण-पूर्वी यूरोप के प्रेरणों पर अपने पत्र में सार्वजनिक मत का सङ्गठन करने में बहुत कुछ सफल हुआ।

पेरिस की जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय परिषद प्रजातन्त्र की पूर्व-रूप थी। डॉक्टर मसारीक उसका अध्यक्ष था, और डॉक्टर वीन्स वैदेशिक मन्त्री था। फ़्रान्सीसी सरकार के वैदेशिक मन्त्री एम० पिचन ने फ़्रान्सीसी सरकार की तरफ से उक्त परिषद को जेकोस्लोवेक सरकार का प्रथम आधार (the first basis of the future Czechoslovak Government) मान लिया था। डॉक्टर वीन्स ने लन्दन में सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट मि० बालफोर और उनके सहायक लॉर्ड रॉबर्ट सिसिल से भी फ़्रान्स की तरह उक्त समझौता करने के लिए बातचीत की, परन्तु अङ्ग्रेज सरकार इसे स्वीकार कर लेने के लिए तैयार नहीं थी, क्योंकि डॉक्टर मसारीक की परिषद को जेकोस्लोवेक सरकार का 'प्रथम-आधार' मान लेने पर जेकों से शासन-प्रणाली चुनने का अधिकार छिन जाता था। परन्तु 'प्रथम-आधार' की जगह 'ट्रस्टी' शब्द के परिवर्तन करने पर अङ्ग्रेज सरकार ने इसे मान लिया।

सन् १९१८ में मसारीक न्यूयार्क पहुँचा और वहाँ उसका सारा समय एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा में ही व्यय होता था। इस समय संसार की राजनीति का प्रवाह बहुत कुछ संयुक्त राज्य अमरीका पर ही अवलम्बित था और अमरीका की सरकार को प्रभावान्वित करने का एक मार्ग अमरीका के सार्वजनिक भक्त को, जो सदा आदर्शवादी रहा है, उत्तेजित कर देना था। जेक जाति के अमरीकन नागरिकों ने फ़रवरी, १९१८ में 'बोहीमियन नेशनल ऐलायन्स' नाम की संस्था का सङ्गठन किया और उसका केन्द्र वाशिंगटन में रक्खा। जुलाई, १९१८ में जब मसारीक अमरीका में आया तो संयुक्त-राज्य के जेकों का घोषणा-पत्र प्रेज़िडेंट विल्सन के पास भेजा गया, जिससे एक जेकोस्लोवेक राज्य की स्थापना के ध्येय का समर्थन किया गया।

जिस समय रूस में क्रान्ति हुई और उसने जर्मन की गवर्नमेण्ट से प्रथम सन्धि कर ली, उस समय रूसी कण्टे के नीचे पचास हजार जेकोस्लोवेक सैनिक मध्य-शक्तियों से लड़ रहे थे। अब मसारीक ने रूस से फ्रैसला किया कि जेकोस्लोवेक सैनिक साइबेरिया में होते हुए ब्लाडीवोस्तक पहुँच जायें, जहाँ से वे फ्रान्स में लड़ने के लिए जहाज़ों द्वारा भेजे जाने वाले थे, परन्तु २७ जुलाई, १९१८ को जेकोस्लोवेक सेना के कमाण्डर-इन-चीफ की स्थिति से मसारीक ने उक्त सेना को आज्ञा दी कि यदि मित्र-शक्तियाँ वर्सेलीज़ में फिर 'रूस-जर्मन-मोर्चा' स्थापित करना तय करें, तो वह सर्विया में ही रुक जाय।

जून, १९१८ को मसारीक प्रेज़िडेण्ट विल्सन से मिले। फ्रान्स और इंग्लैण्ड की गवर्नमेण्ट से उन्हें जो सफलता मिली थी उसका एक मुख्य कारण यह था कि वे उन्हें यह समझाने में सफल हुए थे कि जेकोस्लोवेक स्वतन्त्र-राज्य की स्थापना से ही जर्मनी की आकांक्षाओं को तोड़ा जा सकता है और उसकी 'जर्मनी बगदाद रेलवे' स्थापित करने की योजना में सफलतापूर्वक बाधा पहुँचाई जा सकती है। यही बात डॉक्टर मसारीक ने प्रेज़िडेण्ट विल्सन के सामने भी रखी और इस बात का जोरों से प्रतिपादन किया कि स्वतन्त्र जेकोस्लोवेक राज का स्थापना हो जाने से यूरोप में बहुत कुछ स्थायी शान्ति स्थापित हो जायगी। प्रेज़िडेण्ट विल्सन पर डॉक्टर मसारीक के तर्कों से भी अधिक प्रभाव, आठ लाख जेक प्रमरीकन नागरिकों का, जो कि जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र के लिए भारी आलोचना कर रहे थे, पड़ा। ३ सितम्बर को सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट मि० लानसिज़ ने संयुक्त-राज्य अमरीका की ओर से जेकोस्लोवेक राष्ट्र को एक स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकार कर लिया और जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय परिषद का (—de-facto belligerent Government clothed with proper authority to direct the military affairs of the Czechoslovaks) जेकोस्लोवेक सेना को सञ्चालित करने का अधिकार मान लिया।

अब इटली और जापान की सरकारें भी जेकोस्लोवेक की प्रजातन्त्र को स्वीकार कर चुकी थीं। जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र की इस समय वही स्थिति थी जो बेलजियम और सर्विया की सरकारों की थी। जर्मनी ने इनके पूरे देश पर अधिकार कर लिया था और इनके अधिकार में अपने देश की भूमि का एक टुकड़ा भी बाकी नहीं रहा था और उक्त सरकारों को अपने हेड-क्वार्टर अस्थायी रूप से विदेशों में स्थापित करने पड़े थे। परन्तु मित्र-शक्तियाँ जर्मनी द्वारा जीते हुए उनके देश पर उनके वास्तविक अधिकार को स्वीकार करती थीं।

इसके बाद अमरीका में कुछ मास मसारीक प्रकाशन कार्य में अत्यन्त व्यस्त रहा। जेकोस्लोवेक-राष्ट्रीय परिषद का केन्द्र अब भी पेरिस में था, पर उसकी एक मज़बूत शाखा वाशिङ्गटन में भी कायम हो गई थी। १८ अक्टूबर को पेरिस से अस्थायी सरकार ने एक घोषणा प्रकाशित की कि जेकोस्लोवेक एक स्वतन्त्र और आज़ाद राष्ट्र है और उस पर ऑस्ट्रिया के हेज़बर्ग वंश का शासन करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसके बाद जिनेवा में संसार के जेकोस्लोवेक जाति के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई और वहाँ मसारीक प्रजातन्त्र के सभापति चुने गए। १२ नवम्बर को जिस दिन महायुद्ध बन्द हुआ उसी दिन मसारीक के चुनाव की सूचना अमरीका के सरकारी विभाग द्वारा प्रकाशित की गई और डॉक्टर मसारीक को तुरन्त ही प्रेग जाने का आदेश दिया गया।

२१ नवम्बर, १९१८ को डॉक्टर मसारीक यूरोप के लिए रवाना हो गए और ३० नवम्बर को लन्दन पहुँचने

भारत की "वीर और लड़ाकू" जातियाँ

(गताङ्क से आगे)

यहाँ पर यह भी बतलाना अनुपयुक्त न होगा कि भारतीय सेना के १,५८,८०० सैनिकों में से किस प्रान्त से कितने सैनिक भर्ती किए गए हैं। नीचे हम उनकी सूची साइमन रिपोर्ट के आधार पर देते हैं :—

पञ्जाब ८६,०००; नेपाल १६,०००; यू० पी० (गढ़वाल और कुमाऊँ मिला कर) १६,५००; राजपूताना १०,०००; बम्बई १०,०००; काश्मीर ६,५००; सीमाप्रान्त ५,६००; मद्रास ४,०००; ब्रह्मा ३,०००; हैदराबाद ३००; बलूचिस्तान ३००; मध्य भारत २००; मैसूर १००, मध्य प्रान्त १००; विभिन्न १६००।

भारतीय सेना में सिपाहियों की भर्ती खास प्रान्तों की कुछ चुनी हुई किमान जातियों में से ही नहीं होती। वरन उसके जातीय सङ्गठन में इतनी जटिलताएँ हैं जिनकी हिन्दू जाति में भी न मिलेंगी। भारतीय पना में व्यक्ति-विशेष को गुज़र नहीं है। उसके बैटलियनों, कम्पनियों, यहाँ तक कि प्लेटू में भी भर्ती, जाति के अनुपात के अनुसार ढ़ी सफ़ाई से का जाती है; और कोई आदमी, चाहे उसकी फ़ौजी योग्यता कितनी ही अधिक क्यों न हो, जब तक उनकी इच्छित जाति का न होगा, फ़ौज में भर्ती नहीं हो सकता। जातियों के ये टुकड़े बैटलियनों में इस सिलसिले से बाँटे गए हैं कि वे लोग अपनी जाति की रूढ़ियों का आसानी से पालन कर सकें और अपने पूर्वजों की और अपनी जाति की पुरानी राज-भक्ति को अच्छी तरह निभा सकें। उदाहरण के लिए भारतीय सीमाप्रान्त की पैदल सेना का १ला ११२ वाँ रिसाला लीजिए; इसमें एक मुसलमान सैनिकों की कम्पनी, एक डोंगरों की, एक (खट्क और ओरकजाई) पठानों की और एक सिक्खों की कम्पनी है। घुड़सवार सैनिकों के पहले रिसाले के ३ स्काडन में (एक स्काडन में १२० से लेकर २०० तक सवार होते हैं) हिन्दुस्तानी मुसलमान, ३ स्काडन में मुसलमान राजपूत (राँगः), एक में यू० पी० और पूर्वीय पञ्जाब के राजपूत; और एक में जाट सैनिक सम्मिलित हैं। महाराजा पन्जम जॉर्ज के सैपर्स और माइनर्स रिसाले में भी ३ सिक्ख, ३ पठान, पञ्जाबी और हिन्दुस्तानी मुसलमान और ३ गढ़वाली और राजपूत हिन्दू हैं। गोरखा पैदल सेना के २०, मरहटों के ५, सिक्खों के ३,

पर उनका वहाँ सरकारी स्वागत हुआ। ७ दिसम्बर को वे पेरिस पहुँचे और २० तारीख को उनकी ट्रेन प्रेग जा पहुँची। जनता ने अपने प्रिय नेता का पूरे उत्साह से स्वागत किया। वर्सेलीज़ की सन्धि द्वारा जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र का अधिकार मध्य-यूरोप में जेकोस्लोवेक राज्य पर, जिसमें हज़री का एक बहुत बड़ा टुकड़ा सम्मिलित था, मान लिया गया। मध्य एशिया में जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र की स्थिति बहुत मज़बूत हो गई और वह शक्तिशाली राष्ट्रों में से एक समझा जाता है, जैसा कि एक अज़रेज़ लेखक की निम्न पंक्तियों से मालूम होगा:—

'Czechoslovakia became a pivotal state, powerful enough to make itself respected, solid enough to be a pillar of stability in what might otherwise have been a fluid part of Europe.'

* * *

डोंगरों के ४, गढ़वालियों के ४, कुमायुनियों का १ बैटलियन; हज़ारा अफ़ग़ानों का १ कोर (Corp) और मद्रासी एम० और एम० के रिसाले के अतिरिक्त भारत में जितनी पैदल घुड़सवार और अन्य प्रकार की सेनाएँ हैं उन सब में इसी जाति-पाँति के भेद के अनुसार सैनिक भर्ती किए जाते हैं। एक जाति की सेना के सिपाही को दूसरी जाति की सेना की कम्पनी में भर्ती होने की आज्ञा नहीं मिल सकती।

भारतीय सेना के इस प्रकार के सङ्गठन से उसमें कुछ गुणों के साथ ही बहुत से दोष चुप गए हैं। युद्ध-विद्या के बड़े-बड़े विशारदों का कहना है कि भारतीय सेना युद्ध क कला में यूरोप की किसी भी सेना से टक्कर ले सकती है। परन्तु कभी-कभी वे यह भी कहने लगते हैं कि इन उत्तम गुणों के होते हुए भी यूरोप का वर्तमान सेनाओं से उनमें बहुत अन्तर है। किन्तु-किन्तु बातों में यूरोपीय सेनाओं से भारतीय सेनाएँ हटा उतरनी हैं, इस सम्बन्ध में ये युद्ध-विशारद चुप साध लेते हैं। हमारी बुद्धि से तो इस अन्तर को जड़ सेनाओं में भर्ती करने की नीति ही मालूम पड़ती है। इस अन्तर के और भी मोटे-मोटे कारण संक्षेप रूप से इस प्रकार गिनाए जा सकते हैं —

(१) भारतीय सेना जाति और धर्म के छोटे-छोटे समूहों में बटी होने के कारण उसमें उस राष्ट्रीय ऐश्वर्य और भक्ति का अभाव है, जो इन भेद-भावों को मिटा कर ही उत्पन्न किए जा सकते हैं। वर्तमान फ़ौजों के सङ्गठन और गुणों में इस राष्ट्रीय भावना का प्रादुर्भाव एक अतीव आवश्यक गुण माना जाता है। इस गुण की आवश्यकता पर, जिस पर सब बड़े-बड़े सेना-सञ्चालकों और विचारकों ने जोर दिया है, अधिक लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। सब से नया 'फ़ील्ड सर्विस' रेगुलेशन्स (Field Service Regulations) कहता है, कि "युद्ध में विजय प्राप्त करना जितना चारित्रिक गुणों पर निर्भर रहता है उतना शारीरिक गुणों पर नहीं, वह शक्ति जो विजय की राष्ट्रीय भावना से उत्पन्न होती है, न तो फ़ौजों की संख्या, निरस्त्रीकरण और दूसरे बड़े-बड़े साधनों से उत्पन्न हो सकती है, और न डापोक और हृदयहीन फ़ौज की चतुराई ही उस भावना के सामने टिक सकता है।"

भारतीय सेना में इस सद्भावना का बिलकुल ही अभाव है। दूसरे व्यवसायों की तरह फ़ौज में भर्ती होना भी एक व्यवसाय हो गया है। भारतीय सैनिकों को जो उत्साह राष्ट्रीयता की भावना से मिलना चाहिए था वह उत्साह उन्हें फ़ौजी उजड़ता, बर्बरता और मासिक वेतन से मिलता है।

(२) शिक्षा के अभाव से भारतीय सेना में ऐसी फ़ौजी योग्यता के ऐसे पुरुषों का अभाव है जो अपनी शक्ति से सेना का ठीक-ठीक सङ्गठन और सुचारु रूप से उसका सञ्चालन कर सकें, और जो सेना का नेतृत्व-भार उठाने के योग्य हों। यदि आज ब्रिटिश अफ़सर भारतीय फ़ौज में से हटा लिए जायें तो युद्ध में भारतीय फ़ौज के टुकड़े-टुकड़े हुए बिना नहीं रह सकते। सेना के भारतीय अफ़सर, जो वाइसराय के कमीशन में रहने का

* 'फ़ील्ड सर्विस रेगुलेशन्स' भाग दूसरा (१९२४) अग्र्या १, सेक्शन १, पै २

दावा करते हैं, केवल नीचे दर्जे के अच्छे अफसर हो सकते हैं। उनमें फ़ौज के बड़े-बड़े मर्दों की ज़िम्मेदारी पूरी करने की शक्ति बिल्कुल ही नहीं है। एक पुराने भारतीय अफसर ने लॉर्ड रॉबर्ट्स को अपनी योग्यता का परिचय इन शब्दों में दिया था :—

“साहब हम लोग लड़ाई में बहुत तेज़ हैं, मगर जङ्ग का बन्दोबस्त नहीं जानते।”

भारतीय अफसरों की इस अयोग्यता के सम्बन्ध में सर वेलेन टाइन चिरोल लिखते हैं कि :—

“जब तक भारतीयों को उच्च फ़ौजी शिक्षा देने का प्रयत्न न किया जायगा, और उन्हें छोटे-छोटे ओहदों से उठा कर बड़े ओहदे न दिए जायेंगे, तब तक उनकी फ़ौजी अयोग्यता दूर करने में किसी भी दूसरी रीति से सफलता नहीं मिल सकती।”

लॉर्ड रॉबिन्सन को भी वर्तमान भारतीय अफसरों की फ़ौजी योग्यता में विश्वास नहीं था। उन्होंने लिखा है कि :—

“क्या हमें कभी भी ज़मींदारों की ‘लड़ाकू’ जातियों में ऐसे सुशिक्षित और वीर युवक मिल सकेंगे जो बावूपन को घृणा की दृष्टि से देखते हों; और जिनके हाथों में हम युद्ध के समय निर्भय होकर मनुष्यों के जीवन सौंप सकें?”

(३) भारतीयों को केवल छोटी-छोटी जगहों पर रखने और उन्हें बड़े-बड़े ओहदों की ज़िम्मेदारी और अनुभव से दूर रखने से उनमें उस विकास का अभाव रह गया है, जिसके सहारे वे फ़ौज का सञ्चालन और उसका नेतृत्व करने में समर्थ हो सकते।

(४) भारतीय सेना को अयोग्य रखने में राजनीतिक परिस्थिति का कुछ कम हाथ नहीं है। लन्दन से प्रकाशित ‘टाइम्स’ के भारतीय विशेषाङ्क में, भारतीय सेना पर एक लेख निकला था, उसके लेखक ने इस बात पर प्रकाश डालते हुए लिखा है :—

“भारतीय सैनिक प्रधानतः सीधे-सादे और किसान होते हैं। उनका पालन-पोषण गाँव-खेड़ों के स्वस्थ और शुद्ध वायुमण्डल में होता है, इसलिए व्यावसायिक क्रान्तिवादियों की अपीलों पर वे सहज में राजनीति में भाग नहीं लेते।”

भारतीय सेना की इस अयोग्यता और उनकी शक्ति में उपर्युक्त अभावों का भर्ती के सिद्धान्तों से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। भर्ती की इस नीति में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का भारतीय सेना पर निःसन्देह गहरा प्रभाव पड़ेगा; और शायद अङ्गरेजों की दृष्टि में यह परिवर्तन भारतीय सेना का पतन होना जान पड़े। और यदि इस नीति में कोई परिवर्तन न हुआ तो सर वेलेन टाइन चिरोल के शब्दों में “भारतीय युद्ध-कला में प्रवीण भले ही बने रहें, परन्तु वे अपनी रक्षा करने में सदैव असमर्थ रहेंगे।”

अङ्गरेजों के भाषाकाश का दीसिमान तारा अभी अविराम गति से चमक रहा है और उसके प्रताप से उन्हें वे सब सहूलियतें और अधिकार बिना कष्ट के अपने आप प्राप्त हो जाते हैं, जो भारतवासियों को स्वयं में भी नसीब नहीं होते। साइमन कमीशन ने भारतीय सेना पर अयोग्यता और बर्बरता का लाञ्छन तो लगा दिया, परन्तु उसके सदस्यों ने इस बात के उल्लेख को आवश्यकता नहीं समझी कि भारतवासी उन्हीं की कूटनीति और करतूतों का ही तो यह फल भोग रहे हैं। उनकी राय से तो भारतीय सेना के इस पतन के कारण सैनिकों का जातीय सङ्गठन और उनकी पैतृक सैनिक अयोग्यता ही है। उन्होंने सैनिकों की महायुद्ध की भरती का अच्छा अध्ययन किया है, क्योंकि उससे उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में बहुत सहायता मिली है; परन्तु उन्होंने बलवे के इतिहास का अध्ययन

करने का कष्ट नहीं उठाया, क्योंकि उससे उनकी नीति का भण्डाफोड़ हो जाता। हमने जैसा बोया है उसी का फल भोग रहे हैं। बलवे के बाद से ब्रिटिश अफसरों ने जिस नीति से काम लिया है उससे भारतीयों का फ़ौजी जीवन बिल्कुल बदल गया है। अर्ध शताब्दी तक जिस नीति का अवलम्बन किया गया हो वह ग्रेटब्रिटेन की आपत्ति के समय उनकी इच्छा मात्र के इशारे पर एक क्षण में नहीं बदली जा सकती थी। बलवे के समय की भारतीय सेना की शक्ति और उसकी योग्यताओं पर ध्यानपूर्वक विचार करने से हमें उसी समय उनकी वर्तमान नीति की चाल का पता लग जायगा। और यदि हम फ़ौज के वर्तमान जातीय सङ्गठन और उससे उत्पन्न दोषों का ठीक-ठीक पता लगाना चाहें तो सिपाही-विद्रोह का इतिहास हमें शीघ्र ही उसकी तह में पहुँचा देगा।

सिपाही-विद्रोह के पहिले की बङ्गाल की सब से बड़ी फ़ौज हर प्रकार से युद्ध-कला में प्रवीण मानी जाती थी। जब विद्रोह की समाप्ति के उपरान्त ही उसका भी अन्त कर दिया गया, तब लॉर्ड एलिनबरा ने इन शब्दों में खेद प्रकट किया था :—

“मुझे यह सोच कर अत्यन्त दुःख होता है कि भारतीय सिपाहियों की जैसी योग्य सेना का अन्त कर दिया गया है वैसे सेना अब हमें देखने को भी न मिलेगी। वह एक ऐसी सेना थी जो अपने योग्य और श्रद्धेय जनरल की अध्यक्षता में डारडेनलीज़ पर भी विजय प्राप्त करती।

परन्तु यह वह फ़ौज थी, जिसका सङ्गठन वर्तमान भारतीय फ़ौजों से बिल्कुल निराले ढङ्ग पर हुआ था। पहिले उसमें प्रधानतः बिहार और दोआब के हिन्दु-स्तानी सिपाही भरती होते थे, और बाद में सिक्खों और पञ्जाबियों की थोड़ी संख्या सम्मिलित कर ली गई थी। इस फ़ौज में मुख्यतः ब्राह्मण, राजपूत और अहीर जातियों के व्यक्ति थे। फ़ौज में अधिकांश हिन्दू ही थे; और कुल रिसाले में मुसलमानों की संख्या २०० से अधिक न होगी।

परन्तु यू० पी० और बिहार की ऊँची जातियों के पुरविण अब ‘वीर लड़ाकू’ जातियों में नहीं गिने जाते। वे ‘वीर’ भले ही न गिने जावें। परन्तु जनरल मैकफेन का तो उनके सम्बन्ध में यही कहना है कि “वे लोग हष्ट-पुष्ट बलिष्ठ हैं; उनके चेहरे और शारीरिक सङ्गठन से वीरता चमकती है और वे अत्यन्त विनीत और आज्ञा-पालक होते हैं।”

विद्रोह के समय की सेना की दूसरी विशेषता यह थी कि “उस समय की सेना में जातीय भेद-भाव न था। कम्पनियाँ और पल्टनें जातियों के समूह में बँटी हुई न होती थीं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और पुरविण सब हिलमिल कर रहते थे, जिससे उनमें जाति-पाँति का भेद-भाव न रहता था और सबके हृदय में एक सी भावना रहती थी।”

विद्रोह के बाद ही जो जाँच कमेटी नियुक्त हुई थी और उसमें फ़ौजी अफसरों ने जो गवाहियाँ दी थीं उनमें से प्रायः सबने इस बात पर बहुत अधिक जोर दिया था कि यदि सेनाओं में भर्ती करने की यही नीति रही तो भारत में ब्रिटिश-सत्ता की रक्षा होना एकान्त असम्भव हो जायगा।

पील-कमीशन के सम्मुख, पञ्जाब के चीफ़ कमिशनर सर जॉन लॉरेन्स ने (जो बाद में भारत के वाइसराय और गवर्नर-जनरल होकर आए थे) जो मेमोरेण्डम रिपोर्ट पेश की थी उसमें उन्होंने लिखा था कि :—

“(विद्रोह के पहले की) फ़ौज में जो बहुतसे दुर्गुण थे, उनमें से एक जिसने हमारे ऊपर भयानक आघात

किया था, बङ्गाली सेना का ऐक्य और उनका आतृ-भाव था; और इसके लिए केवल दो ही औषधियाँ हैं। पहिली तो यह कि भारत में ब्रिटिश सेना की संख्या खूब बढ़ा दी जाय और दूसरे उनके जातीय ऐक्य में भेद-भाव उत्पन्न कर दिया जाय। यदि इन औषधियों का प्रयोग भारतीय सेना पर दस वर्ष पहिले कर दिया गया होता तो आज बङ्गाली फ़ौज बहुत अयोग्य और राज-भक्त सिद्ध होती।”*

भारतीय सेना के स्टॉफ़ के प्रमुख, मेजर जनरल डबल्यू० थार० मैन्सफील्ड ने यह बात और भी अधिक स्पष्ट कर दी है। उनका कहना है कि :—

“फ़ौज के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना काफी है कि जिस नीति से सेना में भर्ती की गई थी उससे उसमें पेशावर से कलकत्ता तक और हिमालय से नर्मदा तक एकता और आतृ-भाव उत्पन्न हो गया था। नर्मदा के उस पार से इस आतृ-भाव का अभाव हो गया और वहाँ की सेना ने वहाँ की सेना के विद्रोही भावों या उनकी आज्ञाओं को मञ्जूर करने से इन्कार कर दिया।

“बम्बई गवर्नमेण्ट ने सबसे पीछे अवध के पुरवियों के सुन्दर होने के कारण जो उन्हें अपनी फ़ौज में भरती करने की नीति ग्रहण की थी, उससे उसने अपनी और बङ्गाल की फ़ौज में आतृ-भाव उत्पन्न करने में बड़ी सहायता पहुँचाई। परन्तु हमारे सौभाग्य से वहाँ यह उत्पात पूर्ण रूप से न फैल पाया और इससे विद्रोह सफल न हो सका।”†

और फिर :—

“पुरानी रीति के अनुसार ब्रिटिश अफसरों के भारत की उच्च श्रेणी की जातियों से मिले रहने और नीच जातियों से अलग रहने के कारण उनमें वही भेद-भाव उत्पन्न हो गया था, जो एक राज्य में दूसरा राज्य स्थापित हो जाने से हो जाता है। विद्रोह की आग फैलने का मुख्य कारण यही था। फ़ौजों के इस विश्वास ने, कि उनके कर्नल उच्च जाति के सुन्दर और पढ़े-लिखे सैनिकों के प्रभाव में आकर ब्राह्मण बन गए हैं, उस आग को और भी अधिक भड़का दिया।”‡

इसका प्रभाव यह हुआ कि फ़ौज में बिहार और यू० पी० की उच्च जातियों में से सैनिकों की भर्ती बन्द होगई और तभी से दैलेखियों में हर प्रकार की जातियों की छोटे-छोटे समूहों में भरती करने की प्रथा चल पड़ी थी। इस सम्बन्ध में सर जॉन लॉरेन्स ने लिखा है कि :—

“उस जातीय भेद-भाव को सदैव बनाए रखने के लिए, जो हमारी सत्ता की रक्षा के लिए अमूल्य है, और जिसके कारण एक प्रान्त का मुसलमान, दूसरे प्रान्त के अपने ही मुसलमान भाई को घृणा और अवज्ञा की दृष्टि से देखने लगता है, इस बात की आवश्यकता है कि पल्टनें (Corps) आगे प्रान्तीय रहें, और उस प्रान्त में किसी ऐसे प्रान्त की जातियों के सैनिकों को भर्ती न किया जाय जिन्हें अन्य सैनिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। एक प्रान्त के हिन्दू मुसलमानों को उसी प्रान्त की सेना में भर्ती करो, किसी दूसरे प्रान्त की सेना में नहीं। यह आपस का भेद-भाव उस समय काम आएगा जब हम पर फिर कोई आपत्ति आएगी। इस प्रकार की नीति से भारतीय सेना में दो ज़बर्दस्त दुर्गुणों का प्रवेश हो जायगा। एक तो उनके हृदय से आतृ-भाव, जातीयता और राष्ट्रीयता निकल जायगी और दूसरे वे कोई ऐसे राजनीतिक असन्तोष या कुटिलता न फैलाने पाएँगे, (रोप मैर १७वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

* पील कमीशन की रिपोर्ट (१८५६) पुनः सङ्गठन सम्बन्धी पत्र, पृष्ठ १४।

† पील रिपोर्ट (१८५६) पृष्ठ ५७ और ६७

‡ पील रिपोर्ट पृष्ठ ६६।

बिहार के गाँधी त्यागमूर्ति बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी

[एक सत्याग्रही विद्यार्थी]

आज भारतमाता पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ी हुई नाना प्रकार के अत्याचार सह रही है। सौभाग्य से माता की बेड़ी काटने वाले भी अनेक वीर पैदा हो गए हैं। उन वीरों में 'बिहार के गाँधी' कहलाने वाले श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी का स्थान बहुत ऊँचा है।

जन्म और वंश-परिचय

श्री० राजेन्द्र बाबू का जन्म सन् १८८४ ई० की तीसरी दिसम्बर को बिहार प्रान्त के छपरा-ज़िलान्तर्गत जोरादेई नामक ग्राम में हुआ था। आपके पूज्य पिता वैद्य-भूषण बाबू महादेवसहाय जी एक सुप्रसिद्ध कायस्थ ज़मींदार एवं यशस्वी वैद्य थे। बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी दो भाई हैं। आपके बड़े भाई माननीय बाबू महेन्द्रप्रसाद जी हैं, जो पहले काउन्सिल ऑफ़ स्टेट के प्रभावशाली सदस्य थे। परन्तु काँग्रेस की आज्ञा पालन कर उक्त पद त्याग कर देश-सेवा कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबू के दो सुपुत्र भी हैं। बड़े का नाम बाबू सत्युजयप्रसाद जी, बी० ए० है तथा छोटे का नाम बाबू धनजयप्रसाद है, जो वर्तमान आन्दोलन में छपरा ज़िला के 'डिप्टेटर' हैं। आपका सारा परिवार ही देश-सेवा में लीन है।

विद्यार्थी जीवन

श्री० राजेन्द्र बाबू का विद्यार्थी-जीवन आदर्श जीवन है। पहले-पहल आप ग्राम की एक पाठशाला में बैठे गए। आपको उर्दू और फ़ारसी की शिक्षा दी गई। केवल आठ साल की छोटी आयु में आपने फ़ारसी की अच्छी

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

जिनकी उत्पत्ति प्रान्तों में एक दूसरी जाति के सम्मिश्रण से होती है। ”*

जनरल मैन्सफ़ील्ड की भी यही सलाह थी कि—“हमें कोई ऐसी क्रेंदीय बड़ी सेना उत्पन्न न होने देना चाहिए जैसा कि हाल में हमने तोड़ी है। उसके बदले हमें जगह-जगह ऐसी प्रान्तीय सेनाओं का सङ्गठन करना चाहिए जो एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न रहे।”

अपने इन विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए जनरल मैन्सफ़ील्ड ने निम्न लिखित उपाय बतलाए थे :—

“प्रान्तीय सेनाओं में मुसलमान और अन्य जातियों का अनुपात समान रहे। सेनाओं को नाची जाति की सेना और मुसलमानों की सेना में विभाजित किया जा सकता है। दूसरे रिसालों में हर एक जाति की अलग-अलग कम्पनियाँ बनाई जा सकती हैं, परन्तु जहाँ तक हो सके, हर एक रिसाले में दो कम्पनियाँ मुसलमानों की अवश्य हों। इस सम्बन्ध में जातियों की एकता कभी न रखना चाहिए; हर एक रिसाले में जितनी ही अधिक जातियों का समावेश हो सके, हमारे हक़ में उतना ही अच्छा है। इससे भविष्य में किसी विद्रोह या क्रान्ति में उनका सङ्गठित होना असम्भव हो जायगा।”†

(अगले अङ्क में समाप्त)

*

*

*

* पोल कमिशन रिपोर्ट पृष्ठ २०

† पोल रिपोर्ट पृष्ठ १००

योग्यता प्राप्त कर ली। इसके बाद पढ़ने के एक मिडिल स्कूल में आप हिन्दी-अङ्गरेज़ी पढ़ने लगे। मिडिल परीक्षा में आप सर्व-प्रथम आए। छात्रवृत्ति के साथ ही आपको एक रजत-पदक भी मिला। यहीं से जो स्कॉलरशिप मिलना आरम्भ हुआ, विद्यार्थी-जीवन तक मिलता ही गया। इसके बाद छपरा ज़िला स्कूल से कलकत्ता युनिवर्सिटी में एन्ट्रेंस परीक्षा में आप युनिवर्सिटी भर में फ़र्स्ट हुए। आपके पहले कोई भी बिहारी कलकत्ता युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट नहीं हुआ था। इसलिए आप 'बिहार-रत्न' कहलाने लगे। छात्र-वृत्ति के साथ ही स्वर्ण-पदक तथा कई अन्य पारितोषिक भी आपको मिले। अब आप कलकत्ता के प्रेज़िडेन्सी कॉलेज में पढ़ने लगे। क्रमशः एफ़० ए० और बी० ए० में भी आप कलकत्ता युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट हुए। छात्र-वृत्ति के साथ ही कई स्वर्ण-पदक मिले। इसी समय आपका परिचय एक अङ्गरेज़ से आपके प्रिन्सिपल ने यह कहते हुए कराया था कि—“This is the man who never stood second in the University” अर्थात्—“यह वही आदमी है जो कभी भी युनिवर्सिटी में सेकेंड नहीं हुआ।” पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि आप 'फ़ुटबॉल' आदि खेलों के भी अच्छे खिलाड़ी थे। बी० ए० पास करने के बाद आप अपनी फ़ुटबॉल-टीम के कैप्टन भी हो गए। इस खेल में भी आपको पारितोषिक मिला था। जब आप एम० ए० क्लास में पढ़ रहे थे, उसी समय कानून का भी अध्ययन करने लगे। एम० ए० परीक्षा के साथ ही बी० एल० परीक्षा भी दी। दोनों में प्रथम श्रेणी में छात्रवृत्ति के साथ पास हुए। परन्तु अबकी बार युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट नहीं हुए। इससे आपको हार्दिक दुःख हुआ। पुनः युनिवर्सिटी भर में फ़र्स्ट होने की आपने दृढ़ प्रतिज्ञा डाली। कुशाग्र बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा एम० एल० परीक्षा में आप इतने अधिक नम्बर लाए कि उतने कलकत्ता युनिवर्सिटी में उस समय तक कोई नहीं ला सका था। अबकी बार आप सारे भारतवर्ष में फ़र्स्ट हो गए। आपका नाम सारे देश और विदेशों में भी फैल गया। आप विद्यार्थी-समाज के आराध्य एवं पथ-प्रदर्शक नेता बन गए। विद्यार्थी जीवन ही में आपने 'बिहारी-छात्र सम्मेलन' नाम की संस्था को जन्म दिया, जो अब तक बिहारी विद्यार्थियों का उपकार कर रही है। आप लड़कपन ही से सादे वेष में रहते हैं। आज तक किसी ने आपको पान तक खाते हुए न देखा होगा। आप के विद्यार्थी जीवन का फ़ोटो मैंने अपनी आँखों से देखा है। उस समय आप किसी गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्रतीत होते थे। शौक की तो क्या बात, कोट तक बदल पर नहीं है। केवल एक धोती, एक कुर्ता, एक सादा टोपी तथा एक पञ्जाबी जूता पहने हुए हैं।

अध्यापकी और वकालत

विद्यार्थी जीवन के बाद श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी कलकत्ते के प्रेज़िडेन्सी कॉलेज में अङ्गरेज़ी के प्रोफ़ेसर हुए। आप विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त राजनैतिक एवं धार्मिक उपदेश भी देते थे। इसी समय से धर्म और नीति का अध्ययन करने लगे। कुछ दिनों के बाद आप मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) के भूमिहार-ब्राह्मण-कॉलेज में अङ्गरेज़ी के प्रोफ़ेसर होकर चले गए। आप

ही इस कॉलेज के प्रिन्सिपल भी होने वाले थे; पर कई अनिवार्य कारणों से आपने कॉलेज से सम्बन्ध छोड़ दिया। सन् १९११ ई० में ३७ वर्ष की उम्र में कलकत्ता हाईकोर्ट में आप वकालत करने लगे। आपके कानून सम्बन्धी ज्ञान का लोहा बड़े-बड़े जज तक मानते थे। आप शीघ्र ही कलकत्ते के एक सुप्रसिद्ध वकील हो गए। सन् १९१६ ई० में पटना हाईकोर्ट खुलने पर आप पटना में वकालत करने लगे। पटना हाईकोर्ट में आपकी वकालत यहाँ तक चमकी कि शीघ्र ही हाईकोर्ट की जजी के लिए आपका नाम लिया जाने लगा। उस समय आपकी मासिक आमदनी लगभग पन्द्रह हजार के थी। अपनी चलती वकालत त्याग कर आप महात्मा गाँधी के साथ चम्पारन चले गए। यहीं से आपका सार्वजनिक जीवन आरम्भ हुआ।

चम्पारन-सत्याग्रह

सन् १९१७ ई० के अप्रैल मास में महात्मा गाँधी जी पहले-पहल बिहार में आए। आपने राजेन्द्र बाबू का नाम सुन रक्खा था। अतएव आते ही वे पटना में राजेन्द्र बाबू के यहाँ पहुँचे। आपने राजेन्द्र बाबू की सहायता चाही, और वे फ़ौरन अपने परम मित्र बिहार के वयोवृद्ध नेता ब्रजकिशोर बाबू के साथ चम्पारन गए। उस समय निलहे-गोरों का अत्याचार गरीब किसानों पर अत्यन्त बढ़ गया था। चारों तरफ़ त्राहि-त्राहि मची हुई थी। उस समय राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू आदि नेताओं के साथ चम्पारन का सत्याग्रह महात्मा जी ने चलाया। सत्याग्रह का शङ्ख बजा और घोर आन्दोलन शुरू हुआ। राजेन्द्र बाबू तथा ब्रजकिशोर प्रसाद जी ने सारा खर्च अपनी जेब से दिया। सत्याग्रह की विजय हुई, निलहों का राज्य सर्वदा के लिए चम्पारन से चला गया। राजेन्द्र बाबू के सेवा-भाव को देखकर महात्मा जी भी दङ्ग रह गए। आपकी प्रशंसा करते हुए महात्मा जी ने 'अपनी आत्म-कथा' के दूसरे भाग में लिखा है कि—“राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू की जोड़ी अद्वितीय है। आपने प्रेम से मुझे ऐसा अपङ्ग बना डाला है कि आपके बिना मैं एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता हूँ।” पाठकों को चम्पारन का सत्याग्रह का इतिहास जानना हो तो राजेन्द्र बाबू की लिखी 'चम्पारन में महात्मा गाँधी' नामक प्रसिद्ध पुस्तक पढ़ें। सन् १९१७ ई० से आप काँग्रेस में भाग लेने लगे।

असहयोग आन्दोलन

आप सन् १९२० ई० से पूर्ण असहयोगी बन गए। कम से कम बिहार प्रान्त में तो आपके समान कोई भी त्याग न कर सका। आपने महात्मा गाँधी का सन्देश बिहार के देहातों तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया। सारे प्रान्त में घूम-घूम कर असहयोग का प्रचार किया। फल-स्वरूप अनेक वकीलों ने अपनी चलती वकालत त्याग दी। जिनमें से बहुत से वर्तमान आन्दोलन में भी जेल में तपस्या कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबू ने असहयोग आन्दोलन में कॉलेज और स्कूलों के बहिष्कार का प्रचार करते हुए सन् १९२० ई० में पढ़ने में 'बिहार-विद्यापीठ' नामक राष्ट्रीय कॉलेज स्थापित किया, जो अब भी अनेक देश-भक्तों को तैयार कर रहा है। आपके इस कॉलेज को, अभी थोड़े दिन हुए, बिहार के एक शिक्षा-प्रेमी ने तीन लाख रुपया दिया है। आप पहले उक्त कॉलेज में प्रिन्सिपल के पद पर थे। अब भी उसके वाइस-चान्सलर हैं। आपने ख़ास कर बिहार में चर्खे और खदर का प्रचार बहुत ही अच्छे ढङ्ग से किया और अब भी कर रहे हैं। स्वयं महात्मा जी ने आपकी प्रशंसा करते हुए 'हिन्दी-नवजीवन' में लिखा था—“बिहार-रत्न राजेन्द्र बाबू जिस प्रकार चर्खे और खदर का प्रचार कर मेरी सहायता कर रहे हैं, यदि सब प्रान्त के नेता वैसी ही सहायता करें, तो मैं विश्वास

दिलाता हूँ कि स्वराज्य बहुत जल्द आप से आप मिल जाय। मुझे दूसरा कुछ काम करने की आवश्यकता ही न पड़े।" राजेन्द्र बाबू अखिल भारतवर्षीय चरित्र-सङ्घ के सम्माननीय ऐजेण्ट हैं। खहर-प्रचार में महात्मा गाँधी के बाद आप ही का स्थान माना जाता है। आप नित्य नियमपूर्वक चरित्र भ्रमते हैं। आप कई प्रकार की हाथ की कारीगरी भी जानते हैं।

अन्य सेवाएँ

पटना यूनिवर्सिटी स्थापित होने पर आप ही उसके सीनेटर के पद पर बैठाए गए। आप कलकत्ता और पटना यूनिवर्सिटी के एम० ए० और कानून के परीक्षक भी होते थे। आपके समय में यूनिवर्सिटी का बहुत सुधार हुआ। 'अग्नेर-एज' (Under age) का झगड़ा पटना यूनिवर्सिटी से आप ही ने मिटाया। आप पटना म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन भी थे, परन्तु रचनात्मक काम में बाधा पड़ने से उक्त पद आपने त्याग दिया। आप हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं सुलेखक हैं। पटने का राष्ट्रीय पत्र 'देश' आप ही ने निकाला। बहुत दिन तक आप ही उसके सम्पादक भी थे। आपकी हिन्दी-सेवा से प्रसन्न होकर हिन्दी संसार ने आपको अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कोकोनाडा तथा बिहार प्रान्तीय ससम हिन्दी साहित्य-सम्मेलन दरभंगा का सभापति बनाया था। उक्त सम्मेलन जब पटना और कलकत्ता में हुआ था, तब आप ही स्वागत-मन्त्री थे। कायस्थ महासभा, जौनपुर के भी आप सभापति थे और कायस्थ जाति तो आपको श्री० चित्रगुप्त जी का दूसरा अवतार ही मानती है। सन् १९२८ ई० में आप यूरोप गए थे। कई भागों में भ्रमण कर भारत के दुःख की कथा विदेशियों को आपने सुनाया था, फ्रान्स का जगत-प्रसिद्ध विद्वान रोमाँ रोलाँ ने आपके आचरण पर मुग्ध हो आपको कई दिन तक अपने यहाँ ठहराया था। आप कई भाषाओं के विद्वान हैं, जैसे अङ्गरेज़ी, फ़ारसी, बँगला, हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी आदि। आप अछूतोद्धार सभा के सभापति भी रह चुके हैं।

वर्तमान आन्दोलन

सत्याग्रह संग्राम में बिहार प्रान्त के आप 'डिप्टेटर' तथा प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस के सभापति थे। आप अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस महासभा की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आप महासभा के प्रधान मन्त्री भी रह चुके हैं। वर्तमान आन्दोलन में बिहार का नेतृत्व करते हुए तारीख ५ जुलाई को छपरा में आप गिरफ्तार कर लिए गए। ऑर्डिनेन्स ५-६ के अनुसार आपको छै मास की सादी कैद की सज़ा दी गई और आज बिहारियों का हृदय-सम्राट त्यागमूर्ति हज़ारीबाग जेल में तपस्या कर रहा है!

* * *

गृह का फेर

यह बङ्गला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य केवल आठ आने!

'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

आर्य-समाज में संशोधन की आवश्यकता

ऋषि दयानन्द का कार्य

["एक आर्य"]

बा ईस करोड़ अधमरे-हिन्दुओं में आज जो राष्ट्रीयता और जीवन की नई लहर हमें दीख पड़ती है, इसका श्रेय उस पुरुष-श्रेष्ठ को है, जो आर्य-समाज के प्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध है। उसने जो आग अपने तेज और तप से जलाई, उसने हिन्दुओं की लाखों वर्ष की गुलामी और गन्दगी को भस्म कर दिया। उसने सोई हुई हिन्दू-जाति को ठोकर मार कर कहा—उठ! उठ!! ओ महाजातियों की माता उठ!!! भारत का यह विख्यात विद्वान, तपस्वी और इन्द्रिय-विजयी पुरुष जन्म भर विरोधों को अपनी मुठमर्दी से कुचलता हुआ आगे ही बढ़ा चला गया। उसने उस प्रचीन दीवार को ढा दिया, जिसमें हिन्दू-जाति कैद थी, उसने दिमागी गुलामी के सभी कारणों पर चोट की और विशुद्ध भारतीयता और विशुद्ध वैदिक धर्म के अनुसार, जहाँ तक मानव-समाज अध्यात्म या आधिभौतिक रीति से सुधारा जा सकता है, वहाँ तक उसे साहसपूर्वक सुधारा।

आज जो आतङ्क राजनीति का है—और लोगों के मन में उसकी उत्क्रान्ति होने से जैसा प्रबल आन्दोलन खड़ा हो गया है, उन दिनों वही आतङ्क धार्मिक विश्वास का था। क्या मजाल थी, कि कोई हिन्दू-धर्म की सत्यानाशी रुढ़ियों के विरुद्ध आवाज़ उठा सके। यह वह समय था, जब मुगल-साम्राज्य विध्वंस हो चुका था, जब सन् २७ का विप्लव एक बार हिन्दू-समाज को जोर से हिलाकर बेहोश कर चुका था और अङ्गरेज़ी सत्ता और भी अधिक जोर से जम कर बैठ गई थी!

उस समय विधवाओं का विवाह उच्च हिन्दुओं के लिए अतिशय भयानक पाप था। उससे थोड़े ही काल पूर्व तक विधवाएँ मुर्दे पति के साथ जीती जलाई जाती रहीं थीं और हिन्दुओं की सभी उन धर्म-पुस्तकों में, जो आम तौर से हिन्दू गृहस्थों में पढ़ी जातीं तथा आदर से देखी जाती थीं—स्त्रियों की कठोर और एक देशीय पातिव्रतधर्म की शिचा दी गई थी! पति ही उनका देवता—पति ही उनका परमेश्वर—पति ही उनका पूज्य पुरुष था—फिर वह पति चाहे कोढ़ी, कलङ्की, लुचा, लबार, बदमाश, शराबी, व्यभिचारी, चोर और नीच वृत्ति का ही क्यों न हो। धर्म-ग्रन्थों में ऐसे ही पतित पति की तन, मन, धन से सेवा किए जाना पतिव्रता का आदर्श बखाना गया था—और पति को पत्नी के प्रति कैसा रहना चाहिए—इसकी कोई मर्यादा न थी—प्रत्युत जहाँ जीते जी ऐसे भयानक घृणास्पद पति की देवता के समान पूजा करना उसका धर्म था—और उसके मर जाने पर जीवित उसके साथ जल जाने का विधान था, वहाँ पुरुषों को चाहे भी जितने विवाह कर लेने की खुली छुट्टी थी!!

बालिकाएँ अबोधवस्था में व्याही जाती थीं और रजस्वला कुमारी को देखने से ही उन बदनसीब पिताओं को पाप लगता था। और प्रायः बड़े-बड़े घरों की कन्याएँ शैशव अवस्था ही में व्याही जाती थीं और वे समर्थ होने से प्रथम ही प्रायः विधवा हो जाती थीं। न स्त्रियों को—न बालिकाओं को विद्या पढ़ाने का रिवाज था। न लड़कों की भाँति उनका सम्मान था, न उनका आदर से पालन होता था। वे पराए घर की कूड़ा-ककट समझी जाती थीं। ऐसा कोई घर न था, जहाँ विधवाओं का विलाप न हो, जहाँ नारियाँ पालतू पशुओं की भाँति

उद्देश्यहीन अपने जीवनो को अन्धकार में व्यतीत न करती हों!

अछूत और निम्न श्रेणी के पुरुष और स्त्रियों का जीवन हाहाकारपूर्ण था। वे सर्वथा मनुष्यता और नागरिकता के अधिकारों से पतित और तिरस्कारपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। वे पीढ़ियों से गन्दे काम करते, गन्दे रहते, जूठन और सड़ी-गली वस्तु खाते और घृणास्पद स्थानों में रहते थे, फिर उनके प्रति समाज की तनिक भी सहानुभूति न थी। छोटे और बड़ेपन की नीच भावना प्रत्येक के मन में थी, प्रत्येक पुरुष कुल-जाति में जिसको उच्च समझता था, उसके द्वारा चुपचाप अपमान सहन कर लेता था और जिसे अपने से नीचा समझता था उसका स्वयं अपमान करता था! उनको न इस लोक की किसी सुन्दरता का ज्ञान था—न परलोक का। विवेक और आत्मा सम्बन्धी बातें सुनने तक की सज़ा मृत्यु थी! वे अभागे मनुष्यों की योनि में जन्म लेकर करोड़ों की संख्या में अत्यन्त घृणास्पद नारकीय जीवन चुपचाप व्यतीत करते आ रहे थे।

ईसाई और मुसलमानों ने अपने-अपने ढङ्ग पर हिन्दुओं को खासकर उन अभागी और पतित नीच जातियों को अपने अन्दर लेना प्रारम्भ कर दिया था। और कोई भी हिन्दू—चाहे वह अति नीच ही क्यों न हो, किसी भी ईसाई या मुसलमान की छुई कोई वस्तु खाने पर ही जाति-वहिष्कृत समझा जाता था और उसका हिन्दू-समाज में रहना असम्भव समझा जाता था! दिन पर दिन हिन्दू-जाति का हास हो रहा था। वे ही नीच हिन्दू ईसाई और मुसलमान होकर, उनकी शह पाकर हिन्दुओं पर अधिकाधिक अत्याचार करते और अपने अपमानों का बदला लेते थे! लगातार सैकड़ों वर्षों से गुलामी के वातावरण में पिस कर हिन्दुओं में किसी भी प्रकार का कोई वीरतापूर्ण मुकाबला करने की सामर्थ्य नहीं रही थी। वे केवल कायर आक्रमण करते थे, और झूठे गर्व और थोथी बड़प्पन की डींग में ही अपनी शान समझते थे। हिन्दुओं की पुरानी संस्कृति खो गई थी। उनकी जातीयता नष्ट हो चुकी थी। वह अनगिनत जातियाँ और सम्प्रदायों में छिन्न-भिन्न हो रहे थे। जैसे कोई बड़ा भारी महल खण्डहर होकर ढह गया हो। उसमें न जीवन के लक्षण थे; न ज्योति थी! वह पुराने गौरवमय इतिहास की लोथ थी, जिसे ईसाई और मुसलमान बेफिक्री से पेट भर कर खा रहे थे, और कोई उन्हें रोकने वाला न था!

वह समय था; जब ऋषि दयानन्द ने जन्म लिया। वेदों का अध्ययन किया और सत्य मार्ग को खोजना प्रारम्भ किया। उसने मनन, विवेक और साहस एवं प्रतिभा से अपना नया मार्ग चुना। उसने अन्धविश्वासों और रुढ़ियों के विपरीत आवाज़ ऊँची की और वीरतापूर्वक वह लोगों के द्वार-द्वार जाकर चिल्ला कर सत्य का सन्देश देता रहा। उसने कष्टों की, विरोधों की, खतरों की, पर्वाह न की। उसने हिन्दू-धर्म का, हिन्दू-समाज का, हिन्दू संस्कृति का इस ढङ्ग से संशोधन करना चाहा कि उसकी मौलिकता और आत्मा का घात न हो। उसने पुराणों और फ़ालतू बातों में फँसे लोगों को प्राचीन वेद पढ़ने की सलाह दी, तन्त्र-मन्त्र में उल्लू बने लोगों को दर्शन

और उपनिषदों से आत्म-तत्त्व सीखने की रीति बताई। उसने असंख्य देवताओं के स्थान पर एक सर्व-शक्तिमान परमेश्वर की उपासना की सम्मति दी। उसने सब अन्ध-विश्वासों, सब कुरीतियों, सब मूर्खताओं को छोड़ कर, अन्तःकरण और विवेक से जीवित रहने की शिक्षा दी। उसने कन्याओं और स्त्रियों को शिक्षित करने का खुला विधान बता कर, उन्हें मानव समाज में बराबर का अधिकारी बताया। उसने धर्म-अष्ट हिन्दुओं की फिर से शुद्धि करके हिन्दुओं के हास को रोका। उसने विधवा-विवाह पर प्रकाश डाला और अछूतों के विषय में उदारता और न्याय से व्यवहार करने की सम्मति दी। उसने राजाओं को प्रजारजन और प्रजा को राजा का आज्ञाकारी बनने की सलाह दी। उसने स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, और यम-नियम के पालन पर जोर दिया। उसने शिल्प, व्यापार, सङ्गठन और समाज-शास्त्र के सच्चे और उन्नत उपायों को मनुष्यों के सम्मुख पेश किया और इस प्रकार वह प्रसिद्ध और महान धर्माचार्य और समाज-सुधारक हिन्दू जाति का एक सच्चा और साहसी सुधारक सिद्ध हुआ।

उसकी नैतिक सफलता आज बिल्कुल स्पष्ट है। हिन्दुओं की वह पुरानी दीवारें टूट गईं, हिन्दू जाति स्वतन्त्रता और विवेक से तेज़ी के साथ सभी सुधारों को कर रही है। हिन्दू घरों में आज असंख्य युवती कुमारिकाएँ बी० ए०, एम० ए०, एल०-एल० बी०, प्रोफ़ेसर, बैरिस्टर बनी हुई हैं। बाल-विवाह का तेज़ी से मूलोच्छेद हो रहा है। कन्या-शिक्षा और स्त्रियों के समानाधिकार की शैली क्या कुछ नहीं हो गई। अछूत लोगों को आज समाज में कन्धे से कन्धा भिड़ा कर देश के प्राङ्गण में खड़े होने के हौसले हुए हैं। और उन हिन्दुओं ने, जिन्होंने इन अछूतों को कभी नगर में भी गत ३ हजार वर्षों से बसने नहीं दिया था, उन्हें लाट साहेब की कौन्सिल का सफल सदस्य बना दिया है! ईसाई और मुसलमान, जो २२ करोड़ हिन्दुओं को अपना नर्म भोजन समझते थे—और २२ करोड़ हिन्दू उनसे सदैव भयभीत रहते थे, आज वे ५ लाख आर्यों से, न केवल भयभीत हैं; प्रत्युत उनकी प्रगति एकदम रुक गई है। आज हिन्दू समाज ने खुल्लमखुल्ला शुद्धि को अपना लिया है। लाखों परिवार फिर से सैकड़ों वर्ष बाद हिन्दू होकर बिरादरी में मिल गए हैं, और मिलते जा रहे हैं!

जब मैं गत दो हजार वर्षों के हिन्दू-धर्म के इतिहास पर दृष्टिपात करता हूँ, तो मैं कह सकता हूँ कि ऋषि दयानन्द जैसा सफल और तेजस्वी धर्म और समाज का संशोधक इस बीच में नहीं पैदा हुआ। और हिन्दू जाति को नवयुग का उन्नत रूप देने का सच्चा श्रेय उसी ब्रह्मचारी पुरुष-श्रेष्ठ को मिलना चाहिए। उस पुरुष-श्रेष्ठ की मृत्यु को आज ४७ वर्ष व्यतीत हो गए। इस ऋषि ने ६० वर्ष शरीर धारण किया और सिर्फ २० वर्ष तक उन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रचार और आविष्कार किया। जिसमें प्रारम्भ के ११ वर्ष तक वे केवल अपने सिद्धान्तों पर मनन करने, विचारों को स्थिर करने, एवं भारत भर में भ्रमण करने और छोटी-छोटी कुरीतियों के विरुद्ध साहसपूर्ण उपदेश करने में लगे रहे। मृत्यु से ६ वर्ष प्रथम उन्होंने लेखनी पकड़ी और नौ वर्ष के अन्दर उन्होंने इतने ग्रन्थ लिखे।

१—पाखण्ड खण्डन—जिसमें भागवत का खण्डन है। यह रिसाला आगरे में लिखा गया था। वह आगरा दरबार पर और सं० १८७४ के हरिद्वार कुम्भ पर बाँटा गया था।

२—अद्वैत मत खण्डन—नवीन वेदान्त के खण्डन में संस्कृत और हिन्दी में १८७० में छपा गया।

३—शास्त्रार्थ काशी—जो दुर्गा-कुण्ड पर काशी-

नरेश के समक्ष स्वामी विशुद्धानन्दादि से हुआ था। १८६९ में छपा।

४—प्रतिमा-पूजन विचार—१८७७ में कलकत्ते में छपा, जब ताराचरण तर्करत्न भट्टाचार्य से शास्त्रार्थ हुआ।

५—पञ्च महायज्ञ विधि—सम्बत् १९३० में छपा, जब गङ्गातट पर स्वामी जी थे।

६—सत्यार्थप्रकाश—सन् १८७४ में लिखवाया गया। जिसमें बहुत से शास्त्रार्थों के नोट और व्याख्यानों के मसाले का संग्रह पण्डितों से करा लिया गया था। सन् १८७५ में स्टार प्रेस बनारस में राजा जयकृष्णदास ने अपने खर्च से छपाया। यह ४०० पृष्ठों का अपूर्ण ग्रन्थ था। वह फिर संशोधित होकर सन् १८८२ में प्रयाग में छपा गया। वह तीसरी बार स्वामी जी की मृत्यु के बाद सन् १८८७ में छपा गया।

संस्कार विधि—जिसमें १६ संस्कारों का वर्णन है, प्रकाशित की गई।

इनके सिवा—आर्याभिनिनय; बल्लभाचार्य मत खण्डन; स्वामीनारायण-मत खण्डन; वेदान्त भ्रान्ति-निवारण आदि छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी और छपी गई। इसके बाद ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और वेद-भाष्य लिखे गए।

महर्षि दयानन्द

के उत्तराधिकारी

आज क्या कर रहे हैं, इस विषय पर 'भविष्य' के आगामी अङ्क में प्रकाश डाला जायगा, जिसे प्रत्येक आर्य-समाजी को पढ़ना चाहिए और अपनी कमजोरियों पर ध्यान देना चाहिए।

हुक् ज़ी

इसी विषय पर एक बड़ी चुटीली चिट्ठी भी आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ भेजेंगे।

इस महान कार्य का आरम्भ सन् १८७५ से हुआ और इसके आठ वर्ष बाद सन् १८८३ में उनकी मृत्यु हुई। इस प्रकार ८ वर्षों में उन्होंने यजुर्वेद सम्पूर्ण और ऋग्वेद तीन-चौथाई का भाष्य किया और भूमिका लिखी, जो वैदिक साहित्य में अद्वितीय है।

यह समस्त साहित्य क्राउन साइज़ १६ पेजी के लगभग १० हजार पृष्ठ का हो जाता है, जो जीवन के अन्तिम नौ वर्ष में उन्होंने लिखा था। इसी बीच में उन्होंने लगभग १५ हजार मील की यात्रा की (उन दिनों रेल का सर्वत्र सुभीता न था) ३००० व्याख्यान दिए, १५० शास्त्रार्थ किए। विद्यार्थियों को पढ़ाना; प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात और चर्चा चलाना सब इसके साथ है।

इस प्रकार यह तेजस्वी तपस्वी इतना अधिक कार्य अपने जीवन के नौ वर्ष में कर गया, जिसने भारत की प्राचीन संस्कृति पर नवीन जीवन का सिका बैठा दिया। परन्तु उसकी मृत्यु के बाद आर्य-समाज जो उसका स्थानापन्न संस्था थी, कितना आगे बढ़ी और उसने क्या किया! इस पर विचार करना हमारे लिए परमावश्यक है। पाठकगण 'भविष्य' के आगामी अङ्क की प्रतीक्षा करें।

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

एक पापकामा व्यभिचारिणी ने उसे खरीद लिया !!!
उसने—

उसके महाकाय भवन को पुरातत्व विभाग का कौतुकागार बनाया। अधम प्राणी की तरह उस महान बूढ़े को पींजरे में एक कौतुक-दृश्य की तरह उस कौतुकागार के द्वार पर लटका दिया। जिन जातियों की माताएँ उस पर मोहित थीं—वे—विज्ञान और अर्थवाद की अन्धी बालिकाएँ—गर्वित-ग्रीवा उन्नत किए—उसे और उसके घर को अपने मनोरंजन के लिए देखने आईं।

देव-दुर्लभ रजकण, अपदार्थ और सर्व सुलभ हुए।

रहस्यमयी ज्ञान-गुहा विदीर्ण हुई।

अगम्य पन्थ सर्वालोकित हुए।

वहाँ की अप्रतिभ रत्न-राशि उन बालिकाओं की क्रीड़ा-कन्दुक बनी।

युगों की परिश्रम-साध्य-सम्पदा जीर्ण-शीर्ण और छिन्न-भिन्न हो गई।

हठात् निर्धूमोदय हुआ।

* * *

हठात् निर्धूमोदय हुआ।

कर्मयोग का पुण्य पर्व आया।

कैलाशी रौद्र तेज से श्रोत-प्रोत हो, उत्तर के उत्तुङ्ग हिमाचल-श्रृङ्ग से उठ कर दक्षिण में आसीन हुए।

यम ने दक्षिण दिशा का त्याग किया।

भारत के भाग्य फिर।

दक्षिण में भारत का ध्रुव उदय हुआ।

पुण्यवती पूना को तिलक मिला।

नव्य काल का महाभाग बाल वहाँ अवतीर्ण हुआ।

पृथ्वी ने उसे गरिमापूर्ण गाम्भीर्य दिया।

जल ने उसका हृदय निर्माण किया।

तेज स्वयं शुभ दृष्टि में आसीन हुआ।

वायु ने सूक्ष्म गमन की शक्ति प्रदान की।

आकाश ने विविध विषय व्यापकता दी।

चण्डात्प ने दुर्धर्ष तेज दिया।

वज्रपाणि ने दन्तावलि को वज्रधुति दी।

यम ने अमरत्व का पट्टा दिया।

महालक्ष्मी उसके दुपट्टे की कोर पर बैठी।

शारदा कण्ठ का हार बनी।

बालारुण ने रश्मियों के प्रतिविम्ब से पगड़ी को लाल किया।

इस प्रकार वह देवजुष्ट सत्त्व तिलक बन कर भारत के मस्तक पर शोभायमान हुआ।

* * *

इस प्रकार वह देवजुष्ट सत्त्व तिलक बन कर भारत के मस्तक पर शोभायमान हुआ।

एक बार वह भूखण्ड सुशोभित हुआ।

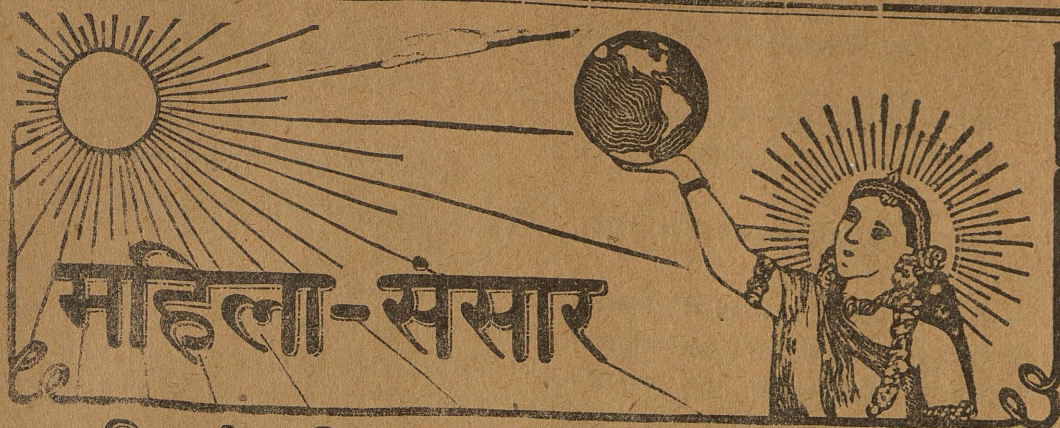
करोड़ों हृदयों से चिरजीव होने की कामनाएँ प्रस्फुटित हुईं।

वह, महाप्राण, महाघोष, महानरवर, अरुण अभि-शिखा और धवल यश के समान केसरी आरुढ़ हुआ।

महामाया ने आँचल डाल कर बलैयाँ लीं। पद्मा शुभ्र शरद के श्वेत पद्म पर बैठ कर रत्न-थाल लेकर पूजने आई। सरस्वती ने वीणा लेकर ताल-स्वर-मूर्च्छानायुक्त विरदावली गाई। रणचण्डी ने भीषण अट्टहास किया, वह उल्लसित होकर, किलकारी भर कर, नर-खप्पर हाथ में लेकर उठी।

तब तक ?

* * *



एशियाई महिला कॉन्फ्रेंस को फ़ारस का पत्र

तेहरान से फ़ारस की 'देश-भक्त महिला सभा' (Society of Patriotic Women) की अध्यक्ष ने, 'एशियाई महिला कॉन्फ्रेंस' की ऑनरेरी सेक्रेटरी रानी लक्ष्मीबाई जी, राजवाड़े को कॉन्फ्रेंस के निमन्त्रण-पत्र के उत्तर में निम्न आशय का पत्र भेजा है :—

आपका १४ वीं जून का सम्माननीय पत्र और मेरी विदुषी बहिनों की छपी हुई विज्ञप्ति, जिसमें पूर्वीय स्त्रियों के आवश्यक सुधारों और उनके सज़्जन का सन्देश निहित था, मुझे यथा-समय प्राप्त हुई और मैंने उसे बड़े आदर और आनन्दपूर्वक पढ़ा, क्योंकि वह विभिन्न पूर्वीय राष्ट्रों की स्त्रियों के उद्भव की आशा का श्रोत थी; और उससे उनकी उत्सुकता और उत्साह टपकता था। पूर्वीय स्त्रियों में बहुत काल से इस प्रकार के सज़्जन और सम्मेलन की आवश्यकता थी; और यह बात बिल्कुल स्वाभाविक थी और मैं आप सहृदय बहिनों को, पूर्वीय राष्ट्रों की स्त्री-कॉन्फ्रेंस के सज़्जन और सञ्चालन के लिए, अपनी ओर से तथा 'फ़ारसी महिला-सभा' की सदस्याओं की ओर से हार्दिक धन्यवाद देती हूँ; और सर्व-शक्तिमान से उसकी सफलता के लिए प्रार्थना करती हूँ। आपने कॉन्फ्रेंस में सम्मिलित होने का जो निमन्त्रण-पत्र भेजा है, उसके लिए मैं आपकी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, परन्तु दुर्भाग्यवश गत महासमर में मेरे कुटुम्ब को बहुत हानि और क्षति पहुँचने के कारण, मैं उसके सञ्चालन और प्रबन्ध के लिए वाध्य हो गई हूँ और इसलिए इस सम्मान और अपूर्व अवसर का लाभ उठाने में असमर्थ हूँ। तिस पर भी मैं कॉन्फ्रेंस में एक फ़ारसी प्रतिनिधि भेजने का प्रबन्ध अवश्य करूँगी और यदि यह सम्भव न हो सका, तो मैं विश्वास दिलाती हूँ कि भविष्य में हमारा एक प्रतिनिधि उसमें अवश्य उपस्थित रहेगा।

गार्हस्थ्य सुधारों की न्यूनता

यद्यपि सम्राट 'शाह' ने बुराई छोड़ कर बाहर निकलने की आज्ञा दे दी है और फ़ारसी महिलाएँ अपने पतियों के साथ थियेटर, सिनेमा, नाच-बाराँ और इसी प्रकार के अन्य तमाशों में जा सकती हैं, तो भी मुझे बड़ा अत्यन्त शोक के साथ कहना पड़ता है कि फ़ारसी स्त्रियाँ, पेरिस की नए से नए फ़ैशन को नक़ल करने के लिए ज़ालायित रहने पर भी, गार्हस्थ्य सुधारों की अवहेलना करती हैं; और इसलिए वे सामाजिक और नागरिक अधिकारों और स्वयं अपने स्वत्वों की परवाह नहीं करती। यह हमारे देश की थोड़ी सी स्त्रियों के अथक परिश्रम, प्रयत्न और असाधारण चमत्ता का ही परिणाम है कि यूरोप और एशिया की विभिन्न सभाओं का ध्यान हमारी ओर आकर्षित होने लगा है; और यदि हमारी सभा की सदस्याओं में वह सहनशक्ति और प्रतिरोध शक्ति न होती, जिसका परिचय उन्होंने उसके उद्देश्यों के प्रचार में दिया है, तो हमें बाहरी संसार से

इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करने का सुअवसर प्राप्त न होता। मैं आशा करती हूँ कि हम उन बहिनों की सहायता और सहायभूति से, जो स्त्री-जाति की भलाई और उनके उत्थान का अविरल प्रयत्न कर रही हैं, अपनी कठिनाइयों और कुप्रथाओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगी।

सामाजिक असुविधाएँ

मुझे विश्वास है कि आपको पूर्वीय स्त्रियों की उस कॉन्फ्रेंस का हाल ज्ञात होगा जो इसी वर्ष डिमॉस्कस (सीरिया) में नूरी खानूम हिमादे बेग के सभापतित्व में हुई थी और जिसमें फ़ारस, ईजिप्ट, सीरिया, टर्की, पेलेस्टाइन, इराक़ और भारत की प्रतिनिधि महिलाएँ उपस्थित थीं और जिसमें कोदशे खानूम अशराफ़, जो आजकल बेसूट में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, हमारी प्रतिनिधि होकर गई थीं। उपर्युक्त कॉन्फ्रेंस की कार्यवाही ने यह साफ़ ज़ाहिर कर दिया कि जब तक हम मुसलमान स्त्रियाँ अपने मनुष्यत्व के अधिकारों को प्राप्त न कर लेंगी, तब तक हम अपनी उन्नति और आदर्श के पथ पर कभी अग्रसर न हो सकेंगी और न अपनी गुलामी की बेड़ियाँ ही काट कर फेंक सकेंगी। इसलिए हमें अपने वर्तमान पारिवारिक सज़्जन की पोल खोलने और कॉन्फ्रेंस में निम्न प्रश्नों पर प्रस्ताव पेश करने के लिए बाध्य होना पड़ा था :—

(१) लड़कियों का विवाह १६ वर्ष की आयु से कम में न होने पावे।

(२) बहु-विवाह की प्रथा उठा दी जाय।

(३) स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें यूरोप और अमेरिका के सम्य देशों की स्त्रियों की तरह सुविधाएँ देने के लिए सलाह के क़ानून में सुधार किए जायँ।

जिन-जिन देशों की प्रतिनिधि-महिलाएँ कॉन्फ्रेंस में उपस्थित थीं, उन सभी देशों की गवर्नमेंटों से हमने एक विज्ञप्ति द्वारा इन माँगों पर विचार करने की प्रार्थना भी की थी। मैंने इस सम्बन्ध में 'स्थायी पतियों' शीर्षक एक लेख लिख कर सुप्रसिद्ध स्थानीय पत्र श़ाईके-ए-सुख़ (Shaipek-i-Sorkh) में प्रकाशित किया था। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस समय तक खुले-आम कोई ऐसे विषयों पर विचार तक न कर सकता था, और यद्यपि मुझे इस सम्बन्ध में कुछ सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों की सहायभूति और सहायता प्राप्त हुई है, तिस पर भी उनमें से एक भी स्त्री या पुरुष मुझे सहमत नहीं हैं। कुछ भी हो, इन तीन प्रश्नों के सम्बन्ध में इस कॉन्फ्रेंस में कोई प्रस्ताव पास न हो सका।

पूर्व की दूसरी सभाओं और सज़्जों के सम्बन्ध में मैं आपको नूरी खानूम हिमादे बेग को पत्र लिखने का परामर्श दूँगी, क्योंकि पूर्वीय देशों की निमन्त्रण-पत्र उन्होंने दिए थे और उस सम्बन्ध में उन्हें ही अधिक ज्ञान है। कोदशे खानूम अशराफ़ भी इस सम्बन्ध में आपको बहुत-कुछ बतला सकेंगी। यदि आपको समुचित ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है तो ज़रूरत पड़े

वैज्ञानिक उन्नति और मज़दूर

[श्री० प्राकशचन्द्र जो, बी० ए०]

साधुवादियों की बातें सुन कर बहुधा लोगों को यह सन्देह होता है कि वैज्ञानिक उन्नति ने ही मज़दूरों को पूँजीपतियों का गुलाम बना दिया है। बहुधा लोग यह समझते हैं कि इस उन्नति से मज़दूरों को नुक़सान के अतिरिक्त कुछ भी फ़ायदा नहीं है। पर यह मत सर्वथा ग़लत है। विज्ञान स्वतः ख़राब नहीं है। असल बात इसके बिलकुल विपरीत है। विज्ञान से मनुष्य जाति मात्र का, न कि केवल जाति विशेष का, लाभ हो सकता है। हाँ, यह ज़रूर सच है कि आजकल के पूँजीवाद वाले समाज में इससे मज़दूरों को बहुत हानि भी पहुँची है।

विज्ञान के द्वारा ही हम लोग बहुत से ऐसे कार्य कर सके हैं, जो कि मनुष्य के बाहुबल के बाहर हैं। आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति के पहिले लोगों की जो दशा थी, वह कई तरह से बहुत ख़राब थी। अकाल पड़ने पर दूर से अन्न ही नहीं आ सकता था और एक जगह के रहने वालों का जीवन केवल वहाँ उत्पन्न होने वाली वस्तुओं पर ही अवलम्बित था। अब हमको दुनिया की सारी चीज़ें बहुत सस्ती कीमत पर घर-बैठे मिल सकती हैं। हमारे पूर्वज रात-दिन के कठिन परिश्रम के बाद प्रकृति की भरी खानों में से केवल बहुत छोटे से भाग का उपभोग कर सकते थे। उनका परिश्रम केवल उनके बाहुबल पर आधार रखता था और उनके हथियार केवल अनगढ़ लकड़ी-लोहे या पत्थर के थे, जिनसे दिन-रात परिश्रम करने के बाद भी वे जीवन की सुविधा की चीज़ें नहीं पा सकते थे।

अब हमारी सेवा में प्रकृति की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ उपस्थित हैं। बिजली, हवा, पानी, भाप ऐसी शक्तियाँ हैं, जो करोड़ों मनुष्य की शक्ति को अपने सामने कुछ नहीं समझती, ये विज्ञान द्वारा ही हमारे वशीभूत होकर काम कर रही हैं। हम अब सब भारी तथा परिश्रम के काम इन शक्तियों को सौंप सकते हैं। पानी भरना, पढ़ा सींचना लोहा ठोकना, चूल्हा धौंकना और अन्य अगणित कष्ट-साध्य तथा परिश्रम के कार्य उन्नतिशील देशों में बहुत कम लोग करते हैं। यदि हम यह कहें कि मज़दूरों को विज्ञान का विरोध इसलिए करना चाहिए, चूँकि वह परिश्रम के कष्ट-साध्य कामों को संसार से उठाए दे रहा है, तो यह सूर्यता नहीं तो और क्या है? विज्ञान में हमको मज़दूरों के दुःख दूर करने का बीज देखना चाहिए। थोड़े परिश्रम से ज़्यादा और अधिक उपयोगी उत्पत्ति हो, इससे अच्छी संसार के लिए और कौन सी बात हो सकती है? पूँजीवादी देशों में विज्ञान का दुरुपयोग अवश्य किया जाता है, पर यह एक अलग बात है और उसके सुधार के उपाय दूसरे हैं। पर इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि वैज्ञानिक उन्नति द्वारा मज़दूरों का कल्याण होगा, यदि उसका सदुपयोग किया जाय।

कुरबान, जो बेसूट में औषधि-शास्त्र का अध्ययन कर रहे हैं, आपकी चिट्ठियाँ नूरी खानूम हिमादे बेग और कोदशे खानूम अशराफ़ के पास पहुँचा देंगे।

तुर्किस्तान की स्त्रियों के सम्बन्ध में, वहाँ बोल्शेविक राज्य की स्थापना के बाद से मुझे कुछ विशेष हाल मालूम नहीं है। बोल्शेविक उथल-पुथल के पहले ट्रान्स-काकेशिया की स्त्रियों की सज़्जित संस्थाएँ थीं; और कज़व की स्त्रियाँ बहुत उन्नत थीं। जिन शिक्षित कज़व स्त्रियों और लड़कियों से मुझे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, उनमें से मैंने बहुतों के विचार समुन्नत पाए।

*

*

*

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में देशी रियासतों की ग़रीब प्रजा के प्रतिनिधि



महाराजा वडोदा



सर मिर्ज़ा मुहम्मद इस्माइल



नवाब सर मुहम्मद अकबर हैदरी



महाराजा दरभङ्गा



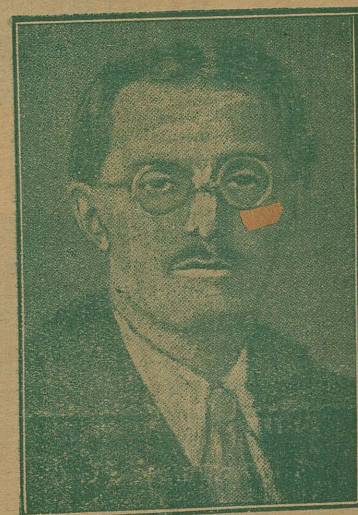
सर प्रभाशङ्कर पट्टमी



सैयद सर सुलतान अहमद



अभी हाल में मिस स्लेड (मीराबाई) कोकोनाडा के गाँधी-स्कूल का निरीक्षण करने गई थीं। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था।



श्री० के० एफ० नरीमैन
बम्बई के प्रचण्ड उत्साही और
निर्भीक नेता

राजनीतिक क्षेत्र में भारतीय महिलाओं का पदार्पण



(१)

(१) श्रीमती शुकदेवी शालीवाल, जो आगरे की एक सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री हैं और जिन्हें हाल ही में छः मास की सश्रुत कैद की सज़ा दी गई है।

(२) श्रीमती कोहली—आप दिल्ली के महिला-वालगिट्यर इल की प्रधान सञ्चालिका थीं, आलकल राष्ट्रीय आन्दोलन में नेल में सज़ा पूरी कर रही हैं।

(३) श्रीमती विद्यावती—आप आगरे की एक उत्साही कार्यकर्त्री हैं।



(२)



(३)

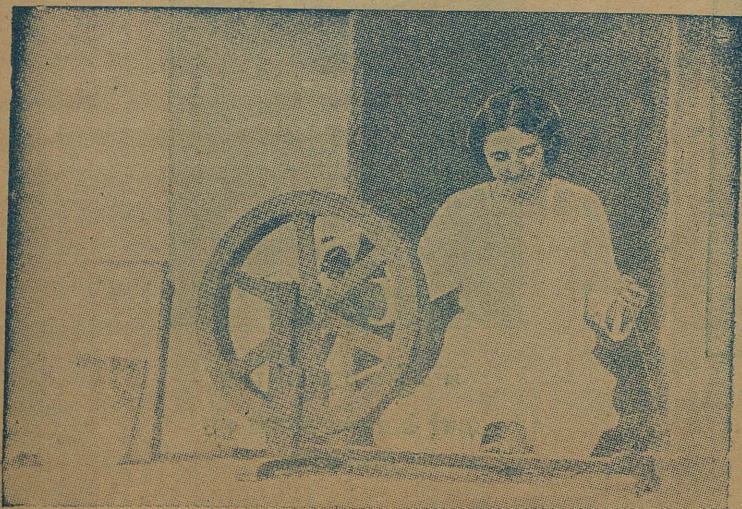
(४) श्रीमती पार्वती देवी डिडवानिया, जो दिल्ली की एक प्रभावशाली प्रचारिका हैं और जिन्हें दफ्ता १२४-ए में छः मास का दण्ड दिया गया है।

(५) श्रीमती मीराबाई, (मिस स्लेड) जो यूरोपियन होते हुए महात्मा गाँधी और भारतीय आदर्श की अनन्य भक्त हैं और तन-मन से भारत की सेवा में लगी हुई हैं।

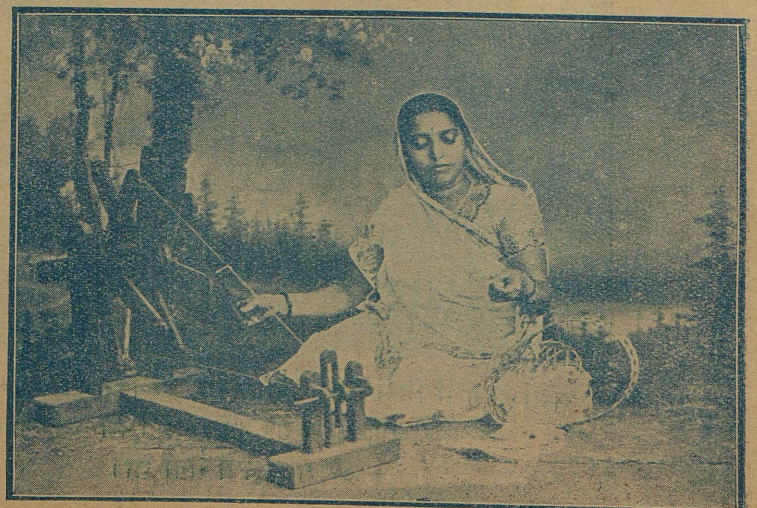
(६) श्रीमती छोटाबाख वंलाभाई गाँधी मानिक जवेरी—आप भड़ोंच (गुजरात) की एक प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्री हैं।



(४)



(५)



(६)

उन्नति के मैदान में भारतीय महिलाओं की दौड़



श्रीमती मथुरा रामराव नादकर्णी
आप बम्बई के सुन्दरदास मेडिकल कॉलेज में अध्ययन
करती हैं। और कन्वोकेशन में दो पदक प्राप्त किए हैं।



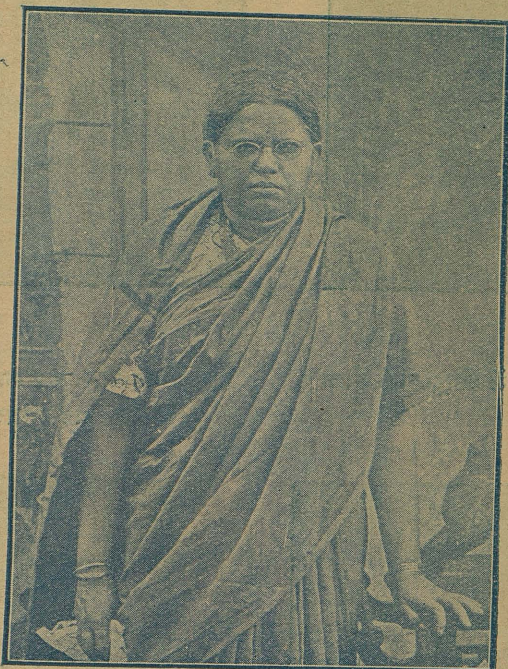
मिसेज ए० स्कॉट
आप नागापटम (मद्रास) के बॉय स्काउट की प्रेजिडेंट
हैं, और हाल ही में वहाँ की हेल्थ एसोसिएशन की
भी वाइस-प्रेजिडेंट नियत की गई हैं।



श्रीमती धर्मशीला जायसवाल, एम० ए०
आप बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने विन्यायत गई हुई हैं।



मिस एल० डी० सौजा, बी० एस-सी० (लन्दन)
आप वानीविलास इन्स्टीट्यूट, बङ्गलौर की हेडमास्टर
नियत की गई हैं।



श्रीमती बी० शेषम्मा
आप कोको नाडा (मद्रास) की सुप्रसिद्ध स्त्री-शिक्षा
प्रचारिका ह। 'हिन्दू-सुन्दरी' नामक एक मासिक
पत्र का सम्बालन भी करती हैं।



श्रीमती गौरी पवित्रम, बी० ए०, एल० टी०,
एम० एल० सी०
आप चित्तूर (मद्रास) के गर्ल्स हाईस्कूल की
अध्यापिका नियत की गई हैं।



श्रीमती अमिता बन्धोपाध्याय, एम० ए०
आप स्टेट स्कॉलरशिप पावर ऑक्मफंड में साहित्य



श्रीमती पावतीबाई कार्तिक
आप थाना (बम्बई) के काङ्ग्रेस स्वयंसेविका सङ्घ



मिस मिथिल मेल कुड
आप सिक्र १९ वर्ष की आयु में न्यूइडन की लिबरल

पशु-जगत के कुछ अद्भुत नमूने



गेरेजा

यह अफ्रीका में पाया जाने वाला एक बन्दर है, जिसके पैरों में अँगूठा नहीं होता



ओरङ्गूटन

यह लाल रङ्ग का बन्दर है, जो वनमानुस की तरह होता है।
यह सुमात्रा और बोर्नियो में पाया जाता है।



लम्बी नाक वाला बन्दर

यह भी बोर्नियो में पाया जाता है, इसका रङ्ग और आकृति दोनों ही बड़े स्वेताकर्षक होते हैं।



सफेद बालों वाला गेरेजा

यह जङ्गल से मिलता जुलता एक बन्दर है, जो अफ्रीका के न्यज़ा प्रदेश में पाया जाता है। इसके बालों से बने मफलर बहुत बढ़िया समझे जाते हैं।

नवीन अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान भाग्य-विधाता नादिरशाह

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

संसार के उन मुकुटधारियों की सूची में, जिन्होंने अपने जीवन का कुछ भाग भारत की भूमि पर बिताया है तथा जो भारत के वैभवशाली इतिहास, अर्थ-किक कला, और विज्ञान का अध्ययन कर जीवन-संग्राम में प्रोत्साहित हुए हैं, उनमें अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह नादिर शाह का भी नाम है। निर्भीक, कार्यशील, निर्भिमानी नादिरशाह को अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर बैठने की कभी इच्छा या लालसा नहीं। अफ़ग़ानिस्तान के राजाओं से उसका हरदम बिकट का सम्बन्ध रहा, पर राजसिंहासन पर बैठने की अभिलाषा कभी उसके दिव में नहीं उठी थी।

नादिरशाह संयुक्त प्रान्त के देहरादून नगर में पैदा हुआ था। जब वह बीस वर्ष से कम का था, तभी उसके माता-पिता भारत छोड़ कर काबुल को चले गए थे। इसी तरह उसने अपने जीवन के लगभग बीस वर्ष भारत की रहस्यमयी भूमि पर बिताए हैं और देहरादून की वन्य सुन्दरता का आस्वादन किया है।

वह अफ़ग़ानियों की दुर्गामी जाति की सुहृद्मज्जई शाखा में पैदा हुआ है, और इसी तरह भूतपूर्व राजा अमानुल्ला और नादिरशाह के पूर्वज एक ही हैं। इसलिए इस नए परिवर्तन से राजवंश में कोई फ़रक़ नहीं हुआ है।

नादिरशाह के पिता भूतपूर्व सरदार मुहम्मद यूसुफ़ खाँ थे, जो कि अमीर हबीबुल्ला खाँ के दरबार में माननीय उमरा थे। इनका देश में बड़ा मान था और लोगों पर इनका बड़ा प्रभाव था। अमीर को स्वयम् इन पर इतना अधिक विश्वास था कि ये उनके हरदम के साथी थे और इनके पूछे बिना वह कोई भी काम नहीं करते थे। इनकी बुद्धिमत्ता के ही कारण अमीर हबीबुल्ला राज्य में शान्ति स्थापित कर सके थे और मजबूत स्वाधीन राष्ट्र की नींव डाल सके थे। विदेशी कार्यों में स्वाधीनता दिखाने की नीति तो असल में अमीर हबीबुल्ला ने ही शुरू की थी, और इसमें सरदार मुहम्मद यूसुफ़ खाँ का पूरा हाथ था। नादिरशाह ऐसे वेदब राजनीतिक आचार्य का लड़का है। उसने अपने पिता की कार्यशीलता, चारित्रिक दृढ़ता तथा राजनैतिक दूरदर्शिता पूरी तरह से पाई है।

भारत से काबुल पहुँचने पर युवक-नादिर फ़ौजी कॉलेज में भर्ती हुआ और पूरी शिक्षा पाने के बाद उसने अफ़ग़ानी फ़ौज में नए अफ़सर का पद ग्रहण किया। आरम्भ से ही उसने बड़ी बुद्धिमानी तथा साहस दिखाया और उसे बड़ी जिम्मेदारी के काम दिए जाने लगे। इसलिए पहले से ही अफ़ग़ानिस्तान की भीतरी और बाहिरी रक्षा की बातों से उसका सम्बन्ध हो गया था और इन समस्याओं को हल करने में वह बड़ी बुद्धिमानी दिखाता था। उसकी उन्नति बड़े वेग से हुई, पर वह उसके योग्य भी था। धीरे-धीरे वह अफ़ग़ानिस्तान का सेनापति हो गया। उसने फ़ौज में बड़े-बड़े सुधार किए। रज़्कटों की भरती, जो कि बड़ी निर्दयता के साथ की जाती थी, सुधारी गई। नाज़ व कपड़ा देने के बजाय, सेना में तन-स्वाहा देने की व्यवस्था की गई। इसका पुराने लोगों ने, जो कि पुरानी संस्था के आविष्कारक थे, व जिससे उन्हें घृष लेने का मौक़ा मिलता था, बहुत विरोध किया।

नादिरशाह इस सब विरोध को साहसपूर्वक सहन करता रहा और अपने सुधारों के समर्थन में लगा रहा। धीरे-धीरे इन सुधारों ने जड़ पकड़ ली, सैनिकगण ज़्यादा सुखी रहने लगे, उनके वस्त्र ज़्यादा साफ़ रहने लगे, व उनकी आर्थिक दशा में भी बहुत कुछ सुधार हो गया। लोगों को वह इतना प्रिय हो गया, कि जब वह सेना के निरीक्षण के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागों में जाता था, तो प्रत्येक स्थान में सिपहसालार के दर्शन के लिए औरतों और बच्चों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती थी।

अमानुल्ला के शासन के पहिले चार वर्षों तक, राजा तथा सेना-नायक का सम्बन्ध सन्तोषजनक रहा। परन्तु तब भी बिच्छेद करने वाले कारणों ने अपना काम शुरू

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तालीम का असर है जो साँचे में ढल गए,
मालूम क्या नहीं तुम्हें क्यों तुम बदल गए !

* * *

मिस्टर "फुलर" का रक्त बढ़ा "शियोटहल" के साथ,
मोटर की दौड़ ख़ूब नहीं इस बहल के साथ !

* * *

हम उमीदे इरतिवाते दिल किसी से क्या करें,
दोस्ती दुनिया में ऐ "बिस्मिल" किसी से क्या करें !

* * *

दर्दमन्दे इश्को-उलफ़त को सज़ा मिलती रही,
दम में उसके दम रहा जब तक दवा मिलती रही !
उनके वंगले पर था नूर आँखों में दिल में था सुरूर,
रोशनी बिजली की, बिजली की हवा मिलती रही !
दिल लगाने का नतीजा मैं यही देखा किया,
जिन्दगी में मुझको मरने की दुआ मिलती रही !
हज़रते "बिस्मिल" ने लूटे दर्दे उलफ़त के मजे,
मुस्त इनको "डॉक्टर भा*" की दवा मिलती रही !

* प्रयाग के मशहूर डॉक्टर वृष्णाराम भा से मतलब है।

—लेखक

कर दिया था। आख़िर अमानुल्ला ने विरुद्ध-दल का कहना मान लिया और नादिरशाह को सेना-नायक के पद से हटा कर, उसे अफ़ग़ानी-सरकार का प्रतिनिधि बना कर पेरिस भेजा दिया।

श्रीधर ही सेना उसके विरोधियों के हाथ में पड़ गई। उसकी ज़ुरी हालत कर दी गई और उसमें घृष तथा अन्य दुर्गुण फैल गए। उसका फल यह हुआ कि कुछ हज़ार क्रान्तिकारियों ने बलवा करके पूरी राज्य-सत्ता अपने हाथ में कर ली !

एकदम देखने से नादिरशाह उच्च कोटि का सैनिक नहीं मालूम होता, शकल से तो वह कॉलेज का एक प्रोफ़ेसर मालूम होता है। वह हिन्दुस्तानी व अज़र्रेज़ी

बहुत अच्छी तरह से बोल लेता है। और साहित्य से उसे बहुत प्रेम है। वह सब के राजनैतिक विचारों को जानने के लिए इतना उत्सुक रहता, कि सबके विचार धैर्यपूर्वक अन्त तक सुन लेता है; चाहे वह नौकर, रसोइया या मोटर-डाइवर ही क्यों न हो। उसे फ़ोटोग्राफी का बड़ा शौक़ है और उसके पास बहुत से बहुमूल्य केमरे हैं।

प्रधान मन्त्री मोहम्मद हाशिम खाँ

मोहम्मद हाशिम खाँ नादिरशाह के छोटे भाई हैं। ये अपने कठोर शासन के लिए प्रसिद्ध हैं। अमानुल्ला के राज्य-काल में ये ज़ालाबाद के गवर्नर थे, जहाँ पर उन्होंने डाकूओं के उपद्रव का अन्त करके, शान्ति स्थापित की थी। उनको इन्होंने कठिन दण्ड दिया था। फिर वे रूस में अफ़ग़ानिस्तान के प्रतिनिधि होकर रहे। नादिरशाह के सेना-नायक के पद से इस्तीफ़ा देने के बाद इन्होंने भी अपना त्याग-पत्र दे दिया था। ये देश के अन्दरूनी शासन के लिए विशेषकर योग्य समझे जाते हैं। कठोर दण्ड तथा दृढ़-शासन द्वारा वे अपना मान प्रजा में रख सके हैं।

सेना-मन्त्री शाह महमूद खाँ

ये सेना-नायक तथा सेना-मन्त्री हैं। आप भी नादिरशाह के भाई हैं। आपने अमानुल्ला के राज्यकाल में फ़ौज में बहुत से उँचे पद सुशोभित किए थे तथा उन पर अपने साहस तथा बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि पुराने देशों में, उँचे घराने का बड़ा मान होता है और इसी कारण अमानुल्ला के समय में कई सङ्कट पड़ने पर भी इनका बड़ा मान और दबाव रहा।

भूतपूर्व राजा के राज्य में ये बड़े योग्य समझे जाते थे, पर तब भी आप सेना-नायक नहीं हो सके थे। अफ़ग़ानिस्तान ऐसे देशों में जो व्यक्ति ज़्यादा योग्यता दिखाते हैं, उनसे लोगों को प्रतिस्पर्धा होने लगती है और लोग उन्हें गिराने के लिए उनकी तुराई करने लगते हैं। इसी कारण नादिरशाह व उनके भाइयों को बहुत सी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ी हैं।

जब बचासका ने अमानुल्ला पर धावा किया, तब उन्होंने बादशाह की बड़ी भक्ति से सेवा की। जब कि बचासका आँधी की तरह राज्य की फ़ौजों को उड़ाता चला जा रहा था; और जब कि राज्य का सेना-नायक अपनी प्राण की रक्षा के लिए अपने घर में छुपा था और अमानुल्ला की सेना उसे छोड़ कर भाग रही थी, तो शाह महमूद ही एक ऐसा अफ़सर था, जो उसके साथ बड़ रहा था।

साहसी शाह महमूद ने अन्त तक बचासका का स्वामित्व स्वीकार नहीं किया। जबकि दूर-दूर के प्रान्त बचासका के क़ाबू में आ चुके थे और उसे राजा मान रहे थे, तब भी शाह महमूद निर्भीकता से अपने देश की सेवा के लिए उस समय तक लड़ता रहा, जब तक कि पूरा देश उसके भाई के हाथ में नहीं आ गया। नादिरशाह के आने पर शाह महमूद बचासका की सेना को परास्त कर उसे, तथा उसके साथियों को जीता पकड़ लाया। अब वह अफ़ग़ानी सेनाओं का प्रबान सेनापति है।

अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास यदि सब पूछा जाय तो अभी भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है, अतएव निश्चयपूर्वक किसी व्यक्ति-विशेष के सम्बन्ध में राय प्रगट करना एक बार ही असम्भव है। अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास एशियाई देशों के इतिहास का परिशिष्ट होगा, इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता।

‘चाँद’ कार्यालय की अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक-उपन्यास है, जिसकी चोट से बीख-काय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अक्षरपूर्ण का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिंग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घटों विचार करना होगा, भेद-वकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का खेत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) ६०; स्थायी ग्राहकों से २।)

वीरवाला

दुर्गा और रखचरबी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीरकन्या ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। साथ ही—अङ्गरेजों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राजसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे। अङ्गरेजी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। मू० ४); स्थायी ग्राहकों से ३।)

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तर वर्णन इस वृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। ८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने की यह अनोखी पुस्तक है। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सज्जियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बज्जला मिठाई, पकवान, लैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुखवे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है। मूल्य ४) ६० स्थायी ग्राहकों से ३) ६० मात्र! चौथा संस्करण प्रेस में है।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायेंगे; इसके फूलों की एक-एक पल्लुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायेंगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी कवच-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गो प्रोटोक्लिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३।)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे ब्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हजारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग भूटे कोकशात्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायेंगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गो प्रोटोक्लिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

अनाथ पत्नी

इस उपन्यास में विछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायेंगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की कलम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! छपाई-सफाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।)

व्यवस्थापिका ‘चाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद



अजी संपादक जी महाराज,

अजय राम जी की !

आखिर 'नेक्स्ट वीक' भी आ ही कूदा। न आता तो अच्छा था; क्योंकि—'जो मज्जा इन्तज़ार में पाया, वह नहीं चले-यार में पाया।' अगर योंही इन्तज़ार ही इन्तज़ार में जीवन व्यतीत हो जाय तो अच्छा है। बहुत कट गई थोड़ी रही है, वह भी एक न एक दिन कट ही जायगी—रहेगी नहीं। नेक्स्ट वीक आते ही सवेरे चार बजे लोग-बाग आ धमके। बोले—'चलिए!' सवेरे उठने की इच्छा तो होती नहीं थी; परन्तु काँस-कँस कर उठा। एक बार मन में आया कि अच्छे फँसे चढ़ा गुलज़रै! आराम से दिन चढ़े तक पैर फैला कर सोते रहते थे, सो अब मुँह अँधेरे उठ कर दर-दर अलख जगाओ। अच्छा भाई, अब तो फँसे ही हैं, सब कुछ करना पड़ेगा। मुझे कुछ बदमज़े देख कर एक साहब बोले—इस समय तो आपको यह सब कुछ अखर रहा है; परन्तु इसका मज्जा तब मिलेगा जब काउन्सिल की कुर्सी पर जाकर बैठिएगा। जनाव, यह भी एक प्रकार की तपस्या है। बिना तपस्या के सुख नहीं मिलता।

मैंने कहा—तो तपस्या करना भी हमारा ही काम है, दूसरा यह काम कर भी नहीं सकता।

एक महाशय बोल उठे—इसलिए दूसरा काउन्सिल में जा भी नहीं सकता। कैसी कही! वाह-वाह! क्या कही है! ऐसी कही कि भोर हो गया।

मैंने कहा—भोर हो गया तो अब चलना चाहिए, देर करना ठीक नहीं। मगर यारो, यह क्या अन्धेरे है, न बैयड बाबा, न शहनाई, न तुरही। उस रोज़ क्या-क्या प्रस्ताव पास हुए, कैसे-कैसे मसविदे बने और आखिर में सब टाई-टाई फ़िश! हमारे खज़ाञ्ची साहब कहाँ हैं?

खज़ाञ्ची साहब बोले—मैं हाज़िर तो हूँ—कहिए!

मैं—क्यों साहब, यही आपका इन्तज़ाम है?

खज़ाञ्ची—मेरा इसमें ज़रा भी कुसूर हो तो कहिए। जिन्हें बैयड ठीक करने के लिए रुपए दिए थे, वह अपनी ससुराल चले गए। उनके साले को जुकाम हो गया है। ससुराल से तार आया था।

मैंने कहा—जुकाम तो कोई ऐसा कठिन रोग नहीं है।

खज़ाञ्ची—यह न कहिए। जुकाम के बराबर कठिन रोग कोई है ही नहीं।

मैंने आश्चर्य से अन्य लोगों की ओर देखा—क्यों साहब, जुकाम तो ऐसा भयानक रोग नहीं है?

एक महोदय बोले—जुकाम होता तो बहुत खतरनाक है—जुकाम से ही तपेदिक, न्यूमोनिया इत्यादि कठिन रोग हो जाते हैं। जब तक जुकाम बिगड़े नहीं, तभी तक ख़ैरियत है; लेकिन जहाँ बिगड़ा, बस पूरी मुसीबत समझिए।

मैं—तो क्या उनके साले का जुकाम बिगड़ उठा है?

खज़ाञ्ची—ऐसा ही मालूम होता है, नहीं तो तार क्यों आता?

मैंने कहा—ख़ैर, वह तो यों गए, मगर तुरही क्यों नहीं आई?

खज़ाञ्ची—अजी जब बैयड नहीं तो खाबो तुरही किस काम की।

एक दूसरे महोदय बोल उठे—और काम की हो तब भी इस समय तुरही मिल नहीं सकती। सवेरे का वक्त है, भज़ी सब अपने-अपने काम में लगे हैं—हाँ, शाम होती तो मिल जाते!

मैं—और रोशनचौकी क्यों नहीं आई?

खज़ाञ्ची—दिन में रोशनचौकी किस काम की, रोशनचौकी तो रात में मज्जा देती है। किसी दिन रात में निकलिए तो रोशनचौकी मँगा ली जाय।

मैं—बिना बाज़ों के तो सामन्ता फीका रहेगा। लोगों को पता कैसे लगेगा कि दुबे जी वोट माँगने आ रहे हैं।

एक महाशय बोले—इसकी तो बहुत सहज तरकीब है—चार-पाँच आदमी आगे-आगे चिल्लाते चलें 'आए! आए!'

मैं—यह ठीक नहीं, इससे लोग कहीं होली का स्वाँग न समझ लें।

वह व्यक्ति—आप भी बच्चों की सी बातें करते हैं,

भविष्य

[श्री० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"]

जिस भूतल का भूत-काल

भव-विभव कहाया।

अपनी विजय-विभूति

किस लिए वह खोवेगा।

जिसने अपना वर्त्तमान

बहु-भय बनाया।

भला क्यों न उसका भविष्य

उज्ज्वल होवेगा ?

आजकल कुछ फागुन थोड़ा ही है, जो होली का स्वाँग समझ लेंगे।

एक अन्य सज्जन बोल उठे—अच्छा आए-आए न कहा जाय। केवल एक आदमी आगे रहे। वह यह कहता चले—होशियार, ख़बरदार, सोने वाले जागो, दुबे जी महाराज आ रहे हैं।

यह राय सबको पसन्द आई। ख़ैर साहब, सब लोग चले।

एक आदमी ने आगे बढ़ कर वहीं हॉक लगाई। उसके आवाज़ लगाते ही बहुत से मकानों के द्वार फटा-फट बन्द हो गए—औरतों ने अपने बच्चों को गोद में छिपा लिया। दो-चार आदमी डगडे लेकर अपने-अपने द्वार पर आ बैठे और बोले—'आने देओ साले को, हम भी देखें कौन है, मालूम होता है कोई बड़ा शोरे-पुरत डाकू है।' आवाज़ लगाने वाले महोदय तो आवाज़ लगा कर आगे बढ़ गए। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो एक बोले—क्यों भइया, यह दुबे जी कौन हैं?

हममें से एक बोला—दुबे जी हमारे नगर के एक प्रतिष्ठित आदमी हैं, वह काउन्सिल में जा रहे हैं, सो भाई आप सब लोग उन्हीं को वोट देना। देखो यह दुबे

जी हैं। यह कह कर एक आदमी ने मुझे आगे कर दिया। सब देख-सुन कर वह आदमी बोला—यह अच्छी रही, एक आदमी अभी चिछाता गया है कि दुबे जी आ रहे हैं—होशियार रहो! हम समझे कि दुबे जी कोई चोर-बदमाश हैं। राम! राम!

मैंने कहा—यह तरकीब ठीक नहीं, उस आदमी को मना कर दो कि आवाज़ न लगावे।

उसी समय एक आदमी दौड़ा आया। मैंने उस व्यक्ति से कहा—भाई साहब, मैं आपका एक तुच्छ सेवक हूँ, आप ही की सेवा करने काउन्सिल में दौड़ा जा रहा हूँ, इसलिए कृपा करके मेरा ध्यान रखिएगा।

वह व्यक्ति बोला—हाँ, यह तो ठीक है, मगर हमने तो आपको आज ही देखा है। अच्छा, अब दो-चार दिन आइए-जाइए तब बताएँगे।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा—भइया, मैं आपका दास हूँ। कबो तो दिन में दस बेर आपके दरवाज़े आऊँ—यह कौन सी बात है।

हमारे एक साथी ने लिस्ट और पेन्सिल निकाल कर कहा—हाँ, ज़रा अपना नाम तो बताना।

वह—मेरा नाम ननकू है।

"जाति?"

वह—धानुक!

मेरे मुँह से निकला—हैं, धानुक!

वह मेरी ओर घूर कर बोला—हाँ धानुक! कहिए।

यह सुनते ही मुझे क्रोध आ गया। मैंने कहा—क्यों वे आदमी नहीं देखता, मल्लादीन बना बैठा है, उठ के खड़ा हो अदब से।

वह बोला—क्यों खड़े हों? क्या तुम्हारे नौकर हैं? ऐसे ही बड़े अफ़्फ़ातूँ के नाती थे तो घर में ही बैठे रहते, काहे को सवेरे-सवेरे दरवाज़ा पेगा है। चले तो हैं भीख माँगने और अकड़ इतनी दिखाते हैं। जाओ, हम नहीं जानते वोट-फोट।

इतना सुनते ही मेरे साथी मुफ पर बिगड़े। बोले—वह आप क्या राज़ कर रहे हैं, इस तरह तो एक भी वोट नहीं मिलेगा।

मैं—तो क्या इस धानुक के हाथ जोड़ूँ?

एक सज्जन बोले—हाथ जोड़ना क्यों, आपको पैर तक छूने होंगे। काउन्सिल में पहुँचना कुछ दिख्खी थोड़ा ही है।

मैंने कहा—चाहे प्राण चले जायँ, पर मुझसे यह नहीं होगा। ऐसे काउन्सिल जाने पर जानत है!

मेरे साथी बोले—तब तो आप देश-सेवा कर चुके।

मैंने कहा—देश-सेवा करने के सैकड़ों मार्ग हैं।

साथी लोग बोले—सब से महत्वपूर्ण मार्ग तो यही है।

मैंने कहा—हाँ, महत्वपूर्ण तो बेशक है—जेब भी गरम होती है, इज़्ज़त भी बढ़ जाती है, साधारण नागरिक की अपेक्षा काउन्सिल का मेम्बर कुछ अधिक शक्तिशाली हो जाता है—ये सब बातें उसके महत्व को प्रकट करती हैं; परन्तु भाई, इस तरह दर-दर की ठोकरें खाकर, बुड़की-फिड़की सह कर, गाली-गलौज, जूती-पैज़ार बरके काउन्सिल में पहुँचे भी तो किस काम का? हम ऐसी देश-सेवा को दूर ही से प्रणाम करते हैं।

यह सुनते ही सब चिल्ला उठे—आप देश-द्रोही हैं, जोखेबाज़ हैं।

वह सब चिल्लाते ही रहे और मैं जो रस्सियाँ तुड़ा कर आगा तो सीधे घर में आकर दम लिया। संपादक जी, यह काउन्सिल की मेम्बरी हमारे बस का रोग नहीं है।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

*

*

*

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पढ़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

यह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य आठ आने !

जन्मी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुबोध्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रखेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बाँसों का वर्णन पति-पत्नी के सम्बाध-रूप में किया गया है। लेखक की इस अद्भुत-दक्षिणा से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से “गागर में सागर” वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध लुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्-गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य ११); स्थायी ग्राहकों से ॥३॥

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोद-पूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

राष्ट्रीय मान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हार-मोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कबूठ कराने लायक भी हैं। मूल्य १)

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभाग्य देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। ‘समाज की चिनगारियाँ’ आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुःखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहा-विरा, सुललित तथा कल्याण की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटोक्विट्ज़ कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत-मात्र ३) रक्खा गया है। ‘चाँद’ तथा स्थायी ग्राहकों से २) ६० !

विधवा-विवाह

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाव्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शक्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों से २)

व्यवस्थापिका ‘चाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

मजदूर सरकार का सच्चा स्वरूप

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच०डी०]

इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट में जब मजदूर दल की जीत हुई, तो हम भारतीयों के हृदय में भी कुछ गुदगुदी सी उत्पन्न हुई थी। हमारे कुछ नेताओं ने भी समझा कि मजदूर दल हमारी स्वतन्त्रता की माँग पर उदारता से विचार करेगा। अनेकों ने समझा कि भारत का सौभाग्य है जो रिफॉर्म मिलने के समय मजदूर दल शक्तिशाली हो गया है। एक समय था, जब कि मजदूर दल कहता था कि उदार दल में जितने भी स्थायी गुण हैं, वे सब हममें मौजूद हैं और रेडिकल-दल में जो स्वतन्त्रता के लिए प्रेम का अङ्कुर था, उसे हमने बढ़ा कर एक वृक्ष के रूप में खड़ा किया है। परन्तु जब मजदूर दल एक राज-सत्तात्मक संस्था का पोषक हो गया, तब उसमें स्वतन्त्रता का प्रेम न रह गया। यहाँ तक कि एक मजदूर दल के ही लेखक ने लिखा है, कि हमने उदार-दल से केवल उसकी आर्थिक धारणा को लिया है और रेडिकल-दल में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए जो अखण्ड प्रेम, तथा मत-स्वातन्त्र्य की अभिवाधा थी, उसे हम लोगों ने अपने अन्दर से निकाल दिया है।

मजदूर दल की इस नीति के अनेकों उदाहरण हैं। सबसे बड़ा अनुदार उदाहरण ब्रिग्स ट्रांसकी का है। ब्रिग्स ट्रांसकी किसी समय रूस के प्रथम श्रेणी के नेताओं में थे, किन्तु आज वे रूस से निर्वासित कर दिए गए हैं। उन्होंने चाहा कि इंग्लैण्ड उनको शरण दे, परन्तु मजदूर सरकार ने यह नामंजूर कर दिया। इंग्लैण्ड में एक कानून है, जिसे 'Right of Asylum' (शरणार्थियों का अधिकार) कहते हैं। इसका मतलब यह है कि इंग्लैण्ड को इस बात का अधिकार है कि वह शरण में आए हुए किसी भी देश के आदमी को अपने यहाँ रख सकता है। उदार और अनुदार दल वालों ने, जिनमें स्वतन्त्रता से इतना प्रेम नहीं था, जितना मजदूर सरकार का दावा है, अनेकों बार वैयक्तिक स्वतन्त्रता के पक्षपाती बन कर क्यूसय विक्टर ह्यूगो, कार्ल मार्क्स गैरीबाल्डी इत्यादि को शरण में रहने की आज्ञा दी थी। मजदूर सरकार ने किस कारण ट्रांसकी को शरण नहीं दी, इसका कारण कभी नहीं बताया गया। मजदूर सरकार को इस बात का विश्वास दिला दिया गया था कि ट्रांसकी देश के सार्वजनिक जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेगा, न वह किसी आम सभा में भाग लेगा और न अपने को किसी प्रकार से प्रसिद्ध करने की चेष्टा करेगा। परन्तु तो भी मजदूर सरकार ने उसे अपने यहाँ आने की आज्ञा क्यों नहीं दी, इसका कारण यह बताया जाता है कि सम्भव था कि कोई मनुष्य अपने स्वार्थों के लिए उसकी इत्या कर देता। पर ऐसे मनुष्य कौन हो सकते हैं, उसकी कोई खबर नहीं। पता नहीं सरकार को इसलिए भय था कि उसने रूस की क्रान्ति में भाग लिया था अथवा इस बात का भय था कि वह रूस की वर्तमान शासन प्रणाली के विरुद्ध था ?

वर्तमान सरकार के अधीन जो पुलिस है उसने लोगों की स्वतन्त्रता में बड़ा विघ्न डाल रखा है। हम तो इस बात के सुनने के आदी हो गए हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ किताबें ज़ब्त हो गई—फ़लाँ किताबें या पत्र रोक लिए गए। पर इंग्लैण्ड भी सरकार की ओर से की गई ऐसी ज्यादतियों से बरी नहीं है। जो किताबें, जो अखबार सरकार समझती है कि जनता तक नहीं पहुँचना चाहिए वे

पोस्ट-ऑफ़िस में रोक लिए जाते हैं। इंग्लैण्ड साम्यवाद का शत्रु है। वह साम्यवाद से बहुत डरता है। वह नहीं चाहता कि साम्यवादी विचार जनता में फैले। इस कारण साम्यवादियों का एक अखबार, जिसका नाम 'Inprecorr' है, सदैव देश में आने से रोक लिया जाता है। पोस्ट ऑफ़िस को ताकीद कर दी गई है कि उसकी तमाम प्रतियों को रोक ले। कहाँ मजदूर दल की स्वतन्त्रता का पक्षपाती बनने का दावा और कहाँ यह विचार-स्वातन्त्र्य की हत्या !

हम अपने पाठकों को एक और उदाहरण दें, जिसका सम्बन्ध भारतवासियों से है। भारत की शिक्षित जनता मि० रेज़ीनॉल्ड रेनॉल्ड के नाम से अवश्य ही परिचित होगी। रेनॉल्ड ही, महात्मा गाँधी का वह पत्र, जिसमें उन्होंने सविनय आज्ञा-भङ्ग आन्दोलन की बात लिखी थी, वाइसराय के पास ले गए थे। उन्होंने कहा है कि वे जब से भारत से लौट कर इंग्लैण्ड आए हैं तब से राज-नैतिक विभाग के दो सी० आई० डी० सदा उनके पीछे-पीछे लगे रहते हैं। वे उनके तमाम भाषणों की रिपोर्ट करते हैं।

बधाई

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के अर्थ-शास्त्र के प्रोफ़ेसर श्री० दयाशङ्कर दुवे, एम० ए०, एल्-एल्० बी० लिखते हैं :—

'भविष्य' के प्रथम तीन अङ्क यथासमय मिले। उच्च कोटि का सचित्र साप्ताहिक पत्र इतनी अच्छी तरह से निकालने के लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं इस पत्र की उत्तरोत्तर वृद्धि चाहता हूँ। नवम्बर मास के अन्त तक एक लेख भेजने का प्रयत्न करूँगा।

इससे रेनॉल्ड महोदय को कोई कष्ट तो नहीं, पर असुविधा अवश्य हुआ करती है। जब वे पहले ही दिन इंग्लैण्ड पहुँचे। तो उन्होंने देखा कि दो आदमी उनके पीछे लगे हैं। दूसरे दिन भी यही बात हुई। उन्हें शङ्का हुई और उनसे पूछताछ करने के पश्चात् रेनॉल्ड ने उनसे परिचय प्राप्त कर लिया। सी० आई० डी० के इन दो सिपाहियों का काम है, कि रेनॉल्ड जहाँ-जहाँ भी जाएँ-जाएँ वे सदा उनके पीछे रहें। रेनॉल्ड ने उनसे एक प्रकार की मैत्री-सी कर ली है और उनसे एक दिन पहले ही अपने आने-जाने का प्रोग्राम वे बता देते हैं। एक दिन की बात है कि रेनॉल्ड मि० फ़्रेनर ब्रॉकवे से हाउस ऑफ़ कॉमन्स में मिलने के लिए गए। मि० ब्रॉकवे ने रेनॉल्ड से एक-दो और सभासदों से मिलने लिए कहा। रेनॉल्ड ने रुकना चाहा, पर उन्हें याद आई कि सी० आई० डी० के आदमियों से तो उन्होंने ढाई बजे तक ही हाउस ऑफ़ कॉमन्स में रहने का जिक्र किया था, अतएव वे फ़ौरन दौड़ते हुए इनके पास गए और बतला आए कि अब वे यहाँ साढ़े चार बजे तक रहेंगे !!!

मजदूर दल की इस सङ्कीर्णता को प्रदर्शित करने वाला हम एक और उदाहरण देते हैं, और वह बड़े महत्व का है। अभी हाल में लन्दन में एक अन्तर्राष्ट्रीय

प्राचीन भारतीय शिल्पकला

[श्रीमती लक्ष्मी देवी, बी० ए०]

भारत की कलाओं में से जिस कला को पश्चिमी देशों के कलाविद् बहुत मुश्किल से समझते हैं, वह शिल्पकला है। उस कला की विचित्र मूर्तियाँ उनकी अद्भुत मुद्राएँ, उनके अनोखे विषय और आन्तरिक भावों का पत्थर पर दर्शाने का ख़ास तरीका इतना अद्वितीय है, कि जो उससे परिचित नहीं है, उसके लिए उन्हें समझ सकना बहुत ही कठिन होता है। शिल्पकार को हर वक्त आयों, धार्मिकों तथा ऋषिओं के विचारों को रूप देना पड़ता था। वे अपनी कल्पना से कुछ नहीं करते थे। कल्पना की उत्पत्ति ऋषि-मुनि तथा साधकों के हृदय में होती थी। इस कल्पना को मूर्ति का रूप देना शिल्पकार का काम था। इसलिए शिल्पकार केवल सौन्दर्य की सेवा की इच्छा से अच्छे या बुरे स्वरूप नहीं बनाता था। जो भी मूर्तियाँ बनती थीं, जो भी प्रिय या भयानक भाव उनके मुख पर दर्शाए जाते थे, वे सब ऋषियों की आज्ञानुसार होते थे। कभी-कभी तो उन्हें देख कर अपरिचित मनुष्य को बड़ा आश्चर्य होता है। कोई महाकाली या शिव या कालियामर्दन की मूर्तियाँ देखे, तो उनके युद्ध में होते हुए भी उनके मुख का शान्त भाव देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि शिल्पकार युद्धोचित वीर भाव को मुख पर नहीं ला सका है। पर यह ख़याल ग़लत है। गीता का अनुकरण करने वाले मुनियों की आज्ञा द्वारा उन्हें मूर्तियों में यह दिखाना पड़ता था कि युद्ध में होने पर भी उनका चित्त शान्त है। इसलिए प्राचीन भारतीय शिल्पकला को समझने के लिए प्राचीन भारत का पूर्ण परिचय होना चाहिए। फिर खियों की आदर्श सुन्दरता दर्शाने में, तो पश्चिमीय शिल्पकारों ने ज्यादातर नग्न सुन्दरता का सहाय किया है। पर भारत में खियों की सुन्दरता तथा उनके अमूल्य भाव माता, शक्ति, माया इत्यादि रूपों में दर्शाए गए हैं, जो कि संसार में अद्वितीय हैं।

* * *

नीग्रो मजदूर सभा करने का विचार उपस्थित किया गया था। ऐसी आज्ञा की गई थी कि मजदूर सरकार एक ऐसी सभा के होने में रुकावट डालने का तो जिक्र ही क्या, उसमें सब प्रकार से सहायता करने को तैयार होगी। परन्तु हुक्म बिलकुल इसके विपरीत सादिर हुआ। इस सभा के होने की आज्ञा ही न दी गई। 'डेली हेरल्ड' का कथन है कि बन्दरगाह के अफ़सरों को सरकार की ओर से इस बात की हिदायत कर दी गई थी, कि यदि कोई नीग्रो प्रतिनिधि देश में प्रवेश करना चाहे तो उसे रोक दिया जाय। मजदूर-सरकार के ऐसे व्यवहार से उन तमाम लोगों की आशाओं पर बड़ा कुठाराघात हुआ है, जिन्होंने यह समझ रखा था कि मजदूर सरकार यूरोप के मजदूरों तथा अफ़्रीका और एशिया के मजदूरों में ऐक्य स्थापन करने में सहायक होगी।

इन सब बातों से हमें एक परिणाम निकालना चाहिए कि हम 'मजदूर' शब्द के नाम से धोखा न खा जायँ और हमेशा याद रखें कि एक राजसत्ता की पोषक मजदूर सरकार केवल 'मजदूर' नाम रखने के कारण ही मजदूरों और ग़रीबों की पक्षपाती नहीं मानी जा सकती।

* * *

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की

विख्यात पुस्तकें

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में क्रान्ति मचा दी थी !! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नम्र-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥)

सतीदाह

धर्म के नाम पर स्त्रियों के ऊपर होने वाले पैशाचिक अत्याचारों का यह रक्त-रञ्जित इतिहास है। इसके एक-एक शब्द में वह वेदना भरी हुई है कि पढ़ते ही आँसुओं की धारा बहने लगेंगी। किस प्रकार स्त्रियाँ सती होने को वाध्य की जाती थीं, जलती हुई चिता से भागने पर उनके ऊपर कैसे भीषण प्रहार किए जाते थे—इसका पूर्ण वर्णन आपको इसमें मिलेगा ! सजिल्द एवं सचित्र, मूल्य २॥)

आशा पर फानी

यह एक छोटा सा शिक्षाप्रद, सामाजिक उपन्यास है। मनुष्य के जीवन में सुख-दुःख का दौरा किस प्रकार होता है; विपत्ति के समय मनुष्य को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं; परस्पर की फूट एवं वैमनस्य का कैसा भयङ्कर परिणाम होता है—इन सब बातों का इसमें बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलेगा। क्षमाशीलता, स्वार्थ-त्याग और परोपकार का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मूल्य केवल ॥) स्थायी ग्राहकों से ॥)

सफल माता

गर्भावस्था से लेकर ९-१० वर्ष तक के बच्चे की देख-भाल एवं सेवा-सुश्रूषा का ज्ञान प्रदान करने वाली अनोखी पुस्तक। माताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त आवश्यक है। एक बार अवश्य पढ़िए तथा अपनी धर्मपत्नी को पढ़ाइए ! मूल्य केवल २)

अफराकी

यह बड़ा ही क्रान्तिकारी, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। एक सचरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा किस प्रकार नर-पिशाचों के चङ्कुल में पड़ कर पतित होती है और अन्त में उसे वेश्या होना पड़ता है—इसका बहुत ही रोमाञ्चकारी वर्णन किया गया है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों का जनाजा है। भाषा बहुत, सरल रोचक एवं मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

शुक्र और सोफिया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाले अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्र और सोफिया का आदर्श जीवन, उनकी निस्वार्थ देश-सेवा; दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद हो जाता है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव

जिन प्रवासी भाइयों की करुण स्थिति देख कर महात्मा गाँधी; मि० सी० एफ० एण्डयूज और मिस्टर पोलक आदि बड़े-बड़े नेताओं ने खून के आँसू बहाए हैं; उन्हीं भाइयों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पं० भवानीदयाल जी ने अपना सारा अनुभव इस पुस्तक में चित्रित किया है। पुस्तक को पढ़ने से प्रवासी भाइयों की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति तथा वहाँ के गौराङ्ग प्रभुओं की स्वार्थ-परता, अन्याय एवं अत्याचार का पूरा दृश्य देखने को मिलता है। एक बार अवश्य पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए !! भाषा सरल व मुहावरेदार है; मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

शिशु-हत्या और नरमेघ-प्रथा

इस पुस्तक में उस जघन्य एवं पैशाचिक कुप्रथा का वर्णन किया गया है, जिसके कारण किसी काल में असंख्य बालकों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया। अविद्या, स्वार्थ एवं अन्धविश्वास के कारण उस समय जो भयङ्कर अत्याचार किए जाते थे, उनके स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक बार पुस्तक को अवश्य पढ़िए और उस समय की स्थिति पर दो-चार आँसू बहाइए !! मूल्य केवल ॥)

नयन के प्रति

इस पुस्तक में देश की वर्तमान दीनावस्था को लक्ष्य करके बहुत ही पश्चात्ताप एवं अश्रुपात किया गया है। पुस्तक पद्यमय है। भाषा, भाव एवं काव्य की दृष्टि से पुस्तक बहुत ही सुन्दर है। जिन ओज तथा करुणापूर्ण शब्दों में नयनों को धिक्कारा एवं लज्जित किया गया है, वह देखने ही की चीज है—व्यक्त करने की नहीं। एक बार अवश्य पढ़िए। दो रङ्गों में छपी, सुन्दर एवं दर्शनीय पुस्तक का मूल्य केवल ॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

फाणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भण्डाफोड़ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड, एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। मूल्य २॥)

गौरी-शंकर

आदर्श भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। एक साहसी बालिका किस प्रकार दुष्ट पुरुषों को पराजित करके अपना मार्ग साफ कर लेती है; एक वेश्या की सहायता से वह अपना विवाह करके किस प्रकार आदर्श जीवन व्यतीत करती है—इसका बहुत सुन्दर और रोमाञ्चकारी वर्णन आपको इसमें मिलेगा। भाषा अत्यन्त सरल व मुहावरेदार है, मूल्य ॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

गल्प-विनोद

इस पुस्तक में बहुत ही सुन्दर और रोचक सामाजिक कहानियों का अपूर्व संग्रह है। सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं और उनमें भिन्न-भिन्न सामाजिक कुरीतियों का नम्र-चित्र खींचा गया है। भाषा अत्यन्त सरल व मुहावरेदार; मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥) मात्र !

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अतीत स्मृतियाँ

चन्द्रनगर

[श्री० रतनलाल जी मालवीय, बी० ए०]

फ्रान्स का उपनिवेश चन्द्रनगर, जहाँ कुछ दिन पहले फ्रान्सीसी और कलकत्ते की पुलिस ने चिटगाँव के उपद्रवकारियों पर धावा किया था, कलकत्ते से करीब २३ मील की दूरी पर हुगली नदी के दाएँ किनारे पर बसा हुआ है। उस समय की राजनीतिक घटनाओं में, जब कि बङ्गाल में यूरोप-निवासी पहले व्यापारिक आधिपत्य और बाद में साम्राज्य स्थापित करने की लालसा से पारस्परिक युद्ध में संलग्न थे, चन्द्रनगर का प्रधान हाथ था। उसका यह प्राचीन इतिहास अत्यन्त रोचक है।

हुगली, चिनसुरा और सीरामपुर की तरह बङ्गाल के इस छोटे से "फ्रान्स" का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल और वैभवपूर्ण मालूम पड़ता था, जितना आजकल कलकत्ते का है। परन्तु सन् १७५७ में क्लाइव ने उस पर जो भयङ्कर आघात किया था उससे सदैव के लिए उसकी हड्डी टूट गई और भारत के सब से अधिक महत्वाकांक्षी, शक्तिशाली और बुद्धिमान फ्रान्सीसी राजनीतिज्ञ डूप्ले का भारत में फ्रान्सीसी साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न केवल स्वप्न ही रह गया।

वर्तमान चन्द्रनगर

आज चन्द्रनगर अपने वक्षस्थल पर, नदी के किनारे सुरक्षित और महलों की तरह बड़ी-बड़ी वैभवपूर्ण अट्टालिकाएँ लादे, शान्ति की मूर्ति बना हुआ खड़ा है। उसकी स्वच्छ और सुन्दर सड़कों के साथ बड़े-बड़े फ्रान्सीसी राजनीतिज्ञों और जनरलों की स्मृतियाँ सन्निहित हैं और उसका गिरजा और दूसरी इमारतें उसके प्राचीन वैभव के अवशेष चिन्ह हैं। एक सुखद और महत्वाकांक्षी स्वप्न की रेखा—चन्द्रनगर—में यात्रियों और सौन्दर्योपासकों के आकर्षण के लिए अब भी यथेष्ट सामग्री मौजूद है। आस-पास के शहरों और व्यावसायिक केन्द्रों के लोग मिलों, फ़ेक्टरियों और सप्ताह भर के कोलाहलपूर्ण व्यापारिक जीवन से जो ऊब जाने पर शरीर को स्वस्थ और मन को शान्त करने के लिए उसी स्थान का आश्रय लेते हैं।

डूप्ले का आगमन

सन् १७३१ में डूप्ले के आने के पहले चन्द्रनगर एक नगण्य उपनिवेश था। पाण्डचेरी से शासन-भार सँभालने के लिए डूप्ले के यहाँ आते ही चन्द्रनगर में आश्चर्यजनक जागृति हो गई। उसका कारण यह था कि डूप्ले ने पाण्डचेरी में जो असीम सम्पत्ति एकत्रित की थी, वह सब उसने चन्द्रनगर को समृद्ध बनाने में लगा दी। उसने बहुत बड़ी तादाद में जहाज़ खरीदे, पूर्वीय मनुष्यों के हृदयों में विश्वास उत्पन्न किया और भारतीय व्यापारियों को आकर्षित किया। इससे फ्रान्स का व्यापार खूब चमका और लगभग ५० व्यापारिक जहाज़ दूर-दूर के बन्दरगाहों तक चक्कर लगाने लगे। चन्द्रनगर के इस व्यापारिक उत्कर्ष के परिणाम-स्वरूप पटना, ढाका और अन्य स्थानों में बहुत सी नई फ़ेक्टरियाँ भी खुल गईं। उसके सामने उस समय का कलकत्ता बिलकुल नगण्य था।

पतन का प्रारम्भ

चन्द्रनगर के ये वैभव, सुख और समृद्धि के दिन इने-गिने थे और डूप्ले के प्रस्थान के साथ ही इस उपनिवेश के भी हास के चिन्ह प्रकट होने लगे। पूँजी की कमी, मरहटों के धावे, डूप्ले के स्थानापन्न अफ़सरों की निर्बलता आदि ऐसे ही कारणों में से थे, जिन्होंने उपनिवेश को खोखला करना प्रारम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त वहाँ अङ्गरेजों का प्रभाव भी दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था।

लीन्स' क़िले पर धावा बोल दिया गया। पाँच दिन तक फ्रान्सीसियों ने बहादुरी से क़िले की रक्षा की, परन्तु अन्त में उन्हें पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इस पराजय के साथ ही फ्रान्सीसी राज्य का अन्त हो गया। अपनी इस विजय के उपरान्त अङ्गरेजों ने वहाँ की बहुत सी वैभवपूर्ण इमारतों और क़िले को ढाकर उस सुन्दर उपनिवेश को तहस-नहस कर दिया।

पुनः फ्रान्सीसी राज्य

सन् १७६३ की पेरिस की सन्धि के अनुसार सन् १७६५ में चन्द्रनगर फिर से फ्रान्सीसियों को वापस दे दिया गया। परन्तु शर्त यह थी कि फ्रान्सीसी लोग न तो क़िलेबन्दी करेंगे और न फ़ौज रखेंगे। इसके बाद भी कई बार चन्द्रनगर अङ्गरेजों के हाथ में आया और इङ्गलैण्ड में सन्धि होने पर फिर वापिस दे दिया गया। परन्तु सन् १८१६ से वहाँ के सरकारी दफ़्तरों पर फ्रान्सीसियों का तिरङ्गा झण्डा लगातार फहराता रहा है।

फ्रान्स के इस उपनिवेश का क्षेत्रफल प्रायः चार वर्ग मील है। दक्षिण में एक बड़ी खाई उसे अङ्गरेजी राज्य



हमारे रेलवे स्टेशनों का दृश्य

सब लोग जिधर 'वह' हैं, उधर देख रहे हैं ! हम देखने वालों की नज़र देख रहे हैं !!

अन्त में वही हुआ जो किसी प्रकार बहुत दिनों से टलता आ रहा था। यूरोप में फ्रान्स और इङ्गलैण्ड के बीच जो महासमर हुआ, भारत उसके प्रभाव से अछूता न बच सका; और अन्त में हुगली के युद्ध ने भारत में फ्रान्सीसियों के भाग्य का निर्णय कर दिया। क्लाइव ने सन् १७५७ में उनके राजनीतिक पतन का डङ्का बजा ही दिया। उस समय इस फ्रान्सीसी उपनिवेश का गवर्नर रेनॉल्ट था। हुगली में बङ्गाल के नवाब सिराजुद्दौला पर विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त क्लाइव को उन पर और रेनॉल्ट पर किसी षड्यन्त्र का सन्देह हुआ और उसने रेनॉल्ट से षड्यन्त्र स्वीकार करने के लिए कहा; परन्तु वह चुप रहा। परिणाम स्वरूप उन दोनों में वैमनस्य हो गया और युद्ध ठन गया। फ्रान्सीसी नगर की रक्षा के लिए केवल १४६ यूरोपियन और ३०० भारतीय सिपाही थे। यहाँ एडमिरल वॉट्सन के नेतृत्व में बहुत से दक्ष अङ्गरेज सेनापति हुगली के लिए रवाना हो गए। उनके बाद क्लाइव भी स्वयं पहुँच गया। 'ओर

से जुदा करती है, और उत्तर में एक बड़े फाटक का खण्डहर।

सौन्दर्य-स्थल

वर्तमान चन्द्रनगर अत्यन्त रमणीक और साफ़-सुथरा नगर है; यूरोपियनों के रहने के स्थान तो सौन्दर्य के रम्य स्थल हैं। वहाँ की प्रसिद्ध इमारतें गवर्नमेण्ट हाउस, कॉन्वेण्ट, जेल और होटल—नदी किनारे एक अत्यन्त सुन्दर कुञ्ज में बनी हुई हैं। 'के डूप्ले' और 'र्यू मार्टिन' वहाँ की दो साफ़-सुथरी सड़कें हैं। 'र्यू मार्टिन' के सामने सन् १७२६ में बना हुआ सेण्ट लुइस का गिरजाघर और पास ही कबरस्तान है।

चन्द्रनगर के वैभव के दिनों का अब अन्त हो गया है। इस छोटे से नगर की प्रशान्त मुद्रा देख कर किसके हृदय में यह भावना उठ सकती है कि किसी समय यह नगर एक लाख मनुष्यों की कोलाहलपूर्ण बस्ती था ?

* * *

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिवा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिवा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य उद्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छलपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफूर हो जायगी। दुनिया के झन्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, सुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का खून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १० छोटी-छोटी, शिवाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायेंगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—खुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिवा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पार्श्वार्थ, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, प्रोपकारिता, मित्रता, सच्चाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायेंगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिवा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों के लिए १=)

लालकुम्हकड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिवा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक्री, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिल-चस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

आयरलैण्ड के गृधर

की

कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के सुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेजों की गुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनाफ्रीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेजी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुनिसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुनिसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य १॥)

देशी रियासतों का भविष्य

[“बड़े पते की एक प्रजा”]

भारत के एक प्रसिद्ध विद्वान सर एम० विश्वेसर ऐया ने हाल में एक लेख लिख कर देशी नरेशों से इस बात की अपील की है कि वे नवयुग के साथ-साथ चल कर प्रजासत्ता और प्रजा की उन्नति में सहायक हों। वे लिखते हैं कि उनके अधिकारों की मुख्य आधार-शिला उनकी प्रजा की भक्ति और अनुराग है। अगर वे समय के साथ-साथ चलेंगे और राष्ट्र की उन्नति और सङ्गठन में सहायता करेंगे, तो वे अपने भावी स्थान को बहुत दृढ़ बना सकेंगे।

भारतीय रियासतों की प्रजा का स्थान बिल्कुल विचित्र-सा है। साइमन कमीशन ने अपनी “समस्त भारत की एक सभा” वाली स्कीम में तो उनका अस्तित्व ही उड़ा दिया है। ऐसा समझा गया था कि कमीशन कोई ऐसी योजना ढूँढ़ निकालेगा, जिससे नियम-बद्ध शासन में उन्नति हो सकेगी; किन्तु कमीशन ने देशी रियासतों में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की चर्चा तक नहीं की, यद्यपि माउटेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट में इस ओर सङ्केत किया गया था।

देशी रियासतों की प्रजा अपनी स्वतन्त्रता के साथ आन्दोलन नहीं कर सकती, जितनी कि ब्रिटिश भारत की प्रजा। इसका कारण यह है कि वे एक दोहरे शासन के अन्दर हैं। देशी रियासतों की कार्यकारिणी समितियाँ साधारणतया अनियमित हैं, और ज्यादातर रियासतों में वे प्रजा के आन्दोलन को पूर्ण रूप से दबा सकती हैं। कभी-कभी तो इनके दबाने के लिए वे अनुचित उपायों तक को काम में ला सकती हैं। वर्तमान समय में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सामने स्वयं इतनी आपत्तियाँ उपस्थित हैं, कि उसे देशी रियासतों में हस्तक्षेप करने की क्रूरत नही है।

यदि आज देशी रियासतों की प्रजा अपने हकों और अधिकारों की माँग कर रही है, तो इसमें अनोखी कौन सी बात है? सभी नीचे पड़े हुए लोग ऊपर उठने को प्रयत्नशील हैं। प्रजा की ऐसी इच्छा राजाओं की स्वयं ऐसी इच्छाओं का प्रतिविम्ब है। आज राजे और महाराजे अपने सन्धि-अधिकारों और हकों की ओर गवर्नमेण्ट का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पर क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि आज से बीस-पच्चीस वर्ष पहले उनका क्या स्थान था? उन्हें बिना सरकार की आज्ञा केन एक-दूसरे से पत्र-व्यवहार करने की आज्ञा थी और न एक-दूसरे से मिलने की !!

यदि ब्रिटिश सरकार ने या साइमन कमीशन ने, एक फ्रिडरल-यूनियन से देशी रियासतों तथा देश को जोने वाले ज़ाबों की ओर राजाओं का ध्यान आकर्षित किया होता और उनके सामने प्रत्येक रियासत में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का प्रस्ताव रखा होता तो इसमें सन्देह नहीं कि उनकी अधिक संख्या ने इस पर विचार करने से इन्कार न किया होता। अब भी हमें यही आशा है, और अभी बहुत विलम्ब नहीं हुआ है।

अगर सरकारी सूबों की प्रजा ने उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त कर लिया तो देशी रियासतों की प्रजा भी नियम-बद्ध शासन की माँग करने में देर न लगाएगी। इस प्रकार के शासन का सब से पहला नियम यह है कि बिना प्रजा-प्रतिनिधित्व के टैक्स न दिया जाय। चूँकि देशी रियासतों की प्रजा के ऊपर दो शासन हैं और दोनों ही उससे कर वसूल करते और उसके लिए ज़ानून

बनाते हैं। इसलिए उनकी यह माँग होगी कि केन्द्रीय शासन और आन्तरिक शासन—दोनों में उनके प्रतिनिधि मौजूद हों—केन्द्रीय शासन में उसी हद तक, जहाँ तक कि उसकी कार्यवाहियों से उनका सम्बन्ध है।

यह बात, कि रियासतों के कुछ लोग कार्यरूप से फ्रिडरल-गवर्नमेण्ट में भाग लेने के पक्ष में हैं, उनके समय-समय पर पास हुए प्रस्तावों से स्पष्ट है। जनवरी, सन् १९२८ में जो देशी रियासतों की प्रजा की सभा त्रिवेन्द्रम, त्रावनकोर में हुई थी, उसमें फ्रिडरल व्यवस्थापिका सभाओं में प्रतिनिधि भेजने की एक व्योरेवार स्कीम उपस्थित की गई थी।

हिज़ हाइनेस महाराजा बीकानेर ने अपने एक भाषण में कहा था कि फ्रिडरल-शासन-प्रणाली से राजाओं को तथा देशी रियासतों की सरकार को किसी प्रकार का भय नहीं है। अगर सरकार इस विषय में अपना विचार पका कर ले तो फ्रिडरल के सिद्धान्तानुसार शासन सञ्चालन में आरम्भ से ही किसी प्रकार की बाधा न आवेगी।

शुरू-शुरू में जब तक कि तमाम रियासतें फ्रिडरेशन में सम्मिलित न हों, साइमन कमीशन के प्रस्तावानुसार समस्त भारत के लिए एक चुनी हुई शासन सभा के प्रति कोई एतराज नहीं किया जा सकता। ऐसा समझा जाता है कि कुछ राजे आरम्भ ही से व्यवस्थापिका सभा में अपने प्रतिनिधि न भेजेंगे। कमीशन द्वारा प्रस्तावित सभा ऐसी रियासतों से सम्बन्ध रखने वाले प्ररनों का विवेचन कर सकती है, किन्तु केवल कुछ ही समय के लिए। लेकिन अन्त में जब फ्रिडरल यूनियन सुचारु रूप से कार्य करने लगे, उस समय उपरोक्त सभा के काम सीमित कर दिए जायँ और साथ ही साथ नरेन्द्र-मण्डल का कार्य भी राजाओं के व्यक्तिगत अधिकारों और स्वयं की रक्षा तक ही परिमित रहे।

राजाओं को इस बात के समझने का प्रोत्साहन कभी नहीं दिया गया, कि नृशंस राज्य करने से नियम-बद्ध राज्य करना, अधिक गौरव और सुभीते की बात है। इस प्रजासत्ता के युग में यह बात असम्भव है कि सिवा पूर्ण सामर्थ्यवान और कुशल राजाओं के, कोई अपने स्थान पर पहले की तरह मौजूद रह सके। यह सम्भव है कि इन परिवर्तनों से सम्बन्धित कतिपय प्रस्ताव उन्हें पहले-पहले बहुत कड़वे प्रतीत हों, लेकिन गम्भीरतापूर्वक विचार करने से इस बात का उन्हें पता चलेगा कि शासक का चरित्र चाहे कैसा ही क्यों न हो, प्रजा की दृष्टि से नियम-बद्ध शासन ही सदा आदरणीय और उच्च श्रेणी का शासन समझा जायगा। यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि शासक में चाहे जैसी त्रुटियाँ क्यों न हों, राजा के ही वंशजों का राजगद्दी पर अधिकार और खज़ाने की रक्षा, नियम-बद्ध शासन प्रणाली में—जो प्रजा की इच्छा के आधार पर निर्मित है—अधिक निश्चित है।

ऐसी आज्ञा रखी जाती है कि देशी राजे कमीशन की राय के मुताबिक में न आ जायेंगे, बल्कि मौका हाथ से निकल जाने के पहले ही वे एक फ्रिडरल व्यवस्थापिका सभा की शुरू से माँग करेंगे। एक सुदृढ़ व्यवस्थापिका सभा, जिसमें देश-हितकारी सभी पहलुओं के प्रतिनिधि उपस्थित हों, जिसकी कैबिनेट बिल्कुल भारतीय हो और जो देशाधिपति की आज्ञा से जनता की इच्छाओं को कार्य रूप में परिणत करे, ऐसी संस्था उभय पक्ष के हित

और देशभक्ति दोनों करणों से देशी राजाओं को स्वीकृत होनी चाहिए। इस प्रकार देशी रियासत और ब्रिटिश भारत की प्रजाओं के एक नियम-बद्ध शासन-सूत्र में बँधने से राष्ट्रीय सङ्गठन की दृढ़ता में बड़ी उन्नति होगी और देशी नरेशों को भी इस बात का अभिमान होगा कि उनकी मातृभूमि के शासन में उनका भी हाथ है।

ऐसा समझा जाता है कि कुछ दूरदर्शी राजे अपनी तरफ से ही इस ओर कदम बढ़ा रहे हैं। इस बात का स्मरण रखते हुए कि उनके अधिकारों की मुख्य आधार-शिला उनकी प्रजा की भक्ति और प्रेम है, यदि वे समय के साथ आगे बढ़ेंगे और देश में एकता और राष्ट्रीयता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे, तो वे केवल अपनी महत्ता का ही परिचय न देंगे, वरन् अपनी भावी स्थिति को भी दृढ़ कर सकेंगे।

जहाँ तक देशी नरेशों के सामने उनके आन्तरिक प्रबन्ध के उत्तरदायित्व का प्रश्न है, उन्हें जापान के सरदारों के महान त्याग की ओर दृष्टिगत करना चाहिए। जिन्होंने सन् १८७१ में अपने देश की पुकार पर अपने अधिकारों को केवल इसलिए छोड़ दिया कि उनके देश में एकता और सामाजिक सङ्गठन की पूर्ण वृद्धि हो सके। वह त्याग, जिसके लिए आज हम अपने देशी नरेशों का आवाहन कर रहे हैं जापानी भूमि-पतियों के त्याग से कहीं छोटा होगा। देशी नरेशों से जो कुछ भी करने के लिए कहा जाता है, वह केवल इतना ही कि वे अपना प्रबन्ध समयानुसार और अपनी प्रजा के सुयोग्य सज्जनों के सहयोग से करें। उनसे स्वयम् ही उन परिवर्तनों को करने की प्रार्थना की जा रही है, जो उन्हें कुछ वर्षों के बाद करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

हम एक प्रतिस्पर्धायुक्त और घोर परिवर्तनशील संसार में रह रहे हैं और जीवन-संग्राम प्रति दिन भीषण होता जाता है। रियासतों के लोग भी अपने आर्थिक जीवन को अच्छा बनाने के लिए स्वतन्त्रता और प्रोत्साहन चाहते हैं। उनके प्रति यह बड़ा अन्याय होगा यदि जाति की दीड़ में उन्हें पीछे रोक रखा जाय। जनता मसोलिनी अथवा कमात्सुपाशा जैसे प्रजा-प्रेमी सर्वाधिकारियों की कभी-कभी अनुगामी भले ही हो जाय, पर ऐसे महान पुरुष संसार में बहुत थोड़ी संख्या में उत्पन्न होते हैं।

सब बातों को तोड़ने के पश्चात् यह अब एक अविवादप्रस्त बात है, कि प्रजासत्तात्मक शासन प्रणाली अपनी अनेक त्रुटियों के होते हुए भी, केवल एक ही शासन प्रणाली है; जिसमें वर्तमान समय में कोई जाति समृद्ध और समुन्नत हो सकती है। मि० फोर्ड ने कहा है कि—“हम प्रजासत्तात्मक राज्य में विश्वास रखते हैं, क्योंकि एक बुद्धि की अपेक्षा सम्मिलित बुद्धि अच्छी है।” मनुष्यों के एक साथ विचार करने से, एक साथ उपाय करने से—और एक साथ काम करने से ही, बड़ी से बड़ी उन्नति सम्भव है। यह काम सब देशी नरेशों तथा उनकी प्रजाओं के साथ-साथ करने का है। इसी प्रकार हर एक रियासतें उन्नति करेंगी। देशी रियासतों और ब्रिटिश सूबों के सहयोग से देश बड़े वेग से आगे बढ़ेगा और शीघ्र ही सारा देश इतना समृद्ध और सुरक्षित हो जायगा, जितना एकतन्त्र-शासन के अन्दर कभी नहीं हो सकता।

मधुवन

[प्रोफेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सज्जीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुवन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुवन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट कल्पना-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। पुस्तक को सचित्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

[श्री० शीतलासहाय, बी० ए०]

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है! वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटोक्लिङ्ग कवर से भण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १।।; स्थायी ग्राहकों से १=)

निर्मला

[श्री० प्रेमचन्द, बी० ए०]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। पुस्तक का मूल्य २।।; स्थायी ग्राहकों से १।।=) मात्र।

अपराधी

[श्री० यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव]

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार डॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विकटर ह्यूगो के "ज़ॉ मिज़रेबुज़" इब्सन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और जियो का "डैमेज़्ड गुड्स" या "मैटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर अवलम्बित होती है।

सञ्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारमौलिक तन्मोहिता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेरया हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मूल्य २।।; स्थायी ग्राहकों से १।।=)

लम्बी दाढ़ी

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव]

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक
है लम्बी दाढ़ी!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संचित विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ विक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटोक्लिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २।।; स्थायी ग्राहकों से १।।=) मात्र !!

बाल-रोग-विज्ञानम्

[प्रोफेसर धर्मानन्द शास्त्री]

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'बी-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम खर्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २।। २०

देवताओं के गुलाम

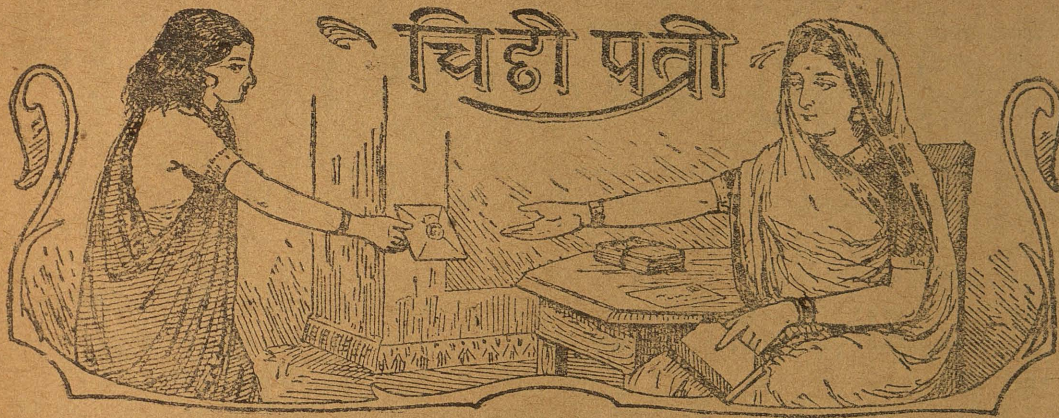
[श्री० सत्यभक्त]

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। पढ़िए और आँसू बहाइए !! मूल्य ३; स्थायी ग्राहकों से २।।

चुहुल

[श्री० त्रिवेणीलाल श्रीवास्तव, बी० ए०]

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायेंगे। काम की थकावट से जब कभी जी उब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १; स्थायी ग्राहकों से १।। केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।



[इन प्राप्त-पत्रों का उत्तर व्यक्तिगत सम्पर्कना चाहिए]

“प्रिय सम्पादक जी,

मेरी आयु १६ वर्ष की है। और मेरे विवाह को हुए ७ वर्ष हो गए। परन्तु आज तक मैंने अपनी स्त्री का मुख तक नहीं देखा है। मेरे माता-पिता ने मुझसे बिना ही पूछे मेरा विवाह कर दिया था। तब मुझे किसी प्रकार का ज्ञान भी न था। अब मैंने इस विषय पर विचार किया है। अखबारों और पुस्तकों में भी पढ़ा है कि जवान स्त्री-पुरुषों को परस्पर एक-दूसरे को पसन्द करके विवाह करना चाहिए। मैं इस समय एफ. ए. में पढ़ रहा हूँ और विचार बी. ए. तक तो पढ़ने का है ही, आगे हैरवर की इच्छा। मेरी इच्छा है कि मैं अपने पसन्द की लड़की से विवाह करूँ और इस स्त्री को स्त्री ही न समझूँ। अब उसके पत्र भी आने लगे हैं। लिखने का ढङ्ग बहुत ही करुण और मर्मस्पर्शी है, पर भाषा और अक्षर उतने शुद्ध नहीं। उन्हें देख कर हृदय पर एक बोझ तो उत्पन्न होता है—परन्तु उसके प्रति प्रेम का भाव नहीं पैदा होता! साथी लोगों में कोई तो मज़ाक उड़ाते हैं और कोई कहते हैं याद, पढ़ी-लिखी किसी मझे की बेबी से शादी करो। आप से सत्य बात भी मैं छिपाना नहीं चाहता, यहाँ मेडिकल स्कूल की एक लड़की से मेरा प्रेम-भाव भी हो गया है। वह भी मुझसे प्रेम करती है और यदि मैं यह प्रमाणित कर दूँ कि प्रथम स्त्री से मेरा कोई सम्बन्ध न रहेगा, तो वह मुझसे विवाह करने को तैयार है। आपने संसार के ऊँच-नीच देखे हैं, इसलिए मैंने मन की बात आपको लिख दी है कि आप मुझे उचित सलाह दें, कि मैं क्या करूँ? और मेरा कर्तव्य क्या है? मेरी आत्मा तो उसे स्त्री मानने को राजी ही नहीं होती, जिसे न कभी देखा न सुना। मैं इस बात में स्वतन्त्र हूँ कि जिसे चाहूँ विवाहूँ। आशा है, आप मेरी द्विविधा को मिटावेंगे। कृपा कर मेरा नाम पता—यदि मेरा पत्र आप प्रकाशित करें, तो प्रकट न करें।

आपका

.....”

* * *

नोट—प्यारे युवक, विवाह की गम्भीरता पर और स्त्री जाति के प्रति पुरुषों के उत्तरदायित्व पर विचार करते हुए, तुम्हें इस विषय का निर्णय करना उचित है। यह सत्य है कि वह विवाह तुम्हारी अनुमति के बिना उस समय हुआ, जब कि तुम अबोध बालक थे। और अब तुम्हारा प्रेम एक अन्य युवती से भा हो रहा है। परन्तु, विचारणीय बात तो यह है कि अधिकांश भारतवासियों का मत है कि विवाह के बीच में ‘प्रेम’ मुख्य प्रश्न नहीं होना चाहिए। ‘प्रेम’ का स्थान तो विवाह में सिर्फ इतना ही है, जितना रसोई में नमक का, जो स्वाद मात्र उत्पन्न कर देता है। विवाह का मतलब हिन्दू सिद्धान्त के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति है। इन चार पदार्थों की प्राप्ति के लिए ही विवाह होता है—यदि इनकी प्राप्ति की चेष्टा में प्रेम

के विपरीत भी चलना पड़े तो स्त्री-पुरुषों को चलना चाहिए। प्रेम का इस प्रकार का बलिदान हमें इतिहास में भी मिलता है। राम का सीता-त्याग, जसवन्तसिंह की रानी का पति का तिरस्कार और अन्य भी ऐसी ही घटनाओं की कमी नहीं।

हमारी निजी सलाह तो यह है कि तुम प्रथम अपनी उस स्त्री से परिचय प्राप्त करो। तुम लिखते हो कि उसके पत्रों का विषय करुण है, यह उसकी उस वेदना का चिन्ह है, जो तुम्हारे अपेक्षा-भाव से अब उसके हृदय में उत्पन्न हुई है—जब कि उसे तुम्हारे और अपने सम्बन्ध का ज्ञान हुआ है। और यह निश्चय ही उसके हृदय का असंकेत शुद्ध प्रेम का चिन्ह है। वह निश्चय ही तुम्हें प्यार करती है। यह सम्भव है कि तुम भी उसे देखने और वतने पर प्यार करने लगो। तुम्हारा कहना है कि लिखने में बहुत त्रुटियाँ हैं। यह भी सम्भव है कि वह शिक्षिता न हो। परन्तु देखो, स्त्री का शिक्षिता होना उतना आवश्यक नहीं है, जितना सुशीला और सेवाव्रती। तुम्हारी माताएँ और दादियाँ तो सुशिक्षिता न थीं, पर उन्होंने जैसी सरलता से गृहस्थी की भारी गाढ़ी चलाई, क्या तुम्हारे शिक्षित मित्रों की सुशिक्षिता स्त्रियाँ वैसा चला रही हैं?

वह गई तुम्हारे उस प्रेम की बात, जो तुमने किसी मेडिकल स्कूल की कन्या से किया है। देखो, पहली बात तो यह है कि विवाह की मर्यादा में प्रेम पीछे और कर्तव्य प्रथम है। दूसरे प्रेम एक ऐसा धोका देने वाला पदार्थ है, कि खासकर नवयुवक इसमें बहुत ठगे जाते हैं। प्रायः उन्हें प्रेम के नाम पर हल्दी की गाँठ ही मिलती है। युवकों को हमारा तो सुझा उपदेश है कि वे प्रेम के पवड़े में ज़्यादा न पड़ें। और ज्ञान-वृद्धि में मन लगावें। प्रत्येक युवक के सम्मुख जीवन-युद्ध है। विद्या पढ़ना, जीविका योग्य कार्य चुनना, उसमें सफल होना, ये तीन बातें साधारण नहीं। हम देखते हैं कि युवकों को इनकी परवाह नहीं होती, वे ‘प्रेम प्रेम’ चिन्ताते हैं और पेट पीटते फिरते हैं। पीछे उनका प्रेम भूखा-नष्टा फिरते-फिरते असमय में ही सर जाता है। इसलिए मित्र! जिससे तुम्हारे सम्बन्ध स्थापित हो गए हैं, उनसे ही प्रेम करो। प्रेम को बिखेरते न फिरो, न प्रेम की दुकान लगाओ, न उसका जुआ खेलो। उसे सब खतरों से बचा कर, छिपा कर रखो—जब सब धन नष्ट हो जाता है, तब प्रेम-धन मनुष्य को बड़ी तस्कीन देता है।

देखो, कल्पना करो! तुम्हारे बहिन-भाई, पुत्र आदि यदि क्रूरप और मूर्ख हों—या दुर्गुणपूर्ण हों, तो क्या तुम उन्हें छोड़ कर पड़ोस के सुन्दर बच्चे या किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम करोगे? वही ममता तुम्हें उस स्त्री से भी करनी चाहिए, जो वास्तव में तुम्हारी पत्नी हो चुकी है। तुम्हें इस बात पर भी विचारना चाहिए कि कम्बخت हिन्दू-धर्म और हिन्दू कानून एक बार जिस स्त्री का ज्ञान या अज्ञान में किसी भौल विवाह हो जाय,

उसे सब तरह उसी पुरुष से बाँध देना है। उसके लिए जीवित रहने, सब द्वार बन्द हो जाते हैं! इसलिए बिना अपराध उस बालिका पर निष्ठुर न बनो, यदि वह परिश्रमी, दयालु, प्रेमी, गृह-कार्यों में चतुर, स्त्री-गुणों के योग्य है तो तुम उसे ही ग्रहण करो। सन्तोष और धैर्य बड़ी चीजें हैं, इन्हें न खोओ, लिप्ता और महत्वाकांक्षा में मत डबो। अलवत्ता यदि वह तुमसे प्रेम न करती हो और जैसे तुम्हारे विपरीत विचार हैं, वैसे ही उसके भी हों, वह उतनी साहसी भी हो—जितना कि समाज की इस रुढ़ि के विरुद्ध खड़े होने के लिए होना अनिवार्य हो—तो तुम अपनी इच्छानुसार उसे त्याग कर अपने पसन्द की स्त्री से विवाह कर सकते हो। परन्तु स्मरण रखना—रूप, शृङ्गार, वनाव और मधुर बातें ही स्त्री का भूषण नहीं। पक्षित्व के गुण बड़े गम्भीर हैं। तुम सदैव ही अपनी माता, दादी और अन्य वृद्ध वृज्ज स्त्रियों के गुणों पर विचार करना और देखना कि जो भी स्त्री तुम्हारी पत्नी कदावे—उसमें उनके जैसे मौलिक गुण हैं भी या नहीं। आशा है तुम पथ-भ्रष्ट होकर चिन्ता पतले न बाँधोगे। जब तक देश का कानून इतना अन्धा है, तब तक इसके अतिरिक्त दूसरी कोई सलाह सम्भव भी तो नहीं है!

—सम्पादक

* * *

“श्रेष्ठ सम्पादक जी,

मैं आपसे कुछ परामर्श लेना चाहता हूँ। ६ मास हुए मेरा विवाह हो गया है। मेरी उम्र इस समय २५ वर्ष की है। यह विवाह मेरे पिता ने ज़बर्दस्ती मेरी स्त्री के विपरीत किया है। सङ्कोच और विनयवश मैंने चुपचाप उनकी आज्ञा मान ली थी—मगर अब मेरे मन में द्वेष और क्रोध की आग धधक रही है और मैं घर छोड़ कर चले जाने और जन्म भर अज्ञात रहने की बात सोच रहा हूँ। एक यूरोपियन लड़की से मैंने विवाह करने का निश्चय कर लिया था। वह मुझे पसन्द भी खूब थी और प्रेम भी करती थी। अब भी वह मेरी प्रतीक्षा में है और उसे इस बात का ज़रा भी ज्ञान नहीं, कि मैं इस प्रकार फँस गया हूँ। मैंने समझा था कि इतने आग्रह से यह विवाह किया जाता है, तो कुछ तो ख़ास बात होगी। सम्भव है लड़की खूब योग्य हो। मगर मैंने देखा—इसमें न रूप है न गुण! स्वभाव में भी एक ही क्वखड़ और लड़ाका सी प्रतीत होती है। संस्कार इतने बुरे हैं कि आते ही अलग होने की सम्मति दे रही है। निर्य नई वस्तुओं की फर्माइशों का ताँता लगा रहता है। मैं अनसुनी करता हूँ, तो निखट्ट आदि उपनामों से याद करती है। कहती है, जब कमाते नहीं और मुझे जो मैं चाहती हूँ, वस्तु तक नहीं लाकर देते—तो ब्याहा क्यों? वह बारम्बार उन विवाहार्थी युवकों की एक सूची सुनाती है, जो उसके पिता के पास आते थे। वह मेरा तिरस्कार भी करती है; शायद प्रेम भी नहीं करती और मैं तो करता ही नहीं, यह साफ़ बात है। पर अब मैं करूँ क्या, यह समझ में नहीं आता। मैं चुल-चुल कर सूख रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि पिता के विरुद्ध आचरण करूँ—मगर सहनशीलता की भी एक हद होनी चाहिए। क्या आप मुझे उचित सलाह देंगे?

—एक युवक”

* * *

नोट—भाई, मैं तुम्हारे प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता हूँ! और तुम्हारे कष्ट को भी समझता हूँ। पर मैं तुम्हारा ध्यान अपने उन विचारों की तरफ भी आकृष्ट किया चाहता हूँ, जो अभी मैंने एक युवक के पत्र के उत्तर में ऊपर प्रकट किए हैं। तुम भी उन पर विचार करो।

(रोप मैग ३६वें पृष्ठ पर देखिए)

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अष्ट (हं दं कं) ३	अपराधी (चाँ कां) २॥	अश्रुपात (गं पुं मां) १॥, १॥	अरुणाय (इं प्रे) १	अनन्तमती (अं भं) ॥=	अनाथ-पत्नी (चाँ कां) २	अनाथ बालक (इं प्रे) १	अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ कां) ३	अबलाओं पर अत्याचार (चाँ कां) २॥	अबलोजति पद्य-माला (गुं लं) ३॥	अभागिनी (हं दां कं) १	अभिमान (गुं कां) १	अमृत और विष (दो भाग) (चाँ कां) ५	अवतार (सरं प्रे) ॥	अहल्याबाई (इं प्रे) १॥	अज्ञाना देवी (नं दां सं) ॥=	अज्ञाना सुन्दरी (प्रां कं मां) १	अज्ञाना-हनुमान (सं आं) १॥, १॥	आदर्श चाची (बं प्रे) १॥, १॥	आदर्श दम्पति (अं भं) १॥, १॥	आदर्श पत्नी (सं आं) ॥	आदर्श बहू (अं भं) ॥, १॥	आदर्श बहू (उं बं आं) ॥	आदर्श भगिनी (खं विं प्रे) १	आदर्श महिला (इं प्रे) २॥	आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रां दं अं) १॥	आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=	आदर्श ललना (उं बं आं) ॥	आरोग्य-साधन (महारामा गाँधी) ॥=	आर्य-महिला-रत्न (बं प्रे) २॥, २॥	आशा पर पानी (चाँ कां) ॥	इन्दिरा (खं विं प्रे) ॥	इं (हं दां कं) १॥	ईश्वरीय न्याय (गं पुं मां) ॥	उत्तम सन्तति (जटां वै) १॥	उपयोगी चिकित्सा (चाँ कां) १॥	उमासुन्दरी (चाँ कां) ॥	उमा (उं बं आं) १॥	कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=	कन्या-दिनचर्या (गुं लं) १	कन्या-पाकशास्त्र (अं प्रे) १	कन्या-पाठशाला २॥	कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रां नं लं) १॥	कन्या-शिक्षा (सं सां प्रं मं) १	कन्याओं की पोथी १	कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं मं) ॥=	कपाल-कुण्डला (हं दां कं) १॥	कमला (अं प्रे) १॥	कमला-कुसुम (सचित्र) (गं पुं मां) १	कमला के पत्र (चाँ कां) ३	कृष्णाकुमारी ॥	कल्याण देवी (बेलं प्रे) ॥=	कलङ्किनी (सं सां प्रं मं) ॥=	कल्याणमयी चिन्ता (कं मं जीं) ॥	कुल-लक्ष्मी (हिं मं) १॥	कुल-कमला ॥	कुन्ती देवी १॥	कुल-ललना (गुं लं) ॥=	कोहेनूर (बं प्रे) १॥, २	क्षमा (गुं लं) ॥	गर्भ-गर्भिणी ॥	गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥	ग्रह का फेर (चाँ कां) ॥	गायत्री-सावित्री (बेलं प्रे) १	गार्हस्थ शास्त्र (तं भां अं) १	गीता (भाषा) १॥	गुदगुदी (चाँ कां) ॥	गुणलक्ष्मी (उं बं आं) ॥=	गुप्त सन्देश (गं पुं मां) ॥=	गृहदेवी (मं प्रं कां) १	गृह-धर्म (वं दं सं) ॥	गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु) ॥	गृह-वस्तु-चिकित्सा (चिं कां) ॥	गृहलक्ष्मी (मां प्रे) १	गृह-शिक्षा (रां पूं प्रे) ३	गृहस्थ-चरित्र (रां प्रे) १	गृहिणी (गुं लं) १	गृहिणी-कर्त्तव्य (सुं अं प्रं मं) २॥	गृहिणी-गीताञ्जलि (रां श्यां) ॥	गृहिणी-गौरव (अं मां) १॥, २	गृहिणी-चिकित्सा (लं नां प्रे) २॥	गृहिणी-भूषण (हिं हिं कां) ॥	गृहिणी-शिक्षा (कं मं जीं) १॥	गौरी की रात (प्रां कां मां) ३	गौरी-शङ्कर (चाँ कां) ॥=	घरेलू चिकित्सा (चाँ कां) १॥	चिन्ता (सचित्र) (उं बं आं) ॥	चिन्ता (बं प्रे) १॥	चित्तौड़ की चढ़ाईयाँ (बं प्रे) ॥=	चित्तौड़ की चिता (चाँ कां) १॥	चौक पूरने की पुस्तक (चित्रं प्रे) १	छोटी बहू (गुं लं) १	जनन-विज्ञान (पां एं कं) ३, ३॥	जननी-जीवन (चाँ कां) १	जननी और शिशु (हिं अं रां) ॥=	जपाकुसुम (लं नां प्रे) २	जया (लं रां सां) १	ज्ञा (गं पुं मां) ॥=	जासूस की डाली (गं पुं मां) १	जीवन-निर्वाह (हिं अं रं) १	जेवनार (हिं पुं एं) १	तरुण तपस्विनी (गुं लं) १	तारा (इं प्रे) १	दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव (चाँ कां) २॥	दमयन्ती (हरिं कं) ३॥	दमयन्ती-चरित्र (गुं लं) ॥=	दम्पति-कर्त्तव्य-शास्त्र (सां कुं) १	दम्पति-मित्र (सं आं) ३॥	दम्पति-रहस्य (गों हां) १	दम्पति-सुहृद (हिं मं) १	दाम्पत्य जीवन (चाँ कां) २॥	दाम्पत्य-विज्ञान (पां एं कं) २	दिव्य-देवियाँ (गुं लं) १॥=	दुःखिनी (गुं लं) ॥	दुलहिन (हिं पुं मं) १	देवबाला (खं विं प्रे) ॥	देवलदेवी (गुं लं) १	देवी चौधरानी (हं दां कं) २	देवी जोन (प्रकां पुं) ॥=	देवी पार्वती (गं पुं मां) १, १॥	देवी द्रौपदी (पाँपूलर) ॥=	देवी द्रौपदी (गं पुं मां) ॥	देवी सती ॥=	द्रौपदी (हं दां कं) २॥, ३॥	धर्मात्मा चाची और अभाग्य भतीजा (चिं भं गुं) १	ध्रुव और चिल्लाया (चिं शां प्रे) १	नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥	नल-दमयन्ती (सचित्र) बं प्रे) १॥, १॥, २	नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३	नन्दन निकुञ्ज (गं पुं मां) १, १॥	नवीना (हरिं कं) १॥	नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चिं भं गुं) ३	नारी-उपदेश (गं पुं मां) ॥	नारी-चरित्रमाला (नं किं प्रे) ॥=	नारी-नवरत्न (मं भां हिं सां सं) २	नारी-महत्त्व ॥	नारी-नीति (हिं अं प्रं) ॥=	नारी-विज्ञान (पां एं कं) २, २॥	नारी-धर्म-विचार १॥	निर्मला (चाँ कां) २॥	पतिव्रता (इं प्रे) १	पतिव्रता (गं पुं मां) १॥, १॥=	पतिव्रता-धर्मप्रकाश १	पतिव्रता अरुन्धी (एसं आरं बेरी) ॥=	पतिव्रता गान्धारी (इं प्रे) ॥=	पतिव्रता मनसा (एसं आरं बेरी) ॥	पतिव्रता-माहात्म्य (वें प्रे) १	पतिव्रता रुक्मिणी (एसं आरं बेरी) ॥=	पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=	पत्नी-प्रभाव (उं बं आं) १	परिणीता (इं प्रे) १	पत्राञ्जलि (गं पुं मां) ॥	पण्डित जी (इं प्रे) १॥	पाक-कौमुदी (गुं लं) १	पाक-प्रकाश (इं प्रे) ॥=	पाक-विद्या (रां नां लां) २	पाक-चन्द्रिका (चाँ कां) ४	पार्वती और यशोदा (इं प्रे) ॥=	प्राचीन हिन्दू-माताएँ (नां दां लं एं सं) १	प्राणघातक-माला (अभ्यु) ॥=	प्राणनाथ (चाँ कां) २॥	प्रेमकान्त (सुं अं प्रं मं) १॥	प्रेम-गङ्गा (गं पुं मां) १॥, १॥	प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥	प्रेम द्वादशी १॥, १॥	प्रेमधारा (गुं लां चं) ॥	प्रेम-परीक्षा (गुं लं) १=	प्रेम-पुष्पिमा (प्रेमचन्द) (हिं पुं एं) ३	प्रेम-प्रतिमा (भां पुं) ३	प्रेम-प्रमोद (चाँ कां) २॥	प्रेमाश्रम (हिं पुं एं) ३॥	प्रेम-प्रसून (गं पुं मां) १=, १॥=	बच्चों की रक्षा (हिं पुं एं) १	बड़ी बहू (रां नां लां) ॥=	बहता हुआ फूल (गं पुं मां)
-------------------	---------------------	------------------------------	--------------------	---------------------	------------------------	-----------------------	-------------------------------	---------------------------------	-------------------------------	-----------------------	--------------------	----------------------------------	--------------------	------------------------	-----------------------------	----------------------------------	-------------------------------	-----------------------------	-----------------------------	-----------------------	-------------------------	------------------------	-----------------------------	--------------------------	---------------------------------------	----------------------------	-------------------------	--------------------------------	----------------------------------	-------------------------	-------------------------	-------------------	------------------------------	---------------------------	------------------------------	------------------------	-------------------	---------------------------	---------------------------	------------------------------	------------------	--	---------------------------------	-------------------	---	-----------------------------	-------------------	------------------------------------	--------------------------	----------------	----------------------------	------------------------------	--------------------------------	-------------------------	------------	----------------	----------------------	-------------------------	------------------	----------------	-----------------------------	-------------------------	--------------------------------	--------------------------------	----------------	---------------------	--------------------------	------------------------------	-------------------------	-----------------------	-------------------------------	--------------------------------	-------------------------	-----------------------------	----------------------------	-------------------	--------------------------------------	--------------------------------	----------------------------	----------------------------------	-----------------------------	------------------------------	-------------------------------	-------------------------	-----------------------------	------------------------------	---------------------	-----------------------------------	-------------------------------	-------------------------------------	---------------------	-------------------------------	-----------------------	------------------------------	--------------------------	--------------------	----------------------	------------------------------	----------------------------	-----------------------	--------------------------	------------------	---	----------------------	----------------------------	--------------------------------------	-------------------------	--------------------------	-------------------------	----------------------------	--------------------------------	----------------------------	--------------------	-----------------------	-------------------------	---------------------	----------------------------	--------------------------	---------------------------------	---------------------------	-----------------------------	-------------	----------------------------	---	------------------------------------	----------------------	--	----------------------------------	----------------------------------	--------------------	--	---------------------------	----------------------------------	-----------------------------------	----------------	----------------------------	--------------------------------	--------------------	----------------------	----------------------	-------------------------------	-----------------------	------------------------------------	--------------------------------	--------------------------------	---------------------------------	-------------------------------------	--------------------------------------	---------------------------	---------------------	---------------------------	------------------------	-----------------------	-------------------------	----------------------------	---------------------------	-------------------------------	--	---------------------------	-----------------------	--------------------------------	---------------------------------	---------------------------	----------------------	--------------------------	---------------------------	---	---------------------------	---------------------------	----------------------------	-----------------------------------	--------------------------------	---------------------------	---------------------------

केसर की क्यारी

दम मेरा खजूर में है, खजूर कफ़े-कातिल में है !

सादगी पर उसके मर जाने की हसरत दिल में है,
बस नहीं चलता, कि फिर खजूर कफ़े-कातिल में है !
देखना तक्ररीर की लज्जत, कि जो उसने कहा—
मैंने यह जाना, कि गोया यह भी मेरे दिल में है !
गरचे है किस-किस तुराई से बले बाई हमा,
जिफ़्त मेरा मुझसे बेहतर है, कि उस महफ़िल में है !
रञ्ज रह क्यों खींचिए वामादगी को इश्क़ है
उठ नहीं सकता, हमारा जो कदम मजिल में है !

—“गालिब” देहलवी

किस राज़ब में है, किस आफ़त में है, किस मुशकिल में है !
दम मेरा खजूर में है, खजूर कफ़े-कातिल में है !
काम क्या करना है, कोई काम अब करना नहीं,
क्या मेरे दिल में है, अब मरने की हसरत दिल में है !
अब हमारे क़त्ल की दे, तो शहादत कौन दे ?
एक दम था तेरा का, वह क़ब्ज़-कातिल में है !
झूठने वाली निगाहों का, पता मिलता नहीं;
इसके दिल में, उसके दिल में, कोई किसके दिल में है !
ग़ैर को इज़्ज़त मिली, मुझको हुई ज़िन्नत नसीब,
यह भी है, वह भी है, सब कुछ, आपकी महफ़िल में है !
आप हैं मेरी नज़र में, आप मेरे दिल में हैं,
कौन है किसकी नज़र में, कौन किसके दिल में है !
बड़मे जाना का तसौवर, कोई दम जाता नहीं,
हम अकेले हैं, हमारा दिल भरी महफ़िल में है !
आज खुश तक्रदीर मुझ-सा कौन है, कोई नहीं ;
दिल मेरे पहलू में, वह दिलबर भी मेरे दिल में है !
ऐशो-राहत लुफ़्त का, बाहर पता मिलता नहीं,
तेरे कूबे में, तेरे घर में, तेरी महफ़िल में है !
कोई आया भी, मिला भी, अपने घर भी चल दिया ;
जो मेरे दिल में तमन्ना थी, वह अब तक दिल में है !
सैकड़ों आज़ार हैं, आलाम हैं, अफ़कार हैं ;
एक मेरी जान, वह भी “नूह” किस मुशकिल में है !

“नूह” नारवी

सर में सौदा इश्क़ का है, और वह सूरत दिल में है,
यक़ कदम है रास्ते में, यक़ कदम मजिल में है !
किस क़यामत की कशिश, यह जज़ब-कामिल में है,
तीर उनके हाथ में, पैकाँ हमारे दिल में है !
आँख से सीने में, सीने से कभी यह दिल में है ;
क्या कहूँ तेरी तमन्ना को, कि किस मुशकिल में है !
सौ बहारें उस पै सदक़े, लाख गुल उस पर निसार ;
वह लहू का एक क़तरा, जो हमारे दिल में है !
अल्ला-अल्ला यह मेरी, मश्क़े-तसव्वर का क़माल ;
मैं हूँ इस महफ़िल में, और महफ़िल की महफ़िल दिल में है !
हर तड़प के साथ आ जाती है मुझमें ताज़ा रूह ;
शुक़ है इतना असर तो, इज़तिराबे-दिल में है !

—“जिगर” मुरादाबादी

देखना है किस क़दर दम, खजूर-कातिल में है ?
अब भी यह अरमान, यह हसरत दिल-बिस्मिल में है !
ग़ैर के आगे न पूछो, इसमें है एक ख़ास राज़ ;
फिर बता दूँगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है !
खींच कर लाई है सब को, क़त्ल होने को उमीद,
आशिक़ों का आज जमघट, कूच-कातिल में है !
वह कभी आते नहीं, वह हमको बुलवाते नहीं,
क्या कहें, किससे कहें, हसरत जो मेरे दिल में है ?
एक जानिव है मसीहा, एक जानिव है क़ज़ा ;
किस क़शाक़श में पड़ी है, जान किस मुशकिल में है !
जामे-जम की कुछ हमें हाजत नहीं, परवा नहीं ;
दोनों आलम का खिंचा, नक़्श हमारे दिल में है !
एक से करता नहीं क्यों, दूसरा कुछ बातचीत ;
देखता हूँ मैं जिसे, वह चुप तेरी महफ़िल में है !
ज़ल्म खाकर भी उसे है, ज़ल्म खाने की हवस !
हौसला कितना तड़पने का तेरे “बिस्मिल” में है !

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

यह बहरे-नाम में थी उम्मीद, अब मैं पार उतरता हूँ ;
बुबो दी “नूह” ने करती, मेरी टकरा के साहिल से !!

—“नूह” नारवी

न हो इतना मिज़ाजे यार, बरहम नालए दिल से,
यह बेचारा अभी वाकिफ़ नहीं, आदाबे-महफ़िल से !
मुझे अब ख़ौफ़ ही क्या, हिज़्र में तनहाइए दिल से ?
हज़ारों महफ़िलें लेकर, उठूँगा तेरी महफ़िल से !
समझ कर फूँकना इसको, ज़रा ऐ दागे नाकामी ;
बहुत से घर भी हैं आवाद, इस उजड़े हुए दिल से !
मुहब्बत में क़दम रखते ही, गुम होना पड़ा मुझको ;
निकल आई हज़ारों मनज़िलें, एक-एक मनज़िल से !
बढ़ी जब वहशते दिल, गिर पड़ेंगी आप ज़ख़ीरें !
तेरे दीवाने डरते हैं, कहीं कैंदे सलासिल से ?

—“जिगर” मुरादाबादी

कभी सुन ले, अरे ओ साज़े-इशरत छेड़ने वाले !
अजब आवाज़ आती, है, मेरे टूटे हुए दिल से !
बुझी जाती हैं शमएँ, दिल हिले जाते हैं सीनों में !
बता देना, कि यह उठ कर चला है, कौन महफ़िल से ?
नहीं है आह में तासीर, ख़ैर, अच्छा निकलवा दो—
बता देता मैं वना, इस तरह उठते हैं महफ़िल से !!
अरे ओ पूछने वाले, सबब मेरे न हँसने का,
मुझे रोना भी अब, मुहत हुई, आता है मुशकिल से !
ज़माने में, जब आधी रात को होता है सबाटा !
बराबर आपकी आवाज़, आती है मेरे दिल से !!

—“जोश” मलीहाबादी

कोई क्योंकि वहाँ जाए, अगर जाए तो किस दिल से ?
पलट कर, आज तक दुनिया न आई क़ूच-कातिल से !
जनाज़ा वह उठाए भी, तो क्यों कर, और किस दिल से ?
गिराए जिसने दो आँसू, मेरे मरने पे मुशकिल से !
बहुत मुशकिल हुआ, दरियाए-ग़म का पार कर जाना ;
कि मौजें दूर रखती हैं, मेरी करती को साहिल से !
वह लड़ते हैं लड़ें, हमको नहीं ग़म इस लड़ाई का ;
असर होगा मुहब्बत में, तो दिल मिल जायगा दिल से !
न आना हो उन्हें तो, वह न आने की ख़बर कर दें ;
यहाँ एक-एक बड़ी इस फ़िक्र में, कटती है मुशकिल से !
वह क्यों नाराज़ होते हैं, वह क्यों बेज़ार होते हैं ?
चला जाता हूँ महफ़िल से, उठा जाता हूँ महफ़िल से !
नहीं मालूम, अब क्या इनक़िलाब आएगा आलम में—
मरीज़े-ग़म तुम्हारा, साँस भी लेता है मुशकिल से !
इधर मैं डूबने आया हूँ, दरियाए-मुहब्बत में !
उधर दुनिया बुलाती है, मुझे घबरा के साहिल से !
जो तुम मुझसे मिलो, तो कुछ यक़ीन आए मुहब्बत का !
यह क्योंकि मैं समझ लूँ दिल में अब, दिल मिल गया दिल से !
कोई देखे तो अन्दाज़े-क़रम, बेवर्द कातिल का !
बुरा भी जानता है वह, मगर मिलता है “बिस्मिल” से !!

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

नज़र मिलती है आसानी से, दिल मिलता है मुशकिल से !

खुदा महफ़ूज़ रखे, इश्क़ के जज़वाते-कामिल से—
ज़मीं गर दूँ से टकराई, जहाँ दिल मिल गया दिल से !
हिजाबे नाज़ से आरास्ता होकर, न यों निकलो !
अभी वाकिफ़ नहीं अच्छी तरह, तुम रज़े-महफ़िल से !!
किसी को और क्या समझा सकेगा, मुद्दया दिल का ;
समझता हो, खुद अपने दिल की बातों को जो मुशकिल से !
अभी पैवस्त हैं, काफ़िर निगाहें, शोख़ अदा उनकी !
किसी दिन देखना, बिजली गिराऊँगा इसी दिल से !
भँभल पे गरदिशे-दौराँ ! यही मन्ज़ूर है उनको ;
दिखा दूँ, उठने वाले, किस तरह उठते हैं महफ़िल से !
यह क्या था, यूँ तो वह देखा किए, दम तोड़ना मेरा !
मगर अँगड़ाई ली, एक रूह निकली, जब मेरे दिल से !
“अज़ीज़” ए-ज़ाज़ हुस्ने-रूह परवर की, कोई हद है ?
हज़ारों दिल बना डाले, मेरे टूटे हुए दिल से !!

—“अज़ीज़” लखनवी

वह फ़रमाते थे यह अरमाँ, तेरा निकलेगा मुशकिल से ;
जब आँखों से लड़ीं आँखें, तो दिल खुद मिल गया दिल से !
जो आए हों दिले-पुर-आरज़ू में, सख़्त मुशकिल से ;
उन्हें मैं दिल से जाने की इजाज़त दूँ, तो किस दिल से ?
सुनी यह बात हमने इश्क़ में, एक मर्द-कामिल से ;
नज़र मिलती है आसानी से, दिल मिलता है मुशकिल से !
कोई पहलू रहा बाज़ी, न अब इज़हारे-उलफ़ाक़ का ;
वह दिल लेकर यह कहते हैं, हमें चाहोगे किस दिल से !
हमारा ख़ाक़ उड़ाना, क्या यूँही बेकार जाएगा ;
रहेंगे तेरे दिल में, हम निकल कर तेरी महफ़िल से !
खुदाई भर का जिग्मा तो, यह बन्दा ले नहीं सकता ;
कोई चाहे न चाहे आपको, चाहुँगा मैं दिल से !
हमें ऐ आरज़ू-मर्ग, अब क्या हुक़म होता है ?
क़ज़ा से हम मिलें पहिले, कि पहिले अपने कातिल से !
मुझे सब नियामतें दुनिया की मिल जाएँ, जो मिल जाएँ—
तेरी जादू भरी आँखें, मेरे हसरत भरे दिल से !

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकें

भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०) ॥	मिलन-मन्दिर (हिं० पु०) २॥	विलासकुमारी या कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥	सती चिन्ता (उ० ब० आ०) ॥	सावित्री (ब० प्रे०) १=
भारतवर्ष की सच्ची देवियाँ (शि० व० ला० व०) ॥=	मितव्ययिता (हिं० ग्रं० र०) ॥=	विवाहित प्रेम (स० आ०) १॥, १॥	सती दमयन्ती (ब० प्रे०) ॥=	,, (हिं० पु० मं०) १
भारतीय ललनाओं को गुप्त- सन्देश (गं० पु० मा०) ॥	मीराबाई (ख० वि० प्रे०) ३=	विष्णु-प्रिया चरित्र (इ० प्रे०)=	,, ,, (उ० ब० आ०) ॥	,, (हरि० कं०) १॥
भारतीय स्त्रियाँ (,, ,,) १॥	मुखराज (चाँ० का०) २	वीर और विदुषी स्त्रियाँ (ल० बु० डि०) ॥	सती-दाह (चाँ० का०) २॥	सावित्री और गायत्री (बेल० प्रे०) ॥
भारतीय विदुषी (इं० प्रे०) ॥	मेहरुसिसा (चाँ० का०) ॥	वीर माताएँ (,,) ॥	सती पद्मिनी (गृ० ल०) १=	सावित्री-सत्यवान (उ० ब० आ०) ॥
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) (ख० वि० प्रे०) १॥	युगलाङ्गुलीय (इं० प्रे०) १=	,, ,, (श्या० ला० व०) ॥	सती पार्वती (गं० पु० मा०) १	,, ,, (ब० प्रे०) १॥, १॥, २
भार्या-हित (न० कि० प्रे०) ॥=	युवती-योग्यता (इं० प्रे०) २=	वीर माता का उपदेश (अ० सा० मं०) १	,, ,, (पाँपलर) ॥	,, ,, (स० आ०) ॥, १
भार्या हितैषिकी (प्रा० वा० मा०) १॥	युवती-रोग-चिकित्सा (चि० भ० गु०) १=	वीरवाला पञ्चरत्न (उ० ब० आ०) २	सती-बेहुला (ब० प्रे०) २॥, २॥	,, ,, (पाँपलर) ॥
मैफली दीदी (इं० प्रे०) ॥	रजनी (उ० ब० आ०) ॥=	वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (सा० भ० लि०) ॥=, १=	सती मदालसा (उ० ब० आ०) ॥	सीता की अग्नि-परीक्षा (स० सा० प्र० मं०) १=
मणिमाला (,,) २	रमणी-कर्तव्य (,,) ॥=	वैवाहिक अत्याचार और मातृत्व (अ० प्रे०) ॥	सती-महिमा (उ० ब० आ०) १॥, १॥	सीता-चरित्र (इं० प्रे०) १॥
,, (चाँ० का०) ३	रमणी-पञ्चरत्न (रा० प्रे०) १	वीर वीराङ्गना (उ० ब० आ०) ॥	सती-वृत्तान्त (ला० रा० सा०) १॥	सीता जी का जीवन-चरित्र (रा० प्रे०) १
मदालसा (ल० प्रे०) १=	रमणी-रत्नमाला (रा० प्रे०) १=	वीराङ्गना (स० आ०) ॥	सती शकुन्तला (ब० प्रे०) ॥=	सीताराम (उ० ब० आ०) १॥
मदर-इण्डिया (उमा नेहरू) २॥	उमासुन्दरी (ह० दा० कं०) २॥	व्यञ्जन-प्रकाश (न० कि० प्रे०) १	सती शुक्ला (उ० ब० आ०) ॥	सीता-वनवास (इं० प्रे०) ॥=
मदर-इण्डिया का जवाब (गं० पु० मा०) १	रङ्गभूमि (गं० पु० मा०) २, ६	व्यञ्जन-विधान (दो भाग) १	सती-सतीत्व (उ० ब० आ०) १	,, ,, (ब० प्रे० को०) ॥=
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥	राजस्थान की वीर रानियाँ (ल० रा० स०) १	शकुन्तला की कथा (रा० द० अ०) १=	सती-सामर्थ्य (,,) ॥, १॥	,, (स० आ०) ॥=, १=
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) २	राधारानी (ख० वि० प्रे०) १=	शकुन्तला (ब० प्रे० कं०) ॥=	सती सावित्री (ना० द० स० प्रे० सं०) १=, १	सीता (सचित्र) (ब० प्रे०) २॥
मनोरमा (चाँ० का०) २॥	रामायणी कथा (अभ्यु०) १	,, (न० द० स० प्रे० सं०) ॥	,, (ब० प्रे०) ॥=	सीतादेवी (पाँपलर) ॥=
महारानी पद्मावती (ल० प्रे०) १=	लक्ष्मी (इं० प्रे०) ॥=	,, (उ० ब० आ०) ॥	सती सीता (ब० प्रे० कं०) ॥=	सुकुमारी (अ० प्रे०) ॥=
महारानी वृन्दा (एस० आर० बेरी) १	,, (अ० प्रे०) १	,, (ब० प्रे०) २, २॥, २॥	,, (उ० ब० आ०) १	सुखी गृहस्थ (प० ला० सि०) ॥
महारानी शशिप्रभा देवी (बेल० प्रे०) २॥	,, (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥=	,, (पाँपलर) ॥=	सती सीमन्तिनी (एस० आर० बेरी) ॥	सुघड़ चमेली (गं० पु० मा०)=
महारानी सीता (ब० प्रे०) २॥	लक्ष्मी-चरित्र (स० सा० प्र० मं०) १	शर्मिष्ठा (उ० ब० आ०) ॥	सती सुकन्या (ब० प्रे०) १॥, १॥	सुघड़ दर्ज़िन (इं० प्रे०) ॥
महासती अनुसूया (एस० आर० बेरी) ॥=	लक्ष्मी-वहू (गृ० ल०) १=	शर्मिष्ठा-देवयानी (ब० प्रे०) २॥, २॥, २॥	,, (उ० ब० आ०) १	सुघड़ बेटी (सर० प्रे०) ॥
महासती मदालसा (ब० प्रे०) १॥, २, २॥	लक्ष्मी-सरस्वती सम्वाद (न० कि० प्रे०) ३=	,, (पाँपलर) ॥	सती सुनोति (उ० ब० आ०) ॥	सुनोति (उ० ब० आ०) ॥
महिला-महत्त्व (हिं० पु० मं०) २	लच्छमा (ह० दा० कं०) १॥	शान्ता (चाँ० का०) ॥	सती सुनोति (उ० ब० आ०) ॥	सुभद्रा (ब० प्रे०) २, २॥, २॥
महिला-मोद (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥	ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी (मा० प्र० बु०) १=	शिव-सती (ब० प्रे०) ॥=	सती सुलक्षणा (एस० आर० बेरी) ॥	सुहागरात (इं० प्रे०) १
महिला-व्यवहार-चन्द्रिका (रा० द० अ०) ॥	ललना-सहचरी (सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥	शिशु-पालन (इं० प्रे०) १	सस-सरोज (हिं० पु० ए०) ॥	सुर-सुन्दरी (ग्रं० मं०) १=
महिला-स्वास्थ्य-सञ्जीवनी (गृ० ल०) १॥	बनमाला (चाँ० का०) ३	,, ,, (स० आ०) १	सफल-ग्रहस्थ (सा० भ० लि०) ॥	सुशीलाकुमारी (सर० प्रे०) ॥
मङ्गल-प्रभात (चाँ० का०) १	वनिता-विनोद (मा० प्र०) ॥=	शैलकुमारी (चाँ० का०) २	सदाचारिणी (गृ० ल०) १=	सुशीला-चरित्र (इं० प्रे०) १॥
मञ्जरी (गं० पु० मा०) १॥, १॥	वनिता-विलास (गं० पु० मा०) ॥	शैलवाला (ह० दा० कं०) १	सफल माता (चाँ० का०) २	सुशीला विधवा (बे० प्रे०) १
माता का पुत्री को उपदेश (रा० प्रे०) ३=	वनिता-हितैषिणी (रा० प्रे०) १=	शैल्या (उ० ब० आ०) १, १=	समन्वय (भा० ग्रं० मं०) ३॥	सुन्दरी (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥
माता के उपदेश (सर० मं०) १=	विजया (गं० पु० मा०) १॥	शैल्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥, २॥, ३	समाज की चिनगारियाँ (चाँ० का०) ३	सुभद्रा (पाँपलर) ॥=
माता-पुत्र (ना० स० प्रे०) १॥=	विदुषी-रत्नमाला (रा० प्रे०) १=	,, ,, (पाँपलर) ॥	सरल व्यायाम (बालिकाओं के लिए) (इं० प्रे०) १=	सौभाग्यवती (इं० प्रे०) १
मानव-सन्तति-शास्त्र (ख० वि० प्रे०) १॥	विदूषक (चाँ० का०) १	सखाराम (चाँ० का०) १	सन्तति-विज्ञान (वे० प्रे०) ॥=	सौरी-सुधार (इं० प्रे०) ॥
मानिक-मन्दिर (चाँ० का०) २॥	विधवा-आश्रम (ना० द० स०) १	सच्ची देवियाँ (ला० रा० सा०) ॥	सन्तान-कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १	सौन्दर्यकुमारी (अ० प्रे०) ३=
	विधवा-प्रार्थना (ग्रं० मं०) १=	सच्ची स्त्रियाँ (,,) ॥	सन्तान-शास्त्र (चाँ० का०) १	स्त्रियों की पराधीनता (बदरी- नाथ भट्ट) ॥
	विधवा-विवाह-मीमांसा (चाँ० का०) ३	सती (इं० प्रे०) १	संयुक्ता (पाँपलर) ॥=	स्त्रियों की स्वाधीनता (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥
	,, ,, (ब० प्रे०) १=	सती-चरित्र-चन्द्रिका (नि० बु० डि०) २	संयोगिता (मा० का०) ॥	स्त्री के पत्र (चन्द्रशेखर) १
	विमला (गु० च०) ॥	सती-चरित्र-ग्रंथ (ल० प्रे०) २	संयोगिता (ह० दा० कं०) १=	स्त्रियों के रोग और उनकी चिकित्सा (इं० प्रे०) १
	विरागिनी (ह० दा० कं०) १	सती-चिन्ता (ब० प्रे०) १॥, २	संसार की असह्य जाति की स्त्रियाँ (प्रका० पु०) २॥	स्त्री-रोग-विज्ञान (चाँ० का०) ३



डॉक्टर—कहिए श्रीमती जी, आपके पति अच्छे हैं ?
वही खाना खाते हैं न, जो मैंने उनके लिए बताया है ?
श्रीमती—नहीं, वह कहते हैं कि चार दिन और
जिन्दा रहने की खातिर, मैं भूखों मरना नहीं चाहता ।

एक साहब बहादुर एकाएक अपनी लड़की के कमरे
में घुस आए, जहाँ वह एक शिक्क से पियानो बजाना
सीखती थी । संयोगवश उस समय शिक्क महाशय
लड़की का चुम्बन ले रहे थे । यह हाल देख कर साहब
बहादुर बिगड़ कर बोले—क्यों जी, क्या इसीलिए मैं
तुमको तनहाह देता हूँ ?

शिक्क—(मुस्तेदी से) नहीं जनाब, यह काम तो
मैं बिना किसी तनहाह के ही करता हूँ ।

एक साहब की सास साहबा को अपना अँगूठा
चबाने की बुरी आदत थी । एक दिन साहब बहादुर
ने इस आदत को छुड़ाने के लिए एक डॉक्टर से तरकीब
पूछी । डॉक्टर साहब ने कहा—बुढ़िया के अँगूठे में कुछ
लगा दो ।

कई दिनों के बाद साहब बहादुर से जब डॉक्टर
की मुलाकात हुई तो डॉक्टर ने पूछा—कहिए, आपकी
सास की अँगूठा चबाने की आदत छूटी ?

साहब—घन्यवाद ! हमेशा के लिए छूट गई । हमने
आप ही के कहने के अनुसार काम किया था ।

डॉक्टर—आखिर आपने उसके अँगूठे में क्या लगाया
था ?

साहब—सझिया ।

पति—क्या तुम माँ की तरह खाना बना सकती
हो ?

पत्नी—क्यों नहीं ? बशर्ते कि तुम अपने बाप की
तरह बदहमी बरदारत करना कबूल करो ।

मेम साहबा—(एक लँगड़े फकीर से) ले लँगड़े, एक
पैसा ले । तेरे लँगड़ेपन पर मुझे तर्स आता है । ज़ैर,
फिर भी अन्धा डोने से तो लँगड़ा होना अच्छा है ।
लँगड़ा—आप ठीक कहती हैं ; क्योंकि जब मैं अन्धा
था तो लोग मुझे खोटा पैसा दिया करते थे ।

खुशामदी प्रेमी—(कमरे के भीतर आते हुए) प्रिये, तुम
तो हारमोनियम खूब बजाती हो । मैं बाहर खड़ा-खड़ा
सुन रहा था ।

प्रेमिका—मैं बजाती नहीं थी, बल्कि हारमोनियम
पर की गर्द भाड़ रही थी ।

खरीदार—तुमने कहा था कि मेरी दवा एक ही रात
में फायदा करती है । मगर कल मैंने उसे खाया, कुछ
भी फायदा न हुआ ।

दवा बेचने वाला—मगर यह मैंने कब कहा था कि
यह किस रात को फायदा करती है ?

एक मशहूर दिल्लीवाज़ बुढ़ापे में सख्त बीमार
पड़ा । उसने अपने एक मित्र से पाने के लिए दवा माँगी

फरियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

कुछ सड़क में आ गए घर, कुछ सड़क में नप गए !
इशतिहाराते तबाही अब गजब में छप गए !
पेट के धन्धों से फुरसत हमको मिलनी है मुहाल,
सब से अच्छे वह थे जो दिन-रात हर को जप गए !
आए थे जीने की खातिर, चार-छ दस-बीस दिन,
सब थे मरने के लिए, आखिर को सब मर खप गए !
हज़रते "बिस्मिल" अब अपनी और क्या तौक़ीर हो
हमको है इसकी मसरत "पानियर" में छप गए !

जो ये फरमाते हैं, यह ऐसे हैं वह ऐसे हैं !
वह बुरे सब से हैं, वह कौन बहुत अच्छे हैं !
हमको दुनिया के भ्रमों का कुछ अहसास नहीं !
एक कोने में अलग सब से जुरा बैठे हैं !!
मुद्दा कुछ नहीं, और उनका सभा से "बिस्मिल"
अपनी शोहरत के लिए, जान दिए देते हैं !!

आवाज़ दूर ही से सोहाती है ढोल की !
सूरत नज़र न आई कहीं मेल-जोल की !!

किस काम का वह काम निहों, जिसमें घात हो,
मतलब की जब है बात, कि मतलब की बात हो !

और इन्हे भूच से दवा के बदले ग्लास में स्याही भर
कर उसे पिला दी । जब उसे अपनी ग़लती मालूम हुई
तो चिल्ला कर बोला—अरे दोस्त, ग़ज़ब हो गया, मैंने
तुमको दवा के बदले स्याही पिला दी ।

दिल्लीवाज़—ज़ैर, कोई हर्ज नहीं, मैं ब्लॉटिंग
पेपर के चार तख्ते (शीट) खा लेता हूँ ।

प्रेमी संसार-भ्रमण के लिए रवाना हो रहा था और
उनकी प्रेमिका उनके गले में बाँह डाल कर स्टेशन के
प्लेटफॉर्म पर सिसक रही थी ।

प्रेमिका—प्यारे, तुम मेरा दिल लिए जाते हो । अब
तो मेरे लिए जीना मुश्किल हो गया । अच्छा जाते तो
हो, मगर एक बात का वायदा किए जाओ कि हर शहर
से, जहाँ तुम ठहरोगे, मुझे पत्र भेजते रहोगे ।

प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को हृदय से लगा कर चुम्बन
लेते हुए पूछा—क्यों प्यारी, क्या सचमुच प्यार के मारे
ऐसा कहती हो या तुम्हें संसार के विभिन्न देशों के डाक
के टिकटों को इकट्ठा करने का शौक है ?

जाड़े की बहार अपूर्व ताक़त के लड्डू
नारसिंह मोदक

जो लोग जाड़े के दिनों में ताक़त के लड्डू खाने के
शौकीन तथा इच्छुक हैं, उन्हीं के आग्रह से यह मोदक
बहुत ही स्वच्छतापूर्वक, शाखीय विधि से तैयार कराए
हैं । यह मोदक सर्व ही ताक़त के मोदकों से श्रेष्ठ
है । इसमें विशेषता यह है कि और ताक़त की दवाओं
की तरह यह कब्ज़ियत नहीं करता है; परन्तु इससे दस्त
साफ़ होता है और पाचन-शक्ति बढ़ती तथा भूख खुल
कर लगती है । बल-वीर्य, रक्त और सुन्दरता को बढ़ाता
है । शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है ।

लड्डूओं के १ बक्स की कीमत ११; डा० म० अलग
पता—चन्द्रसेन जैन, वैद्य—इटावा

संसार के भिन्न-भिन्न देशों की स्त्रियों की खासियतें

पेरिस के एक होटल के मालिक ने भिन्न-भिन्न देशों
की स्त्रियों की खासियतें इस तरह बतलाई हैं :—

अमेरिकन औरतें अपने कपड़े कभी ठीक नहीं
रखतीं । अलमारी में जूते और धुले कपड़े साथ ही मिलते
हैं । उनकी मेज़ पर शराब का अढ़ा ज़रूर मिलेगा ।

रूसी स्त्रियाँ बहुत शोर करती हैं । वे रात-रात भर
ज़ोरों से गप्पें लड़ावा करती हैं और सवेरे बहुत देर से
उठ, फिर चिल्लाने लगती हैं ।

ईजिप्ट की स्त्रियाँ अब भी जनानखानों में रहना
पसन्द करती हैं । वे अपने साथ कई मित्र महिलाएँ ले
आती हैं । फिर रात को कमरे भर में कुर्सी पर, ज़मीन
पर, मेज़ पर, यहाँ तक कि गुसलखाने तक में सब सो
जाती हैं ।

चीन की स्त्रियाँ अश्वबार की इतनी शौकीन होती हैं
कि होटल में टिके हुए सारे व्यक्तियों को जितने अश्वबारों
की आवश्यकता नहीं होती, उतनी ज़रूरत एक चीनी
महिला को होती है ।

अज़रेज़ी औरतें बिना ठीक कपड़े पहिने कभी बाहर
नहीं निकलतीं । कभी अपने कमरे में लोगों से नहीं
मिलतीं । शराब के बिना उन्हें तकलीफ़ नहीं होती, पर
तब भी बोटलें कमरे भर में पड़ी मिलेंगी ।

(३५वें पृष्ठ का शेषांश)

इसके सिवा देखो, एक यह नियम है कि कल्याण
में किसी की तृप्ति नहीं होती । अच्छी बात जितनी भी
हो, उतनी ही थोड़ी है । आज लाखों स्त्री-पुरुष तुमसे
भी बुरी दशा में हैं । परन्तु बिगड़े को सुधारना बड़ा
काम है । तुम्हीं तो कहते हो कि पिता के सम्मुख शील
को खोना नहीं चाहते—पर प्रथम तो तुम्हारा यह कर्त्तव्य
था कि तुम उनके सामने विवाह के पूर्व अपनी इच्छा
किसी भी भाँति स्पष्ट रख देते । और यदि वे इसके विरुद्ध
करते, तब तुम्हें वह करना था, जो तुम अब करना
चाहते हो । परन्तु अब भाग जाना मानो उस शील का
चौगुना दुरुपयोग करना है, जिसका तुम्हें धमपड़ है !

यह भी सम्भव है कि इस समय जितना बुरा तुम
अपनी पत्नी को समझते हो, उतनी वह न हो । जब तुम
उसे न प्रेम करते हो, न आदर ! तो वह भी मान करती
है । नव-विवाहिता रमणियाँ तो बड़े-बड़े अरमान मन में
रखती ही हैं, इसलिए हमारी सम्मति है कि उसके
साथ दया, कृपा, ज़मा, उदारता वा सहनशीलता का
व्यवहार करो, कुसंस्कारों को दूर कर, अच्छी सोहबत,
अच्छी शिक्षा, अच्छी भावना उत्पन्न करो, यह असम्भव
नहीं कि वह तुम्हारी सुयोग्य पत्नी बन सके । क्या
तुमने वह दोहा नहीं सुना—

देख पराई चूपरी, मत ललचावे जी ।
रूखा-सूखा खाय कर, ठण्डा पानी पो ॥

—सम्पादक

नवीन ! रिपज़ वाला ! अद्भुत !

जैव का चरखा

यह हमने अभी तैयार किया है । समूचा लोहे का बना
है । इससे स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ बड़े शौक से सूत
कात-कात कर ढेर लगा देते हैं । यह चलने में निहायत
हलका और देखने में खूबसूरत है । मू० १) डा० म० १८)
पता—जी० एल० जैसवाल, अलीगढ़

शैलकुमारी

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से वृणा हो जाती है ! मूल्य २)

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्स्टॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी-अनुवाद है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-वृत्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वैश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का भूटा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम अष्टकर्ता का भी ज़रों में सम्मिलित होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एक मात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए—ये सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। मूल्य ५)

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी हैं। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥१॥; स्थायी ग्राहकों से ॥२॥)

उमासुन्दरी

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के स्वार्थ-न्याय और पतिव्रत का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला का अपने पति सतीश पर अगाध प्रेम एवं विश्वास, उसके विपरीत सतीश बाबू का उमासुन्दरी नामक युवती पर सुगन्ध हो जाना, उमासुन्दरी का अनुचित सम्बन्ध होते हुए भी सतीश को कुमार्ग से बचाना और उपदेश देकर उसे सन्मार्ग पर लाना आदि सुन्दर और शिक्षाप्रद घटनाओं को पढ़ कर हृदय उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं, इसमें हिन्दू-समाज की स्वार्थपरता, काम-लोलुपता, विषय-वासना तथा अनेक कुरीतियों का हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। छपाई-सफाई सब सुन्दर है। मूल्य केवल ॥१॥ आने स्थायी ग्राहकों के लिए ॥२॥; पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

घरेलू चिकित्सा

‘चाँद’ के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हजारों अनमोल नुस्खे प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मज़ल हुआ है, और जनता ने इन नुस्खों की सच्चाई तथा उनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। इनके द्वारा आए-दिन डॉक्टरों की भेंट किए जाने वाले सैकड़ों रूपए बचाए जा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सदगृहस्थ को अपने यहाँ रखनी चाहिए। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही काम की वस्तु है। एक बार इसका अवलोकन अवश्य कीजिए। छपाई-सफाई अत्युत्तम और सुन्दर। मोटे चिकने कागज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ॥१॥ रखा गया है। स्थायी ग्राहकों से ॥२॥ मात्र !

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सदगृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आधोपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य केवल १॥१॥)

संस्कारात्म

यदि वृद्ध-विवाह की नारकीय लीला तथा उससे होने वाले भयङ्कर परिणामों का नरन-चित्र देखना हो; और देखना हो कि द्रव्य-लोभी मूर्ख एवं नर-पिशाच माता-पिता किस प्रकार अपनी कन्या का गला घोट कर अमूल्य जीवन नष्ट करते हैं और किस प्रकार वह कन्या उस बुढ़े को ठुकरा कर दूसरे की शरण लेने को उद्यत होती है—इसका सुविस्तृत वर्णन आपको इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य १)

स्मृति-कुञ्ज

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकास और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुःख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका ‘चाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

Dear Mr Saigal,

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & visit to the Temple are particularly charming pictures, life like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given me a great deal of pleasure.

Yours Sincerely B. J. Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjee of the Allahabad High Court:

... The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consummate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court:

... I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail:

... The Album ADARSH CHITRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture ...

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad:

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute:

... I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie Esq., Director of Public Instruction, U. P.:

... I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
हाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

The only Point where Newspapers, Leaders and Individuals agree in Toto

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAND'

Urdu edition :
Annual Rs. 8/-
Six monthly
Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out an Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations raised by the excellence of its Hindi parent. I wish it every success.

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late) :

I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life.

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

I need hardly say that I have been following the career of your Journal with keen interest, and I have extremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Social Reform in India.

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitization possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for facilitating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

